

झारखण्ड लाइफ

आओ राजा खोले



ऑपरेशन जिंदगी



शिष्ट सोरेन

की कहानी

कितना
बढ़ला
झारखण्ड

दुनिया
के मुरखों
एक हो

रूस
यूक्रेन का
अर्थशास्त्र

An Initiative by NCR Life



Two Daughter's Club

जिनकी सिर्फ बेटियां ही बेटियां हैं उनके माता-पिता को सम्मान दें ...

दूसरों की प्रतीक्षा न करें।

शूरुआत आप करें और आज से ही

सिर्फ सोच बदलने की बात है.... और समझने और समझाने की बात है

करना क्या है....

आप सिर्फ उन लोगों के हाथिकोण को बदलें, जो अभी भी सोचते हैं कि बेटियां एक बोझ या परायाधन हैं. हम 21 वीं सदी में रहते हैं या खुद को माँड़न या एडवास सोसाइटी के हिस्से के रूप में देखते हैं, टेक्नोलॉजी ने बहुत कुछ बदल दिया है यहां तक कि हमारे स्वाद और जीवन का तरीका भी. लेकिन सोच आज भी नहीं बदली है. इसी सोच को बदलना है हमें.....

क्या आपने कभी सोचा है क्यों?

दरअसल बेटियों या महिलाएं सुरक्षित इसलिए नहीं हो पाती हैं क्योंकि उनको जन्म देने वाले उनके परिजन सदियों से चली आ रही परंपरा के बोझ से दबे होते हैं। जैसे ही दूसरी बेटी का जन्म होता है लोग उन्हें ताने और पुक बेटा होने की उम्मीद बंधते हैं। समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा ये मानता है कि एक बेटी ठीक है लेकिन दूसरी होने पर वही बेटियों बोझ बन जाती है। माता-पिता इस बोझ से दब सा जाते हैं। ऐसे में हम यही बताना चाहते हैं कि जिनकी दो बेटियां हैं या दो से ज्यादा बेटियां हैं वे बोझ नहीं हैं। लेकिन इसके लिए उनके परिजनों के आत्मबल और सामाजिक प्रतिष्ठा देने या दिलवाने की जरूरत है। अगर हमारा समाज दूसरी बेटी होने के बाद भी बेटियों के माता-पिता को सम्मान देने लगे तो एक बहुत बड़े सामाजिक बदलाव की शुरुआत हो सकती है। हमारे मुहिम का एक ही लक्ष्य है कि जिनकी बेटियां ही बेटियां हैं उनके माता पिता को सम्मान दीजिए या दिलवाइए। ये एक तरह से हमारी पुरानी सोच के जड़ पर प्रहार है। जिस दिन बेटियों के माता पिता को समाज सम्मान देने लगेगा, यकीन मानिए महिलाएं सुरक्षित तो होंगी ही साथ ही हमारा समाज सभ्य समाज की ओर बढ़ चलेगा।

हमारे अभियान का हिस्सा बनें:-

एक स्वयंसेवक बनें।

हमारे कल्प के सदस्य बनें।

अपने शहर में एक कल्प अच्छाय खोलें।

अपने शहर, संगठन या समाज में कार्यक्रम आयोजित करें।

हमें whatsapp, Twitter और Facebook जैसे सोशल मीडिया पर इस अभियान को ज्यादा से ज्यादा फैलाएं और कम से कम 100 ऐसे लोगों को हमारा ये मैसेज जरूर पहुंचाएं, यकीन मानिए आपकी सोच और छोटे से प्रयास से बेटी और बेटा में फर्क मिटाने और बेटियों के माता-पिता को सम्मान दिलाने की ऐतिहासिक मूहिम एक जनभागीदारी और जनआंदोलन का रूप ले लेगा।

<http://twitter.com/2daughtersclub> <http://www.facebook.com/2daughtersclub>

a concept campaign for girl Child & Women empowerment

झारखंड लाइफ

आओ राज खोलें

प्रधान संपादक

ज्ञानेश श्रीवास्तव

समाचार संवाददाता

निरंजन

समाचार हेल्थ

ब्रजभूषण झा

विशेष संवाददाता

मनीष पाठक

संवाददाता

कृति वर्मा

अभिषेक वर्मा

फीचर संपादक

नम्रता

अलख निरंजन

रांची संवाददाता

कृति सिन्हा

दिल्ली ब्यूरो

अनिता सिन्हा

रांची ब्यूरो प्रमुख

राजीव कुमार

वरिष्ठ फोटो जर्नलिस्ट, संथाल परगना

अंग्रेज दास

प्रबंधक मार्केटिंग

आलोक सक्सेना

ग्राफिक डिजाइनर

दामोदर सिंह

Email : info.jharkhandlife@gmail.com

Website : www.jharkhandlife.com

प्रकाशक, मुद्रक : नम्रता श्रीवास्तव

मुद्रक स्थल : लग्ज कुटीर, कुगोदनी घोष रोड, बरमसिया,

देवघर 814112, प्रिंटिंग स्थल : भारती प्रिंटर्स, कोर्ट रोड

देवघर 814112, कुल पृष्ठ : 51

Title Code : JHAHIN01033

Contents

29

माटी का लाल
नारायण दास



34 चिकित्सक के सुझाव

26 तस्वीरों में झारखंड

संपादकीय

बदल रहा है मीडिया

स

माज बदल रहा है, देश बदल रहा है.. भूमंडलीकरण और वैश्विक परिप्रेक्ष्य

में तेजी से बदलती अर्थव्यवस्था के कारण पूरी मानव सम्यता को एक नई दिशा की ओर लगातार ले जाने का प्रयास हो रहा है. जाहिर सी बात है कि मनुष्य यहां का हो सात समंदर पार का, उसके जीवन और जीवनशैली पर मीडिया के विभिन्न माध्यमों का गहरा प्रभाव दिख रहा है. समाज के हर वर्ग के सोचने का तौर तरीका अब बदल रहा है मीडिया भी उसी समाज का अभिन्न अंग है. अब हर व्यक्ति हर नौजवान, बुढ़े हो या महिला सबके पास अपनी मीडिया है, अपनी सोच है. सरकार कोई भी हो राज्य की या केंद्र की बस एक टूल का काम कर रही है. नीतियां कोई और प्रभावित कर रहा है और सामाज्य लोग मीडिया की ताकत सिर्फ समझने में लगे हैं. अभी बहुत कुछ समझना और करना बाकी है

ये दौर बदलाव का है, आगे बढ़ने का भी है. मीडिया जो चौथा स्तंभ माना जाता रहा है अब हर स्तंभ से जुड़ चला है.. थोड़ा वक्त लगेगा लेकिन बदलते मीडिया का आकार और व्यवहार एक बड़े आकार में सामने आयेगा.. मीडिया का बदलाव आकार हरएक के जीवन को प्रभावित ही नहीं करेगा बल्कि स्वस्थ समाज के निर्माण में एक बड़ा रोल निभायेगा.. डिजिटल मीडिया हो या प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया.. हम भी एक मीडिया हैं और लंबे समय से समाज में अपनी दस्तक दे रहे हैं.. शुरूआत रेल लाइफ उसके बाद एनसीआर लाइफ और अब झारखण्ड लाइफ...

योजपरक और मुद्दा विशेष और फोकस होकर मीडिया का काम करने का हमारा पहले से अनुभव रहा है. हमारा लक्ष्य और उद्देश्य झारखण्ड लाइफ झारखण्ड के लोगों के लिए, झारखण्ड से जुड़े लोगों के लिए और झारखण्ड से है. मतलब झारखण्ड के जीवन को समझना और समझाना कि झारखण्ड पहले भी नंबर वन था, आज भी है और कल भी रहेगा.. ये अलग बात है कि हम कुछ मामलों में भेदभाव के शिकार होते रहे हैं लिहाजा हमारा हक और बराबरी अभी पूरा नहीं हुआ है.. झारखण्ड लाइफ इस काम को आगे बढ़ाने का काम करेगा. झारखण्ड को एक नई दिशा और दशा के लिए झारखण्ड से जुड़े लोगों चाहे झारखण्ड में रहते हों या झारखण्ड से दूर रहते हों, आइए एक स्वस्थ और हरामारा झारखण्ड का निर्माण करें.

जोहार

आपके फँडबैक का इंतजार रहेगा....

editor.jharkhandlife@gmail.com



ऑपरेशन जिंदगी



मनीष पाटक, विशेष संवाददाता

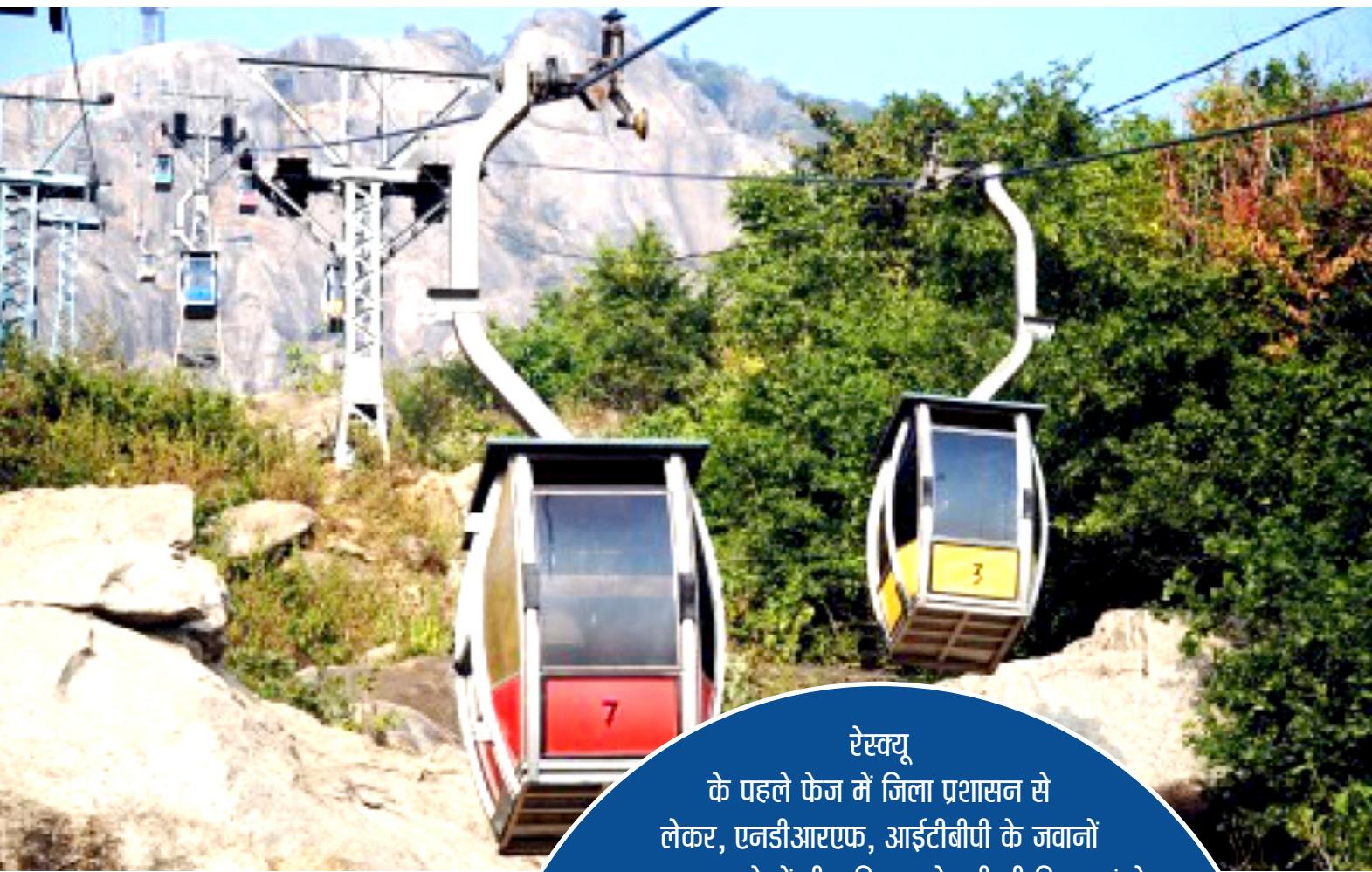
टे

श में अब तक के सबसे बड़े त्रिकूट रोपवे हादसे में सेना के जाबांज जगानों ने जब 46 लोगों को ट्राली से सुरक्षित निकाला तब तभी आर्थिक खलम हो गयी और ऑपरेशन जिंदगी पूरा हुआ। दो दिनों

से हवा में लटके लोग हर घड़ी एक डर के माहौल में खुट को निकाले जाने के इतंजार में थे, कि कब उनकी बारी आयेगी। हालांकि एक कठिन ऐस्क्यू ऑपरेशन को वायुसेना, आईटीबीपी व एनडीआरएफ के जगानों ने पूरा कर दिखाया। 10 तारिख की शाम घटना घटने के साथ ही सोशल मीडिया व टीवी पर हवा में लटके लोगों का वीडियो, फोटो वायरल होने लगा कि झारखण्ड के सुरुद जिले देवघर जिसे बाबूदार्य के नाम से भी जाना जाता है वहां अब तक का देश का सबसे बड़ा रोपवे हादसा हुआ है। जिसमें 46 लोग फंसे हैं। पहले दिन स्थानीय लोगों और पहाड़ क्षेत्र में काम करने वाले गाइड की मदद से जनीन से 100-200 फीट की ऊंचाई पर

ट्रालियों में फंसे लोगों को निकाला गया। लेकिन कुछ ट्रालियां काफी ऊंचाई में लटक रही थीं और बिना हैलिकाटर के वहां तक पहुंचना आसान नहीं था। इसके बाद उसी दिन शाम को घटना के कुछ देर बाद जिला प्रशासन ने तत्काल राज्य सरकार व सूबे के सीएम हेमंत सोरेन और मुख्य सचिव को घटना की जानकारी से अग्रणी कराया। राज्य सरकार ने तत्काल केंद्र में घटना की जानकारी दी और गृह मंत्रालय से मटद मार्गी, वहीं घटना की जानकारी होने पर पहले से ही नौजूट गोल्ड सांसद डॉ निशिकांत दुबे ने भी गृह मंत्रालय को अपने स्तर से त्रिकूट रोपवे हादसे के बारे में सारी डिटेल दी। गृह मंत्रालय ने राज्य सरकार से मिले इनपुट और सांसद से मिले डिटेल के आधार पर वायुसेना, एनडीआरएफ, आईटीबीपी को अलर्ट किया और सेना की टीम अगले दिन यानि 11 अप्रैल की सुबह त्रिकूट रोपवे पर ऐस्क्यू के लिए पहुंच चुकी थी। इसके बाद शुरू हुआ ऐस्क्यू ऑपरेशन।





11 अप्रैल को ऑपरेशन जब शुरू हुआ तो वायु सेना के हेलिकॉप्टर ने त्रिकुट रोपवे हवाइ सर्वे व निरीक्षण किया कि किस ट्रालों से रेस्क्यू शुरू किया जाय। लेकिन हेलिकॉप्टर जैसे ही अपनी ऊंचाई कम करता और ट्रालियों के पास जाता तो ट्राली हिलने लगती थी और उसमें सबार पर्यटकों में चीख पुकार मचने लगती। इस तरह करीब दो घंटे बीत गये लेकिन एक को भी नहीं निकाला जा सका। इसके बाद गरूड़ कमांडो की मदद ली गयी और छोटे हेलिकॉप्टर से फिर से रेस्क्यू शुरू हुआ और पहले पर्यटक को सुरक्षित तरीके से निकाला गया। इसके बाद बारी बारी से 24 घंटे हवा में लटके 33 पर्यटकों का पहले दिन रेस्क्यू किया गया, जिसमें से 23 को एयरलिफ्ट किया गया। हालांकि पहले दिन एक हादसा भी हो गया जिसमें हेलिकॉप्टर तक पहुंच चुके सैरेयाहाट के राकेश मंडल का हाथ छूट गया और वो खाई में गिर गया और उसकी मौत हो गयी। दरअसल रेस्क्यू चल रहा था पर्यटक बारी बारी से निकाले जा रहे थे, राकेश मंडल नामक युवक जिस ट्राली में था, उसमें से तमाम लोगों को निकाला लिया गया था। अब

10 को भी लोगों को निकाला गया जीवे की द्रविणों में जौनूद कुछ धायलों को देर शाम को ही निला प्रशासन, पुलिस प्रशासन व स्थानीय लोग की मदद से अस्पताल पहुंचा दिया। जिसमें एक महिला समृति देवी, जो जिले की रहने वाली थी कि मौत हो चुकी थी। **11 को ऑपरेशन में लगे सेना के जवानों, आईटीबीपी, वायु सेना और एनडीआरएफ की अधिकारियों ने माना कि ये अब तक सबसे कठिन रेस्क्यू साबित होने वाला है, जिसमें पहली बार 900 फीट से भी अधिक ऊंचाई पर ट्राली में फंसे लोगों को सुरक्षित निकलना है।**

उसकी
बारी था

गरूड़ कमांडो ने उसे

ऊपर खीचना शुरू

किया, लेकिन हवा में लटके होने के दौरान उसका सेफ्टी

बेल्ट रोपवे की तार में फंस गया, लेकिन उसने सेफ्टी बेल्ट की रस्सी नहीं छोड़ी और जवानों के द्वारा ऊपर से खींचे जाने पर हेलिकॉप्टर के दरवाजे तक पहुंचा गया, लेकिन जैसे ही उसे अंदर खींचने की कोशिश की गयी अचानक उसका सेफ्टी बेल्ट खुल गया और उसका हाथ छूट गया और वो 750 फीट ऊंचाई से नीचे गिर गया। शाम के वक्त हुए हादसे के कारण एक बार फिर दूसरी ट्रालियों में बैठ लोगों के बीच चीख

ऐस्क्यू के पहले फेज में जिला प्रशासन से

लेकर, एनडीआरएफ, आईटीबीपी के जवानों

थुक्कात करने में ही मुश्किल हो दही थी कि कहाँ से

ऐस्क्यू शुरू किया जाय। इस बीच पन्ना लाल, गोबिंद व कई

गाइड जो त्रिकुट पहाड़ की भौगोलिक स्थित को अच्छी तरह जानते हैं उन लोगों ने पहलकदमी ली औपरेनडीआरएफ, आईटीबीपी के जवानों के साथ मधुबनी के अनिल कुमार को सबसे पहले ऐस्क्यू किया। इसके बाद देखते ही देखते एक घंटे के अंदर पांच छोटे-छोटे बच्चों को भी सुरक्षित निकाल लिया गया। कुल मिलाकर पूरी टीम ने 10 लोगों को सुरक्षित निकाल लिया। इसके बाद वायुसेना ने ऐस्क्यू में अहम भूमिका निभायी। गरूड़ कमांडो ने सबसे पहले

आठ नंबर की ट्राली का गेट हवा में लटककर खोला।

और एक कुस्ती की मदद से ट्रालियों से

लोगों का ऐस्क्यू शुरू हुआ।

पुकार
मच
गयी।

जिसके बाद
रेस्क्यू रोक

दिया गया। 7 घंटे

लगातार चले रेस्क्यू

के बीच अंधेरा होने वाला

वायु सेना, आईटीबीपी, एनडीआरएफ के

अधिकारियों व जिला प्रशासन ने तय किया कि अब अगले दिन रेस्क्यू किया जाय। क्योंकि लोग थोड़ा घबरा गये। 15 लोग अब भी अलग-अलग ट्रालियों में फंसे थे। जिनका रेस्क्यू किया जाना बाकी था। दो दिनों के बाद फिर से संयुक्त रेस्क्यू शुरू हुआ।

हालांकि इस बार मामला कठीन था क्योंकि तीन ट्राली में 800 से अधिक ऊंचाई पर 15 लोग फंसे थे। जिन्हें बड़ी ही सावधानी से सुरक्षित निकालना था।

रेस्वयू का तीसरा दिन

हादसे के तीसरे दिन ट्रालियों में फंसे 14 लोगों को निकाला जा सका। मंगलवार 12 अप्रैल को सुबह छह बजे से ही एक ट्राली से रेस्क्यू कर कारण ऊंचाई से गिरकर एक महिला की मौत हो गयी। इस परिवार के सात लोग ट्राली में फंसे थे। जिसमें छोटे बच्चे भी शामिल थे। मंगलवार को दिन के ग्यारह बजे तक परिवार के सभी सदस्य साथ थे लेकिन रेस्क्यू के अंतिम समय में शोभा देवी की ऊंचाई से गिरने से मौत हो गयी। जिस ट्राली से शोभा देवी को रेस्क्यू किया गया उसमें सबसे अंतिम उनके पति बच गये जिनको निकालना बाकि था। उसमें पहले पहले परिवार के पांच सदस्यों की निकाल लिया गया था। इस बीच शोभा देवी का रेस्क्यू शुरू हुआ और उसके पति छविलाल साह ट्राली में अपनी बारी के लिए रुके रहे। इसी दौरान ट्राली में एयरलिफ्ट करने वाली रस्सी फंसी गयी। हालांकि गरूड कमाड़ों ने तक्काल ट्रॉली पर उत्तरकर रस्सी को छुड़ाने की कठिनी की लेकिन अचानक रस्सी टूट गयी और छविलाल साह की आंखों के सामने वो करीब 300 फीट की ऊंचाई से बो नीचे गिर गयी। इसके बाद 12. 30 बजे शोभा देवी के पति को निकाला गया और इसके साथ ही ऑफरेशन पूरा हो गया। जबकि शोभा देवी को तक्काल मेडिकल टीम अस्पताल लेकर पहुंची लेकिन चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। परे अधियान के दौरान वायु सेना के दो हेलिकॉप्टर ने पूरी सावधानी के साथ रेस्क्यू को पूरा किया। ऊंची पहाड़ियों के बीच रेस्क्यू करना उनके लिए भी खतरनाक था, क्योंकि जरा सी चूक होने पर हेलिकॉप्टर की पर्ती पहाड़ी से टक्कारा सकती थी। लेकिन सेना ने इस सफल कर दियाया।



स्वास्थ्य विभाग के चिकित्सक और कर्मी भी रहे मुस्तैद

ऐस्क्यू के बाद निकालने
लोगों की मेडिकल सुविधा के लिए
सदर अस्पताल के चिकित्सकों की
पूरी टीम मौजूद थी। डॉक्टर व
कर्मी सुबह से ही मुस्कैद थे।
एनडीआरएफ की टीम अस्थायी
हैलिपेड पर हेलिकाप्टर से
निकला कर लाये जा रहे पर्यटकों
को तुरंत स्ट्रेचर पर लिटाकर
मेडिकल कैंप पहुंचा रही थी औ?
वहाँ पर प्राथमिक चिकित्सा के
पर्यटकों को तुरंत एंबुलेंस से
अस्पताल पहुंचाया जा रहा था।
कुछ लोग डिहाइड्रेशन के शिकार
हो गये थे, उन्हें स्लाइन चढ़ायी
गयी। मेडिकल टीम में शामिल
चिकित्सकों व कर्मियों ने बेहतर
टीम वर्क से लोगों का हौसला
बढ़ाया और तत्काल गंभीर घायलों
का इलाज भी शुरू किया।

पिछले 36 घण्टे से हवा में लटके लोगों का धैर्य थी जबाब दे रहा था। हालांकि जिला प्रशासन और पर्यटकों के पास मौजूद मोबाइल फोन के जरिये जानकारी मिल रही थी कि सभी ठीक हैं और उन्हें खुद को रेस्क्यू करा लिये जाने का विश्वास है। तीन ट्रालियों में फंसे 15 लोगों के पास कुछ खाने और पीने का पानी पहुंचाना भी एक कठीन काम था। जपान की ऊंचाई से नीचे लटक रही ट्रालियों में तो स्थानीय लोगों और मेंटेनेंस ट्राली की मदद से खाना-पानी पहुंचा दिया गया था। लेकिन ज्यादा ऊंचाई पर कैसे सामग्री पहुंचायी जाय ये समस्या थी। तब जिला प्रशासन ने हैवी ड्रोन को मंगवाया और उसकी मदद से ट्रालियों में बिस्कुट कुछ खाने का सामान और पानी पहुंचाया। जिससे कुछ हद तक पर्यटकों और राहत मिली।

ज्यादा थी और वो अप्रैल को रस्सी

तेज़ी

४

1

८२

ਕੇ ਕਿਥੀ ਮੀ ਹਿਦ੍ਦੇ ਮੇਂ ਰੋਪਵੇ

ਹਾਦਦੇ ਕੇ ਕਾਰਣ ਪਹਲੀ ਬਾਰ ਇਤਨਾ ਲੰਬਾ

ऐस्थियू ऑपरेशन पहली बार चला। इतनी ऊंचाई से लोगों को निकालने के कारण भी माना जा रहा है कि 900 फीट से अधिक ऊंचाई पर फँसे लोगों को पहली पर इस तरह एयरलिफ्ट कराया गया। ऐस्थियू

ऑपेरेशन के इतिहास में आइटीबीपी,

ਏਨਕੀਆਰਏਫ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ, ਗ੍ਰਾਉਂਡ ਕਮਾਂਡਾਂ,

ਪੁਲਿਸ ਕੇ ਜਵਾਨੋਂ ਨੇ ਸਹਿਯੋਗ ਦੱਸੇ

अमियान चलाया.

आमेयान चलाया.



जिंदगी लगी थी खत्म होने वाली है लेकिन जवानों को शुक्रिया आज जिंदा हूं रेस्क्यू में बचे लोगों ने अपने अपने तरीके से जवानों का शुक्रिया किया है।

- सबसे पहले निकाले गये मधुबनी के अनिल कुमार ने कहा कि दोबारा नयी जिंदगी मिली है। वहीं दरभंगा निवासी वकील महतो ने कहा कि जीने की आस छोड़ चुके थे, लेकिन सेना के जवान हौसला बढ़ा रहे थे। रेस्क्यू के लिए आया हेलिकॉप्टर जब वापस लौट गया तो हिम्मत टूट गयी, लेकिन आज सुरक्षित हूं।
- बगाल के मालदा के रहने वाले विनय दास ने बताया कि भगवान ने बचा लिया। रात ट्राली में गुजरी हवा चलने पर ट्राली हिलती झुलती तो डर लगता, लेकिन प्रशासन व सेना ने अच्छा काम किया। वही मधुबनी के संदीप कुमार ने बताया कि बच्चों को रस्सी से उत्तरते देख हौसला बढ़ा और एनडीआरएफ और स्थानीय लोगों ने रस्सी के सहारे नीचे उतारा।
- दुमका की सुशोला देवी ने बताया कि पांच छोटे बच्चों के साथ ट्राली में फंस गयी, बच्चों का रो-रोकर बुरा हाल था। हवा में लटके हैं न पानी न खाना भूखे से सभी परेशान। रात को पानी बिस्किट मिला तो जान आयी। सुबह एक एक कर सभी सुरक्षित निकले।
- दुमका की इति घटना का जिक्र करते हुए रेने लगी। कहा कि अपनी मां, भाई, बहन से साथ ट्राली में फंस गये। रात भर ट्राली में गुजारी। ट्राली हिलता तो लगता कि अब नीचे गिर जायेंगे। लेकिन सभी सुरक्षित हैं, थेक्यू सेना।
- वही देवघर जिले के अलग-अलग क्षेत्र से उस दिन त्रिकुट पहुंचे लोगों ने भी अपनी राय बतायी और कहा कि प्रशासन, सेना और स्थानीय लोगों ने जिस तत्परता के साथ हौसला बढ़ाया और रेस्क्यू में सभी आगे उसी की वजह से बहुत ही कम जान माल का नुकसान हुआ। वरना जिस तरह की स्थिति थी और लाग गर्मी भूख से परेशान से काफी लोगों की जान जा सकती थी, लेकिन सब ठीक है। तीसरे दिन रेस्क्यू में बचे लोगों ने सेना को जवानों को धन्यवाद दिया कि उनकी मेहनत से सभी की जान बची।
- देवघर जिले के झासागढ़ी राममंदिर रोड की रहने वाली जया कुमारी, खुशबू कुमारी, छविलाल साह,



ओम,

अमित कुमार ने कहा कि आज जिंदा है तो सेना की बदौलत। सभी ने कहा प्रशासन बहुत सक्रिय रहा जिसकी वजह से भी हम सुरक्षित हैं।

- मुजफ्फरपुर के राकेश कुमार ने कहा कि त्रिकुट घूमने गये थे लोगों को रोपवे पर चढ़ते देखा तो हम भी टिकट ले लिये। लेकिन कुछ ही देर में जिंदगी और मौत के बीच हवा में लटके थे। वायु सेना और एनडीआरएफ की बदौलत आज जिंदा है।
- सीतामढी बिहार के धर्मेन्द्र भगत ने कहा कि सेना ने नया जीवन दिया है। ये कभी नहीं भूलेंगे। आज उनकी वजह से सुरक्षित घर जा सकेंगे। लेकिन अब जीवन में कभी भी रोपवे पर नहीं चढ़ेंगे।
- भागलपुर के मुना कुमार, नीरज कुमार, कौशल्या देवी, अनन्या राज ने कहा कि नया जीवन सेना ने दिया है उनका उपकार कभी नहीं भूल सकते हैं। पहले दिन के बाद जब रात आयी तो लगने लगा कि अब नहीं बचेंगे। लेकिन दूसरे दिन लोगों को जब निकाला जाने लगा तो हौसला बढ़ा कि हम भी बच जायेंगे।

बच्चों के साथ ट्राली में रुका जवान

त्रिकुट रोपवे हादसे में रेस्क्यू के समय फंसे लोगों को एक-एक कर निकालने के दौरान एक ऐसी स्थिति भी आयी जब एक ट्राली में सिर्फ दो बच्चे रहे गये और शाम होने के कारण रेस्क्यू को रोक दिया गया। बचाव कार्य खत्म होने पर हेलिकॉप्टर ने मौजूद साथियों ने हवा में लटककर रेस्क्यू कर रहे कमांडो को लौटने को कहा तो वो ट्राली में ही बच्चों के साथ रुक गया।



जिला प्रशासन, सांसद, पर्यटन मंत्री, स्थानीय लोग समेत हरेक ने रेस्क्यू में अपनी भूमिका बखूबी निभायी

त्रिकुट रोपवे हादसे में सभी ने अपनी भूमिका बखूबी निभायी जिसका कारण है कि इतनी ऊँचाई पर फंसे लोगों को सुरक्षित निकाला जा सका। रेस्क्यू शुरू होने से पहले हवा में तीन घंटे चक्कर लगाने के बाद भी जहां वायु सेना रेस्क्यू कहां से शुरू करें ये तय नहीं कर पा रही थी, वही टीम के तौर पर काम कर इस मुश्किल काम को भी थोड़ी देरी के साथ ही सही लेकिन पूरा किया। राज्य सरकार के पर्यटन सचिव डा अमिताश कौशल, निदेशक राहुल सिन्हा, एडीजी वायरलेस आर के मल्लिक भी 11 अप्रैल की सुबह से ही घटनास्थल पर कैप कर रहे थे। केंद्र सरकार के वरीय अधिकारी राज्य के अफसरों के साथ समन्वय बनाकर रिपोर्ट पीएमओ व गृह मंत्रालय को लगातार अपडेट कर रहे थे। घटना वाले दिन से गोड़ा सांसद डॉ निशिकात दुबे तीन दिनों तक रेस्क्यू के दौरान डटे रहे। ऑपरेशन खत्म होने पर सांसद ने कहा वायुसेना, इंडियन आर्मी, एनडीआरएफ व आईटीबीपी ने मुश्किल काम को अपनी सुअं बूझ से आसान कर दिया। स्थानीय लोगों की भूमिका कहीं से कम नहीं थी। वहीं राज्य के शिक्षा मंत्री जगरनाथ महतो व पर्यटन मंत्री हफीजुल हसन भी रेस्क्यू

के पहले दिन से सबेरे से त्रिकुट पर जम रहे, पहले दिन रेस्क्यू खत्म होने तक राज्य सरकार के दोनों मंत्री वहां रहे। दूसरे दिन दिन भी पर्यटन मंत्री सबेरे से त्रिकुट पहुंच गये और रेस्क्यू की खत्म होने तक रुके।

रेस्क्यू ऑपरेशन को लेकर तमाम शंकाएं भी थीं। इस बीच सबसे अहम भूमिका सबसे पहले किसी ने निभायी तौं वो नाम था पना लाल और गोबिंद का जिसने रेस्क्यू की शुरूआत अपने स्तर से ही शुरू की और लोगों को उतारना शुरू किया। इसके बाद तो जैसे आसपास के ग्रामीण सेना, आईटीबीपी, एनडीआरएफ के साथ टीम वर्क के रूप में काम करने लगी और सभी को सुरक्षित निकाला।

रविवार शाम को 4.30 बजे घटना के बाद से ही देवघर डीसी मंजुनाथ भजंत्री एसपी सुभाष चंद्र जाट, एसडीओ दिनेश यादव व जिले के अन्य अधिकारी रात भर त्रिकुट पर ही रुक गये। और रेस्क्यू को लेकर तैयारी शुरू कर दी गयी। डीसी ने रात में ही अस्थायी हैलिपैड बनाने का निर्देश दिया। वहीं इस दौरान ट्राली में फंसे लोगों के लिए बिस्किट पानी की भी व्यवस्था का भी डीसी ने ख्याल रखा।

वहीं घटना के दिन से त्रिकुट पहाड़ पर लगातार डीसी मंजुनाथ सभी लोगों से समन्वय बनाकर काम करते रहे। डीसी ने रेस्क्यू के दिन शाम को पहले दिन राकेश मंडल की मौत के बाद तत्काल रेस्क्यू स्थगित करने के फैसले पर पहुंचे और दूसरे दिन की तैयारी शुरू कर दी। जिस प्रशासनिक कौशल से डीसी ने इस पूरे अभियान के संचालन में अपनी भूमिका निभायी उसकी काफी तारीफ है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी उनकी तारीफ की। अभियान में शामिल सभी पक्षों से बातचीत के दौरान पीएम ने डीसी के आईआईटी के दिनों की चर्चा करते हुए कहा, कि आईआईटी की पढ़ाई से अभियान को चलाने समझने में कोई फायदा मिला।

पीएम ने पूरे अभियान में शामिल सभी पक्षों को सुना और आभार जताया। इस दौरान थल सेना, वायुसेना, एनडीआरएफ के जवानों व अधिकारियों को नसीहत दी कि पूरे अभियान का दस्तावेज तैयार करें, जिससे कि भविष्य में ये रेस्क्यू ऑपरेशन का तरीका स्टडी के तौर पर काम आये। वहीं पीएम ने कहा कि सभी पर बाबा बैद्यनाथ की कृपा बनी रहे।

ऑपरेशन की झलकियाँ

46 घंटे चला रेस्क्यू ऑपरेशन जिसमें दात के बक्क फंसे हे पर्यटकों को ट्रालियों में रहने दिया गया, ताकि दिन के उजाले में सुरक्षित निकाला जा सके। घटना वाले दिन 10 अप्रैल को 11 लोगों को निकाल लिया गया था, जिसमें स्थानीय लोगों ने सूझ-बूझ का परिचय दिया।

दूसरे दिन 33 लोगों का रेस्क्यू किया गया

10 लोगों को हवा में लटकाते हुए दस्ती के सहारे जमीन पर सुरक्षित उतारा गया। 36 लोगों को हेलिकॉप्टर के जरिये किया गया एयरलिफ्ट रेस्क्यू के दौरान 255 जवानों में वायु सेना, गर्जन कमाड़ो, आईटीबीपी, इंडियन आर्मी व एनडीआरएफ के जवान थे शामिल।

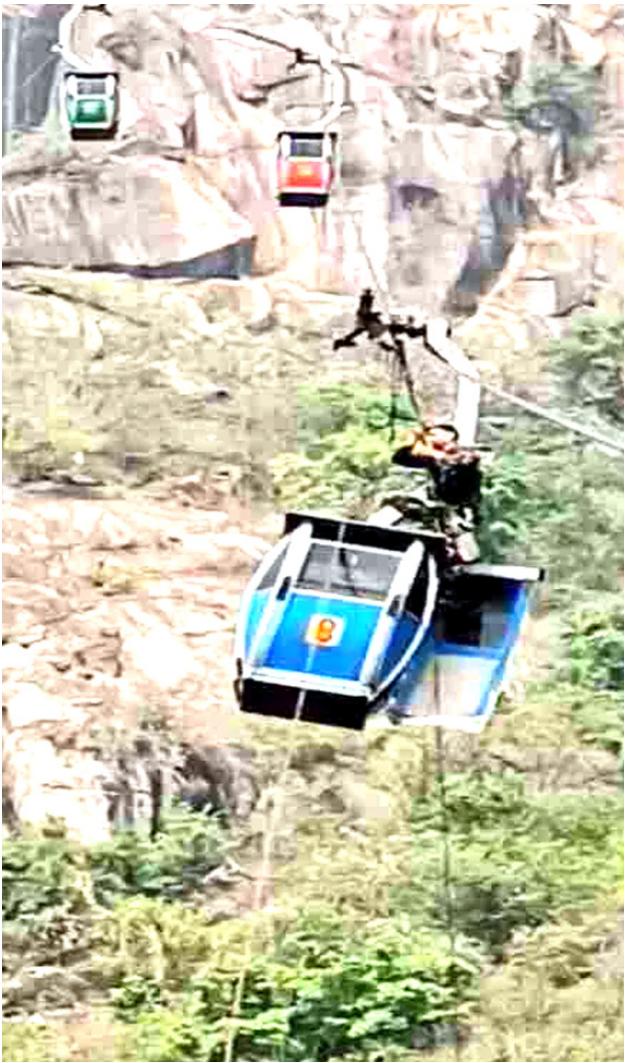
घटना में मारे गये लोगों के परिजनों को पांच-पांच लाख का मुआवजा देने की राज्य सरकार ने की घोषणा।

घटना के कारणों का पता लगाने के लिए जांच समिति का गठन करने का निर्णय।

रेस्क्यू में बेहतरीन काम करने के लिए स्थानीय ग्रामीण पन्जा लाल को सीएम ने दिया 1 लाख।

हादसे में मारे गये लोगों की सूची

- सुमंति देवी साराठ जिला देवघर
- राकेश मंडल सैयदाहाट जिला दुमका
- शोभा देवी, झौसागढ़ी जिला देवघर





दिशोम गुरु

शिव सोरेन

की अनकही कहानी



दीपक कोइराला, विष्णु पत्रकार

दीपक कोइराला संयुक्त बिहार-झारखण्ड के समय चर्चित और विष्णु पत्रकार हैं, विभिन्न संस्थानों में विष्णु पत्र एवं धुआंधार इपोर्टिंग की है.. ये सीईज दिशोम गुरु पर हैं कि कैसे शिव सोरेन दिशोम गुरु बने...



रखंड राज्य को अलग राज्य बनने को लेकर झारखण्ड अंदोलन और दिशोम गुरु शिव सोरेन के तेवर को काफी करीब से देखने को मिला। 70 के दशक में छात्र था तो अखबारों में उनके कारनामे को पढ़ता था और उनकी कुछ कहानियां अपने बुजुर्गों से भी सुनता था। छात्र जीवन में मैं शिव सोरेन के संघर्ष और त्याग की कहानियां सुनकर प्रभावित हो चुका था। मेरा घर भी दुमका था उन दिनों संताल परगना का मुख्यालय था, मेरे दादा जी वहाँ के काफी पुराने वासिंदा थे। उस समय चौक चौराहे पर गुरु जी के कासामों की चर्चा होती थी। 80 के दशक में मैं शुद्ध रूप से पत्रकारिता के पेशे में आ गया, बिहार से छपने वाले दैनिक आज में मैं रिपोर्टर की हैसियत से काम करने लगा और तब गुरु जी से करीब हो गया और अलग राज्य झारखण्ड की मांग करने वाले अंदोलन और उनसे काफी करीब हो गया। जब भी दुमका जाता तो कोशिश करता कि शिव सोरेन से किसी तरह मुलायम हो। एकबार पता चला कि गुरु जी दुमका जेल में बंद हैं मैं वहाँ चला

गया देखा सैकड़ों संथाली जेल के बाहर जमें हैं मैं ने पुछा क्या कर रहे हों? संथालियों जो बात कही जिसे सुनकर मैं स्तब्ध रह गया और उन सबों को देखता रह गया। कहाँ किर हमर भगवान (गुरु जी) के कोई फाटक नय रोक सकत है, गुरु जी मक्खी बनी के निकली जा तय। आदिवासियों ने उन्हें भगवान मान लिया था लोग उनकी पूजा करते थे। पहले ही संताल उन्हें दिशोम गुरु मान लिया था इसको हिंदी में देश का नेता कहते हैं। खैर मैंने बहुत कोशिश की पर उस दिन उसने मुलाकात नहीं हुई। आर्थिक नकेबंदी, धान काटो अभियान जब चलता तब प्रशासन की निंद हराम हो जाती थी। शिव सोरेन जब संताल परगना के मुख्यालय को अपने समर्थकों के साथ घेरते थे तो वहाँ के नागरिक भी डरे रहते थे। यह सब 1976-80 तक एक छात्र के रूप में देखा था। धरना प्रदर्शन का दौर जारी रहता था पूरा संताल परगना अस्त व्यस्त हो जाता था। पत्रकार की हैसियत से गुरुजी से मेरी औपचारिक मुलाकात 1984 में दुमका के मसलिया में हुई।





उन दिनों मुझे पत्रकार सुरेन्द्र किशोर ने मुझे दुमका माहजनी प्रथा पर कुछ मेटेरियल लाने भेजे थे उन दिनों सुरेन्द्र किशोर आज हिंदी दैनिक में ही पलटिकल रिपोर्ट थे। उन्हें दिनमान पत्रिका के लिए यह स्टोरी करनी थी। दुमका में किसी आदिवासी नेता ने मुझे बताया कि गुरु जी मसलिया में मिटिंग कर रहे हैं और रात में वही रुकेंगे। मैंने तुरंत बस पकड़ा और मसलिया रवाना हो गया। वहाँ पहुंचने पर पता चला कि सभा खत्म हो गई और गुरु जी सामने वाले घर में लोगों से मिल रहे हैं मैं वहाँ पहुंचा और उनके सामने था जोहार का संबोधन किया उन्होंने कहा है कि बप्पा रुकी हाल ऐसा लगा हमारी और उनकी जान पहचान बहुत पूरानी है जिरा भी नहीं लगा कि मैं इतने बड़े आंदोलनकारी के सामने बैठा हूँ।

परिचय हुआ और जब मैंने बताया कि पटना में आज अखबार में रिपोर्ट है और दुमका का निवासी हूँ यह सुनकर उन्होंने कहा कि घर का बच्चा हो तुम। उनके व्यवहार से काफी स्नेह झलकने लगा। उन्होंने वहाँ उपस्थित अपने कार्यकारी ओं को मुझे दिखाकर कहा है कि ज्ञारखंडी है पहला सवाल दागा: कैसे आप इतने बड़े आंदोलनकारी बन बैठे?

पहली बार जब उनकी कहानी सुनी तो लगा कि उन्होंने काफी संवर्धनीय जीवन जिया है। हजारीबाग के गोला प्रखंड के नेमरा गांव में बचपन बिता रहे थे कि इनकी जिंदी में तुफान तब आया जब सूदखोरों ने उनके पिता कि हत्या कर दी उस समय शिबू सोरेन मात्र 12 वर्ष के थे। यहीं से बालक शिबू सोरेन विद्रोही बन बैठे। इस घटना के बाद वह आदिवासियों को एकजुट करने लगे? उस समय उनका क्षेत्र हजारीबाग, धनबाद और पिरिडीह था इन इलाकों के महाजनों के खिलाफ खुनी

संघर्ष भी हुआ और शिबू सोरेन आदिवासियों के बीच लोकप्रिय होते चले गए। धान काटो आंदोलन जिसके साथ आदिवासी महिला खेतों में उत्तर गई उस समय पुलिस प्रशासन के लिए गुरु जी बड़ी चुनौती बन चुके थे। जेप्रेम की नीव 4फरवरी 1972 को धनबाद में रखी गई थी, उस समय गुरु जी मात्र 28 वर्ष के थे। उन्होंने जंगलों में वह अंडर ग्राउंड रहे पुलिस उन्हें खोजती रही बाद में धनबाद के तत्कालीन उपायुक्त केवी सक्सेना तथा कांग्रेसी नेता ज्ञान रंजन की पहल पर गुरु जी ने आत्मसमर्पण किया और उन्हें दो महीने तक जेल में रहना पड़ा। जेल से बाहर आने के बाद उन्होंने सोनेता संताल नामक एक संगठन बना कर अपना आंदोलन जारी रखा इसी दौरान संताली समाज ने उन्हें दिशोम गुरु की उपाधि दी, इसका अर्थ होता है देश का नेता...

शिबू सोरेन ठीकाना पटना में हाईडिंग रोड के सूरज मंडल के सरकारी आवास में रहता था। सूरज मंडल और शिबू सोरेन की जोड़ी जबरदस्त थी। उन दिनों वह लालू प्रसाद और गुरु जी के बीच वह कड़ी का काम कर रहे थे। सूरज मंडल और लालू प्रसाद की जोड़ी की चर्चा आम थी। हमलोग अक्सर वहाँ जाते थे, कभी ज्ञान रंजन, स्टीफन मरांडी, शैलेन्द्र महतो तथा संताल परगना एवं छोटा नागपुर के आदिवासी नेताओं से मुलाकात हो जाया करती थी, हमें अखबार के लिए समाचार मिल जाया करता था। वैसे भी ज्ञारखंड के होने के चलते मेरी दिलचस्पी वहाँ के समाचार छापने में रहती थी। मुझे आज के तत्कालीन संपादक ने ज्ञारखंड संबंधित समाचार छापने की छूट दे रखी थी। उस समय जरमुंडी के विधायक अभय कांत प्रसाद भी पटना के विधायक फ्लैट में रहते थे वह भी शिबू सोरेन के फ्लैट

में आया जाया करते थे। गुरु जी वहाँ भी आंदोलन की स्फरणा बनाते रहते थे और हमेशा कहते थे कि अलग ज्ञारखंड राज्य लेकर रहेंगे एक रोकच घटना याद आता है। ज्ञारखंड राज्य बनने से कुछ दिन पहले लालू सरकार ने जैक के गठन की घोषणा कर दी थी। इसे घोषणा करने के उद्देश्य से लालू प्रसाद ने अपने सरकारी आवास पर एक संवाददाता सम्मेलन बुलाया था। बड़ी खबर थी तथा दिल्ली से भी पत्रकार भी आए थे। दिग्नज सुरेन्द्र प्रताप सिंह भी उस सम्मेलन को कवर कर रहे थे मैं अपने अखबार आज हिंदी दैनिक का प्रतिनिधित्व कर रहा था। लालू प्रसाद, शिबू सोरेन, सूरज मंडल, स्टीफन मरांडी तथा जनता दल और जेप्रेम के कदावर नेता मौजूद थे। प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान गुरु जी ने मेरी तरफ इशारा करते हुए लालू को बताया कि दीपक भी ज्ञारखंडी है, इसपर सूरज मंडल और लालू ने मजाकिया लहजे में कुछ टिप्पणी की मैंने भी कुछ कहा हूँ। संवाददाता सम्मेलन समाप्त होने के बाद जब लोग जाने लगे तो सुरेन्द्र प्रताप जो उन दिनों आजतक को जमाने में लगे थे उन्होंने मुझसे पूछा कि आप किधर जा रहे हैं, मैंने कहा जाना है सर, चाणक्य होटल छोड़ दिजिए। इतने बड़े पत्रकार और इतना सर व्यवहर मेरे स्कूटर पर सवार हुए। उन्हें होटल पहुंचा दिया। उनके आग्रह पर मैं उनके साथ उनके कमरे में गया दो कप चाय के साथ शिबू सोरेन के आंदोलन पर चर्चा की और कुछ जाना भी चाहा। वह विशेषकर इस संवाददाता सम्मेलन को कवर करने दिल्ली से आए थे। दूसरे दिन सुबह वह शिबू सोरेन का साक्षात्कार ले रहे थे मैं भी वहाँ पहुंच गया था। उस समय शिबू सोरेन को कवर करने देश विदेश के पत्रकार रांची और पटना की दौड़ लगाते थे।

क्रमांक: ...

कितना बदला है झारखण्ड

जंगलों को लेकर आदिवासी समाज का अपना एक दर्शन है वो जंगलों को सिर्फ एक क्षेत्र और भू-भाग नहीं मानते बल्कि इसे अपनी जीवन का अभिन्न हिस्सा समझते हैं। जंगल आदिवासी समाज की पूजा परंपरा और त्योहार में शामिल है। राज्य का आदिवासी समाज वन को पूजता है और वनों पर अपना हक समझता है।

वि कास की अनंत संभावनओं वाले राज्य के रूप में झारखण्ड को देखा जाय, तो ये अतिशयकि नहीं होगी। झारखण्ड जिसकी पहचान ही झाड़- झाँखाड़ वाले प्रदेश के रूप में है। लेकिन यहां जंगलों के अलावा प्रचुर मात्रा में खनिज संपदा भी है। एक ऐसा राज्य जहां, जंगल, खनिज, वन्यजीव, पर्यटन के खूबसूरत स्थल, और अनगिनत संसाधन भरे पड़े हैं। राज्य की बड़ी आबादी जंगलों में रहती है और झारखण्ड के जंगल खूबसूरती की अलग कहानी को बयां करती है। वर्ष 2000 में तीन नये राज्य बने जिनमें एक झारखण्ड भी है। लेकिन पिछले 20 सालों के इस राज्य के विकास के सफर पर नजर डालते तो वो उपलब्धि नहीं दिखती है जो इसके साथ बने दो अन्य राज्यों ने हासिल किया है। छत्तीसगढ़ और उत्तराखण्ड राज्य का विकास के मामले में एक फीसदी प्रोटेक्टेड जंगल क्षेत्र है। जबकि 15 फीसदी रिजर्व जंगल है। झारखण्ड की सीमाएं की बात की जाय तो उत्तर में बिहार, पश्चिम में उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, दक्षिण में उड़ीसा और पूर्व में पश्चिम बंगाल को छूती है।

जंगलों में बसता है झारखण्ड का दिल

राज्य की बड़ी आबादी की पहचान ही झारखण्ड के जंगलों से है। हाल के वर्षों में जहां देश में जंगल घट रहे हैं, वहीं झारखण्ड में वनों का क्षेत्रफल बढ़ा है। ये फारेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया की रिपोर्ट बताती है। रिपोर्ट के मुताबिक राज्य में 200 किमी जंगल बढ़े हैं। रिपोर्ट बताती है देश के पांच राज्यों में वन क्षेत्र बढ़ा है। जिसमें झारखण्ड ने सबसे लंबी छलांग लगायी है। दरअसल राज्य में जंगल बचाने के लिए यहां के ग्रामीणों की जीजीविषा और सुदूर क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं के साथ ही सरकार की याजनाओं ने सूरत बदली है। हालांकि इस बदलाव के पीछे आदिवासी का जंगलों को अपनी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा मानने की परंपरा है। आदिवासी समाज के नजरिये से देखा जाय तो वो मानते हैं, सरकार जंगलों को दोहन करने की वाई से देखती है और वनों का व्यवसायीकरण कर लाभ कमाना चाहती है, लेकिन यहां के लोग जंगल बचाने की सोचते हैं, ताकि पर्यावरण का संरक्षण हो सके। आदिवासी समाज वन अधिकार कानून 2006 को सख्ती से लागू करना चाहता है। अगर आप राज्य के जंगलों में आदिवासी समाज से मिलेंगे और बात करेंगे तो ये बात और पुख्ता होगी। जंगलों को लेकर आदिवासी समाज का अपना एक दर्शन है वो जंगलों को सिर्फ एक क्षेत्र और भू-भाग नहीं मानते बल्कि इसे अपनी जीवन का अभिन्न हिस्सा समझते हैं। जंगल आदिवासी समाज की पूजा परंपरा और त्योहार में शामिल है। राज्य का आदिवासी समाज वन को पूजता है और वनों पर अपना हक समझता है। राज्य की राजनीति में जल, जंगल और जमीन का नारा हमेशा विमर्श के केंद्र बिंदु में होता है। लेकिन राज्य के जानकारों की माने तो ये नारा अब महज राजनीतिक जुमलेबाजी में बदलता जा रहा है।

जंगल से जुड़े जीवन को लेकर एक विमर्श ये भी है कि जहां घन जंगल है, वहां सबसे ज्यादा गरीबी है। जंगल क्षेत्र के बड़े भू-भाग में निवास करने वाला जनजातीय समुदाय मुश्किल से रोजी रोजगार जुटा पाता है। राज्य के जंगलों और आस-पास की भूमि पर खनिज संपदा प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं लेकिन आदिवासियों के जीवन में खनिज संपदा से बदलाव आता नहीं दिखता।



झानेश



फॉरेस्ट

सर्वे ऑफ इंडिया की रिपोर्ट में

झारखण्ड में 110 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र बढ़ गया है। वन क्षेत्र तो बढ़ा है, लेकिन राज्य में घना जंगल घट गया है। 2019 के सर्वे में झारखण्ड में घना वन क्षेत्र 2603.2 वर्ग किमी था। यह 2021 के सर्वे में 2601.05 वर्ग किमी हो गया है। करीब दो वर्ग किमी की कमी आयी है। पूरे राज्य में सबसे अधिक वन क्षेत्र गढ़वा में बढ़ा है। वहीं पाकड़, लोहरदगा, लातेहार और कोडरमा में वन क्षेत्र घटा है। 2021 के सर्वे के अनुसार झारखण्ड के क्षेत्रफल के 29.76% में जंगल है। 2019 में यह 29.62% था।



खनिज संपद के मामले में सबसे धनी है राज्य

भारत में खनिज संपदा के मामले में झारखण्ड राज्य को पहला स्थान प्राप्त है। जिसकी वजह है वहाँ पाये जाने वाले खनिजों का प्रचुर भंडार। राज्य में कोयला, लौह अयस्क, तांबा, चूना पत्थर, बॉम्साइट, चाइल्कले, अभ्रक, ग्रेनाइट, यूरेनियम, बालू, पत्थर जैसे अनगिनत खनिज संपदा हैं।

राज्य के जिले जैसे धनबाद, बोकारो, गिरीडीह, हजारीबाग, कोटडमा, गढ़वा, गुमला, लोहरदगा, पश्चिमी सिंहभूम, पाकुड़, सोहेबगंज के अलावा दर्जनभर ऐसे जिले हैं, जिसमें खिनिज पाये जाने को लेकर उसकी अलग ही पहचान है। इन सबके बीच पन्ना की माझिंग को लेकर भी सुगुबुगाहट होती रही है। फिलाहाल देश में कहीं भी पन्ना का खनन नहीं हो रहा है। देश में झारखण्ड के अलावा राजस्थान और आधप्रदेश के कुछ हिस्सों में ही पन्ना मौजूद है। खिनिज उत्पादन के मामले में रिपोर्ट के मुताबिक देश के कुल उत्पादन का 45 प्रतिशत कोयला झारखण्ड से मिलता है। वहीं लौह अयस्क की बात की जाय तो देश का लगभग 40 प्रतिशत झारखण्ड से प्राप्त होता है। अभ्रक खिनिज के मामले में भी देश में झारखण्ड सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। झारखण्ड कोयला व लौह-अयस्क उत्पादन में सबसे अग्रणी है। भूर्भुय सर्व ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार देश में कोयला के सबसे बड़े भंडार के रूप में पहला स्थान है। वैज्ञानिक अध्ययनों के आधार पर कहा जा सकता है कि झारखण्ड के गर्भ में अपार खिनिज संपदा भरे पड़े हैं लेकिन इसके बावजूद इसकी पहचान एक गरीब और पिछड़े हुए राज्य के रूप में है।

कृषि के क्षेत्र में राज्य की मागीदारी

झारखण्ड में कृषि संबंधी गतिविधि को अर्थव्यवस्था का मुख्या आधार माना जाता है। लेकिन राज्य के लोग सिंचाई के लिए बारिश के पानी पर ही निर्भर होते हैं। राज्य में कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल 3800000 हेक्टेयर है, वहाँ दामोदर, मयूराक्षी, बराकर, उत्तरी कोयल, दक्षिणी कोयल, शंख, स्वपरिखा, खरकाई और अजय यहाँ की प्रमुख नदियाँ हैं। झारखण्ड में कृषि का विकास एक बड़ी समस्या है जिसके पीछे सबसे बड़ा कारण कृषि योग्य जमीन का बहुत ही कम होना है, साथ ही सिंचाई की समुचित व्यवस्था का न होना है। सरकार व संस्थानों की रिपोर्ट के मुताबिक झारखण्ड में मात्र 23 प्रतिशत जमीन ही कृषि के लायक है। पठारी इलाका होने तालाब व कुएं खोने में कठिनाई होती है। दूसरे राज्यों की तरह यहाँ मैदानी भू-भाग

काफी कम हैं। उबाड़ खाबड़ खेत, छोटे-छोटे जोत बड़े कारण है कि कृषि क्षेत्र में विकास के पैमाने पर अन्य राज्यों की तुलना में ज्ञारखंड काफी पीछे है और न ही ग्रामीय फलक पर कृषि क्षेत्र में भागीदारी को लेकर राज्य कि खास पहचान ही बन पायी है।

राज्य की प्रमुख फलों पर एक नज़र

नान, मक्का, गेहूं, गन्न, जौ, मटुआ राज्य की प्रमुख फसलें हैं। थान की खेती कमोबेशे राज्य के कई जिलों में होती है। जिसमें राची, गुमला, दुमका, हजारीबाग, पलामू, गढ़वा, गोड्डा, गिरिडीह, धनबाद व सेंहभूम सबसे प्रमुख हैं। वर्ही उत्पादन की विष्टि से सकाका का दूसरा स्थान है। जो हजारीबाग गिरिडीह और साहेबगंज में बहुतायत के साथ होता है। राज्य की तीसरी प्रमुख फसल गेहूं है। जो पलामू में सबसे अधिक उत्पादन होता है। जबकि गन्ना हजारी बाग, पलामू, दुमका गोड्डा साहेबगंज गिरिडीह में ज्यादा उपजाया जाता है। रांची व इसके आसपास के क्षेत्र में सब्जियों की भी खेती बड़े पैमाने पर होती है।

राज्य में कई अन्य ऐसे उत्पाद हैं जिसका अलग महत्व है जंगलों में पाये जाने वाले शाल वृक्ष की लकड़ी भी राज्य में बहुतायत तौर पर पायी जाती है। जिसे सखुआ भी कहते हैं। शाल को राज्य में राजकीय वृक्ष का दर्जा प्राप्त है। महुआ यहां के जीवन की सर्वाधिक उपयोगी वृक्ष है। क्योंकि लकड़ी के साथ ही महुआ के फूल का आदिवासी समाज काफी मायने में बहतर इस्तेमाल करता है। लाह, केन्दु पत्ता, तसर भी राज्य के महत्वपूर्ण उत्पाद हैं। जिसमें लाह, तसर उत्पादन में झारखण्ड का देश में प्रथम स्थान है। केन्दु पत्ता व बांस भी झारखण्ड के आदिवासी जीवन का अहम हिस्सा है। केन्दु पत्ता जमा कर और बांस के सामान तैयार कर ग्रामीण बाजार में या छोटे-छोटे व्यापारी को बेचकर आदिवासी अपना जीवन यापन कर लेते हैं। वर्ही केन्दु पत्ता से राज्य को राजस्व प्राप्त होता है। लेकिन कृषि उत्पादों के जरिये राज्य की नयी पहचान को लेकर बड़ी लकीर नीति निर्माण करता रहीं खींच पा रहे हैं।

याज्य का अहम हिस्सा वज्य जीवन

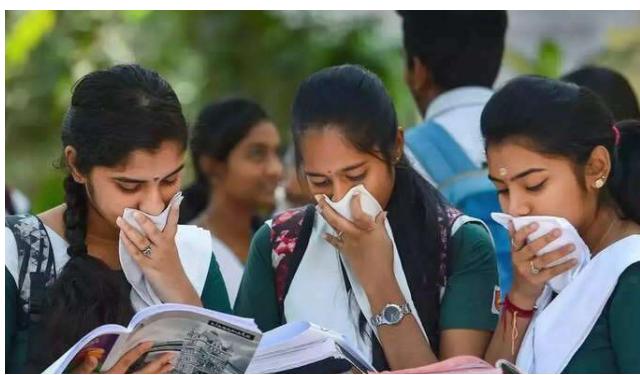
झारखण्ड के वन्य जीवन का एक अहम हिस्सा राष्ट्रीय उद्यान भी है। राज्य में एकमात्र राष्ट्रीय उद्यान बेतला राष्ट्रीय उद्यान है, जिसकी स्थापना 1986 में हुई थी। वैसे तो झारखण्ड में कुल 11 वन्य जीव अभ्यारण्य हैं। लेकिन सभी राज्य स्तरीय अभ्यारण स्थापित किये गये हैं।

ज्ञारखंड के वन्यजीवन को करीब से देखने समझने के लिए बेताला नेशनल पार्क की सैट कर सकते हैं। जहां विभिन्न प्रजातियों के वन्य जीव और वनस्पतियों से आप अच्छा हो सकते हैं। जंगली जीवों में हाथी, बाघ, तेंदुआ व अन्य जीव देखे जा सकते हैं। इस जंगल क्षेत्र से कोयल नदी गुजारती है, जिसका कारण वहाँ की जनीन काफी उपजाऊ है। मानसून के दौरान हाथियों का बारिंग के पानी में करतब आपको दोमांग से मट टेंगे। वहीं वहाँ के प्राकृतिक आकर्षणों में नटी-झरनों में देखने लायक है। दलमा वन्यजीव अभयारण्य, राज्य के अनगिनत पक्षी विहार या अन्य वन्य क्षेत्र जो पर्यटन की विद्युत से राज्य को एक अच्छा राजस्व दे सकते हैं और दोजगार का सूजन कर सकता है। उस क्षेत्र में हो रहे काम उदासीनता ही दिखाते हैं। ज्ञारखंड की नई पर्यटन नीति 2015 का मुख्य उद्देश्य राज्य में दोजगार के अवसरों को निर्माण करना तथा राज्य की आय में वृद्धि करके पर्यटकों की संख्या को बढ़ाने पर जोर देता है, लेकिन धारातल पर देखेंगे कि सरकार उस क्षेत्र में कुछ रखास नहीं कर पा रही है। वरना असम व नार्थ ईस्ट के कई राज्यों ने जंगल टूरिज्म को प्रोजेक्ट किया और अच्छी रखासी संख्या में पर्यटक उन राज्यों में पहुंचते हैं। नहीं तो जिस राज्य में इतने सारे आकर्षक अभ्यारण हो, जीव-वनस्पतियों से समृद्ध क्षेत्र और पहाड़ियां हो वहाँ पर्यटन का विकास कैसे नहीं हो सकता। एक छोटे राज्य में जहां वन्य जीवों से मरे पड़े इतने अभ्यारण हो, जब्त बाघ, तेंदुआ, जीलगाय, भालू, लकड़बहाड़ा हाथी, हिणा, स्लोथ भालू आदि देखे जा सकते हैं। आवागमन के साधन सुगम हो, वहाँ पर्यटन रोजी दोजगार और राज्य के राजस्व में उपलब्धि नहीं दिखती है तो इसके पीछे सरकार की इच्छा शक्ति की ही कमी दिखाई देती है। क्योंकि जंगल का जीवन, अभ्यारण रोमांच के शौकीनों और प्रकृति प्रेमियों को गो काफी आकर्षित कर सकते हैं, बस जरूरी है अपने पर्यटन के प्रमोशन की। पर्यटन के क्षेत्र में राज्य की अलग पहचान नहीं बन पाने के पीछे नवसलगाट को मीं एक अहम कारण माना जाता है। लेकिन राज्य के कई प्रसिद्ध पर्यटन स्थल ऐसी जगहों पर मीं हैं जो नवसलगाट प्रभावित क्षेत्र के दायरे में नहीं आते लेकिन उन जगहों का मीं विकास सरकारों नहीं कर पायी है जिससे पर्यटकों को ज्यादा से ज्यादा जोड़ा जाय। राज्य में धर्म अध्यात्म से मीं जुड़े कई पर्यटक स्थल हैं जिनमें देवघर का बाबा बैद्यनाथ मंदिर, गिरीडीह जिले में स्थित समरेत शिखर या पार्वत्नाथ मंदिर, राजधानी रांची के निकट राजदूपा का छिन्नमस्तिका, पहाड़ी मंदिर, जगन्नाथ मंदिर मीं इसमें शामिल है। इत्योरी का बौद्ध अवशेष, बाबा बासुकीनाथ मंदिर, तमाड़ का देवड़ी मंदिर मीं पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहे हैं। वहीं मलूटी की अलग पहचान इसके अलावा कई अन्य कई दर्शनीय स्थल मीं हैं। इनमें बाबा बैद्यनाथ मंदिर हिन्दुओं के लिए आस्था का अहम केंद्र है। इनके अलावा ईर्शाई समुदाय के मीं प्रार्थना के कई प्राचीन केंद्र यहाँ स्थित हैं। जिनका उनके बीच काफी महत्व है।



देवघर स्थित बाबा मंदिर में सावन के दिनों में अलग ही महिना देखने को मिलती है। करीब एक से डेढ़ महीने तक कांवर लाने वाले श्रद्धालुओं का यहाँ मेला लगा रहता है। कावड़ यात्रा करने वाले श्रद्धालु बोल बम का नामा लगाते हुए 105 किमी की यात्रा तय कर गंगाजल लेकर बाबा के दरबार में पहुंचते हैं। वैसे तो यहाँ सालों भर शिव भक्तों का मेला लगा रहता है।

साक्षरता में हम कहाँ हैं खड़े



झारखण्ड में साक्षरता की दर काफी हद तक सुधर चुकी है वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार झारखण्ड की कुल आबादी 3.29 करोड़ है। इनमें से 1.60 करोड़ महिलाएं साक्षर हैं। जबकि 74.45 लाख महिलाएं पढ़ा-लिखा नहीं है। राज्य में 55.4 फीसदी महिलाएं साक्षर हैं। राज्य के वैसे शहर जहाँ शहरी आबादी अधिक है, वहाँ पुरुष और महिला साक्षरता दर भी अधिक है। राज्य में महिला और पुरुषों की कुल जनसंख्या: 32988134 है, इसमें महिलाओं की कुल आबादी 16057819 है, राज्य की कुल साक्षर महिलाएं 7445550, वर्ष 2001 में महिला साक्षरता 38.9%, वर्ष 2011 में महिला साक्षरता 55.4%। शिक्षण संस्थानों की संख्या और पढ़ने लिखने के अवसर सहित सामाजिक सोच सबसे बड़ा कारण है। परंतु हमारे लिए यह सबसे बड़ी उपलब्धि है कि 10 वर्ष पहले की जनगणना के अनुसार अभी महिलाओं की साक्षरता प्रतिशत में वृद्धि हुई है। झारखण्ड के राज्य का ऐसा कोई जिला नहीं है जहाँ साक्षरता दर 40 फीसदी से कम हो। आंकड़ों के मुताबिक सबसे अधिक साक्षरता वाला जिला राज्य की राजधानी का क्षेत्र रांची 76.06% है जबकि सबसे कम साक्षरता वाला जिला पाठुड़ 48.82% है। रांची ऐसा जिला है जहाँ सर्वाधिक महिला व पुरुष साक्षरता है, जबकि न्यूनतम महिला साक्षरता वाले क्षेत्र में भी पाठुड़ है। शिक्षा विभाग के आंकड़ों के मुताबिक 2018 में झारखण्ड की कुल साक्षरता दर 73.20% है।

वर्ष	पुरुष	महिला	कुल
1961	33.27	6.11	21.14
1971	35.56	11.36	23.87
1981	49.71	19.13	35.03
1991	55.80	25.20	41.39
2001	67.30	38.37	53.56
2011	76.84	52.04	66.41
2018	81.00	66.20	73.20

(स्रोत : शिक्षा विभाग, आंकड़े प्रतिशत में।)

राज्य के प्रमुख पक्षी विहार

- तिलौया पक्षी विहार बरही से 18 किमी
- तेनुघाट पक्षी विहार बोकारो जिले में स्थित
- चंद्रपुरा पक्षी विहार बोकारो जिले के चंद्रपुरा ने स्थित
- ईचागढ़ पक्षी विहार जमशेदपुर जिले में स्थित
- उधवा पक्षी विहार साहेबगंज जिले में स्थित

दालमा

वन्य जीव अभ्यारण्य में हाथी परियोजना की शुरूआत की गई। तोपचांची अभ्यारण्य के मध्य में स्थित झील का नाम ह्याहरी पहाड़ी है। इन दिनों झारखण्ड में तोपचांची पर्यटन की ट्रॉप से एक अहम डेस्टीनेशन है। उधवा झील पक्षी विहार में जाड़े में प्रवासी पक्षी शरण लेने आते हैं। जाड़े में इस क्षेत्र की खूबसूरती देखते ही बनती है। साहेबगंज क्षेत्र में राजमहल की पहाड़ियों के इर्ट-गिर्द राजमहल फॉजिलिस पार्क इसमें रुचि रखने वालों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया है। सिंहभूम जिले को देश के पहले हाथी के लिए संरक्षित स्थान के रूप में मान्यता दी गयी।

अभ्यारण्य का नाम

अभ्यारण्य का नाम	स्थापना	धेरफल (वर्ग किमी. में)	प्रमाण वन्य जीव
1 पलामू अभ्यारण्य, पलामू	1976	794.33	हाथी, सांभर आदि
2 हजारीबाग अभ्यारण्य, हजारीबाग	1976	186.25	तेंदुआ, हिरण, सांभर आदि
3 महुआडाङ मेडिया अभ्यारण्य, लातेहार	1976	63.25	मेडिया, हिरण आदि
4 दालमा अभ्यारण्य, पू. सिंहभूम	1976	193.22	हाथी, तेंदुआ, हिरण आदि
5 तोपचांची अभ्यारण्य, धनबाद	1976	8.75	तेंदुआ, हिरण, जंगली भालू आदि
6 लावलौग अभ्यारण्य, चटरा	1978	207	बाघ, तेंदुआ, नीलगाय, हिरण, सांभर आदि
7 पारसनाथ अभ्यारण्य, गिरिझीह	1978	49.33	तेंदुआ, सांभर, हिरण, नीलगाय आदि
8 कोडरमा अभ्यारण्य, कोडरमा	1981	177.95	तेंदुआ, सांभर, हिरण आदि
9 पालकोट अभ्यारण्य, गुमला	1985	183.18	तेंदुआ, जंगली भालू आदि
10 उधवा झील पक्षी विहार, साहेबगंज	1990	5.65	बनकर, जलकौवा, बटान, खंजन, किंगफिशर आदि
11 राजमहल पक्षी विहार, साहेबगंज	1990	6.65	कबूतर, चूँड़ा, मधुमकरी, बुलबुल, खंजन आदि
12 बेताल राष्ट्रीय उद्यान, पलामू	1986	223. 167	हाथी, गौ, चीतल, सांभर, नीलगाय
13 गौतम बुद्ध अभ्यारण्य, कोडरमा	1976	121.142	कबूतर, मधुमकरी, बुलबुल, खंजन



गिरीडीह में स्थित समवेत शिखर जैन धर्म का सबसे बड़ा तीर्थ है। झारखण्ड के सबसे ऊंचे पर्वत पर अनेक शीर्ष और मटिर उभयंति है, यहाँ जैन धर्म के 24 में से 20 तीर्थकरों ने निर्वाण या लोक्ष को प्राप्त किया था। इस तपोभूमि का कण-कण पवित्र माना जाता है। इसे पाश्चानाथ या पारसनाथ पर्वत भी कहा जाता है, इसकी ऊंचाई 1350 मीटर है। यहाँ लगभग 29 किलोमीटर पैदल यात्रा का विधान है।

खेल में बहुत कुछ करना बाकी

राज्य में खेल की बहुत ऊजावन विशासत रही है। हाकी, तीरदांजी और हाल के दिनों में क्रिकेट के जरिये कई खिलाड़ियों ने देश और दुनिया में अपनी प्रतिभा का लोड़ा मनवाया है। खेल के मैदानों में पर्सीना बहाने वाले झारखण्ड की लड़कियों की बात हो या लड़कों की, खाली पैर कंकड़, पत्थर से भरे मैदानों पर अभ्यास के जरिये अपने जुझारों होने का अद्यत्य परिचय दिया है। झारखण्ड में हॉकी का स्वर्णिम युग 1928 में जयपाल सिंह मुंडा के समय से माना जाता है। उस समय हॉकी स्टिक खरीदने के बारे में तो लड़कियाँ सोच भी नहीं सकती थीं इसलिए वे जंगली बाँस को छील-छीलकर हॉकी स्टिक बनाती थीं। राज्य में महिलाओं की प्रतिभा और इस खेल की ओर उनका रुझान देखते हुए ही 1976 में गाँधी के बरियात में हॉकी सेंटर का गठन किया गया था। पिर जब 1980 में बिहार महिला हॉकी संघ का गठन हुआ तब टीम को राष्ट्रीय स्तर पर खेलने का मौका मिला झारखण्ड तब बिहार राज्य का ही हिस्सा था और राष्ट्रीय टीम में जगह बनाने वाली पहली महिला खिलाड़ी बनीं सावित्री पूर्ण जब छोटानागपुर की इस खिलाड़ी को 1983 में टीम में शामिल किया गया। पिर तो जैसे झारखण्ड की खिलाड़ियों के लिए उमीदें के नये दरवाजे ही खुल गये।

खास कर झारखण्ड की बेटियों ने खेल के क्षेत्र में हमेशा से ही राज्य और देश का मान बढ़ाया है। बात चाहे हाकी की हो, तीरदांजी की, या फिर पुटबाल की हो, साथ ही अन्य खेलों में भी हमारी बेटियों का काई सारी नहीं है। खुटी के बेहद गरीब परिवार और छोटे गाव से से निकलकर निकली प्रधान ने ओलंपिक का सफर तय किया। ओलंपिक में झारखण्ड की ओर से खेलने निकली पहली महिला हाकी खिलाड़ी है। 80 और 90 के दशक की बात करें तो राज्य से चार पांच खिलाड़ी झारखण्ड से जरूर शामिल होते थे। बाद में यहाँ के महिला खिलाड़ियों की चमक राष्ट्रीय स्तर पर फीकी पड़ने लगी। राज्य की खिलाड़ियों ने हताशा का दौर भी देखा है। लेकिन समय के साथ तस्वीर बदली और कई खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान छोड़ी। वहीं रियो ओलंपिक में निकली प्रधान ने भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया। जबकी तोक्यो ओलंपिक में सलीमा टेटे के भी निकली के साथ भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करने से नयी आशा जगी है। झारखण्ड ने

हॉकी खिलाड़ियों के जद्दोजहाद की अनेकों कहानियां झारखण्ड के गली-घौराहों में सुनने को मिल जायेगी। कोई लड़की खेलना चाहती थी, लेकिन स्टीक नहीं होने पर बांस के डड़े को स्टीक बना लिया, तो किसी गेंद के रूप में शरीफा फल का इस्तेमाल कर लिया। किसी को घरेलू मैदान या स्कूलों में नंगे पांच सालों अभ्यास करते देखा गया और अचानक से राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उसके खेल से लोगों ने उसे जाना। वहीं किसी का घराना राष्ट्रीय टीम के लिए हुआ तभी जाकर जूते पहनकर खेलने का मौका मिला।

विश्व स्तर पर तीरदांजी में भी अपनी खास पहचान बनायी है। भगवान विरसा की इस पावन धरती ने देश के कई खिलाड़ी दिये हैं। दुनिया में नबर एक की तीरदाज दीपिका कुमारी के वर्ल्ड चैंपियन बनने पर तीरदांजी का नया क्रेज बढ़ा है। वर्तमान में झारखण्ड में तीरदांजी के नौ सेंटर राज्य सरकार की ओर से संचालित किये जा रहे हैं। इनमें से कुछ आवासीय सेंटर भी हैं। जहाँ राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर के तीरदाज तैयार हो रहे हैं हालांकि कई खिलाड़ी मानते हैं कि झारखण्ड में खेल के क्षेत्र में अपनी भी बहुत कुछ करना बाकि है। गांव के स्तर पर खेल की प्रतियोगिताओं को बढ़ावा देना चाहिए, जिसे के स्तर पर

भी टूर्नामेंट हो, क्योंकि अभ्यास के साथ मैच होने से खिलाड़ियों के असली दम-खम का पता चलता है। 80 के दशक की बात करें तो सलोनी पूर्ण, एसमणि सांगा दामणि सोय, अलमा गुडिया, सलोपी भेगरा का मैदान पर ज़बरदस्त जलवा रहता था। वहीं बाद में मसीहा सोसेन, एडमिन केरकेट्टा ने भी मैदान में अपनी चमक बिखेरी। लेकिन पुरुष वर्ग में विमल लकड़ा के बाद किसी नये खिलाड़ी में वो बात नहीं दिखी। सिलमुनस डुंगडंग और मनोहर टोपने ने भी ओलंपिक टीम में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया है। क्रिकेट के खेल में महेन्द्र सिंह धोनी का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। महेन्द्र सिंह धोनी ने राज्य को नयी पहचान दी। धोनी के नाम की चमक ही है जिसके कारण गाँधी जैसी जगह में भी अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैचों का आयोजन को प्राथमिकता दी जाने लगी। इस कड़ी में क्रिकेटर सोरभ तिवारी भी एक नाम है।

देश के लिए पहला ओलंपिक मेडल लाने वाले जयपाल सिंह मुंडा की इस खेल को आगे बढ़ाने में अहम मूलिका रही। ब्रिटेन में वर्ष 1925 में हाओव्सफोर्ड ब्लूल का खिताब पाने वाले जयपाल सिंह मुंडा हॉकी के एकमात्र अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी थे। उनके ही नेतृत्व और कप्तानी में भारत ने 1928 के ओलंपिक का पहला स्वर्ण पदक हासिल किया था। भारत में हॉकी को आगे बढ़ाने में उनका विशेष योगदान रहा है।



जल जगंल जमीन और संघर्ष की विदायत

रखंड यानि, यहां के आदिवासियत कि पहचान उनकी अपनी माटी, जिसे

जयपाल सिंह मुंडा ने अलग फलक पर उभारा। जयपाल सिंह मुंडा से पहले भी आदिवासी नायकों के द्वारा अपनी माटी की रक्षा या कहें झारखंड की जमीन को बचाने की लड़ाई में लड़ी गई। बिरसा मुंडा, सिदो-कानून, चांद- थेरव जैसे कई नायकों ने इसके लिए अपना बलिदान तक दिया। कोल विद्रोह, संथाल विद्रोह, भील विद्रोह जैसी अनगिनत आंदोलन हैं जिसकी वजह से झारखंड की पहचान आंदोलनकारी जमीन के रूप में होती चली गयी। लेकिन जयपाल सिंह मुंडा की अगुवाई में राज्य के लिए शुरू हुए आंदोलन की राजनीतिक पहचान बनी। झारखंड को राजनीति में जयपाल सिंह मुंडा की प्रारंभिकता शब्द का उल्लेख पहले भी होता रहा है आज भी हो रहा है। दरअसल जयपाल सिंह मुंडा का आदिवासियों के जीवन, उनका शासन उनका विकास को लेकर जो दर्शन था उस पर राज्य बनने के 20 बरस के बाद भी कोई काम होता नहीं दिख रहा है। जयपाल सिंह मुंडा को आदिवासियों के अलग राज्य के सपने को साकार करने और आंदोलन के व्यवस्थित तरीके से चलाने वाले शख्स के रूप में जाना जाता है। राज्य में आदिवासियत की पहचान को लेकर सुगंगाहट कहें या छठपटाहट 1912 के बंगल से बिहार के अलग होने के बाद से दिखने लगा था। उस समय कुछ आदिवासी समूहों के द्वारा संगठन का निर्माण किया गया। और आदिवासी पहचान को स्थापित करने के साथ ही राज्य की परिकल्पना को नयी धार दी जाने लगी। जयपाल सिंह मुंडा ने 1938 में आदिवासी महासभा का गठन कर आंदोलन को सांगठनिक तौर चलाने की शुरूआत की। कुछ समय बाद 1950 में राजनीतिक रूप से झारखंड पार्टी का गठन किया और 1952 के आम चुनाव में झारखंड क्षेत्र छोटानागपुर और संथाल परगणा के लिए आरक्षित की गयी 32 सीटों पर परचम लहराया। जयपाल की लोकप्रियता का अंदाजा इस से भी लग सकता है कि वो लोकसभा के सांसद बने। अन्य चार सीटों पर पार्टी के उम्मीदवार जीते। 1955 में राज्य

जल-जंगल-जमीन की लड़ाई सदियों पुरानी है। आदिवासी समुदाय आज भी मूलभूत मांगों को लेकर संघर्षित हैं। हूल दिवस हमें ऐसे ही संघर्ष की याद दिलाता है। जब कटीब 150 साल इस क्षेत्र के आदिवासियों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का बिगुल फूंका था। ये अलग बात है कि इतिहासकारों ने 1857 के सिपाही विद्रोह को अंग्रेजों के खिलाफ पहली लड़ाई की उपमा दी हो, लेकिन यहां के आदिवासियों ने 30 जून, 1855 को ही अंग्रेजी हुक्मत के खिलाफ झंडा बुलंद कर दिया था। सिदो और कानून के नेतृत्व में मौजूदा साहेबगंज जिले के मगनाड़ीह गांव से हूल विद्रोह शुरू हुआ था। इस मौके पर सिदो ने जारा दिया था, 'करो या मरो, अंग्रेजों हमारी माटी छोड़ो'।

a

पुनर्गठन आयोग के सामने उन्होंने अलग राज्य की मांग की। 1957 के आमचुनाव में स्थितियां बदली कई जगहों पर पार्टी की हार हुई और कालांतर में 1963 में पार्टी का कांग्रेस में विलय हो गया। उस समय बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री विनोदननंद झा थे। राज्य की राजनीति में अलग राज्य के मुद्दे की लौ जलती रही इस बीच शिवू सोरेन के राजनीतिक शख्सियत का उभार हुआ।

लोकगीतों में झारखंड

झारखंड में लोकगीतों के बिना जनआंदोलन की बात बेमानी है चूंकि आदिवासी समाज में अपनी हर भावना को अभिव्यक्त करने का सरल माध्यम लोकगीत रहे हैं इसलिए संघर्ष की आवाज बुलंद करने में भी लोकगीतों की हमेशा प्रारंभिकता रही है। गीतों से जनआंदोलन को हमेशा गति मिली और संघर्ष तेज हुआ है। ऐसा ही एक गीत है गांव छोड़ब नाहीं।

गाव छोड़ब नहीं, जंगल छोड़ब नहीं,
माय माटी छोड़ब नहीं लडाय छोड़ब नहीं।

बाँध बनाए, गाँव दुबोए, कारखाना बनाए,
जंगल काटे, खदान खोदे, सेंकुरी बनाए,

जल जंगल जमीन छोड़ी हमिन कहा कहा जाए,
विकास के भगवान बता हम कैसे जान बचाए॥

झारखंड की धरती के जाने माने फिल्मकार, गीतकार व संस्कृतिकर्मी नेघनाट लिया यह गीत गांव छोड़ नाहीं राष्ट्रीय स्तर पर जन आंदोलन को नवीं धार दे रहा है और संघर्ष कर रहे लोगों की जनरेतना को बढ़ा रहा है।

जमुना सुखी, नर्मदा सुखी, सुखी सुवर्णरिखा, गंगा बनी गंदी नाली, कृष्णा काली रेखा, तुम पियोगे पेस्सी कोला, बिस्लरी का पानी, हम कैसे अपना प्यास बुझाए, पीकर कचरा पानी? ॥ पुरुखे थे क्या मूरख जो वे जंगल को बचाए, धरती रखी हरा भरी नदी मधु बहाए, तेरी हवसमें जल गई धरती, लुट गई हरियाली, मचली मर गई, पंछी उड गई जाने किस दिशाए ॥ मंत्री बने कम्पनी के दलाल हम से जमीन छीनी, उनको बचाने लेकर आए साथ में पलटनी हो छु अफसर बने हैं राजा ठेकेदार बने धनी, गाँव हमारी बन गई है उनकी कोलोनी ॥ बिरसा पुकारे एकजुट होवो छोड़ो ये खामोशी, मछवारे आये, दलित आये, आये आदिवासी, हो खेत खालीहान से जागो नगड़ा बजाओ, लड़ाई छोड़ी चारा नहीं सुनो देस वासी ॥

झारखण्ड आंदोलन की समग्र रूप से ठोस राजनीतिक शुरूआत



ज्ञा राखण्ड राज्य के लिए आंदोलन करने वाले कई छोटे दलों संघर्ष कर रहे थे। लेकिन अग्रुआ छोटे दलों की नेतृत्व करने वाले में एक बड़ा नाम बिनोद बिहारी महतो का था। जिन्होंने झारखण्ड राज्य के आंदोलन को नयी दिशा दी। वो 25 साल तक कम्युनिस्ट पार्टी के भी सदस्य रहे। लेकिन कालांतर में उनका अविश्वास अखिल भारतीय दलों से टूट गया। उन्होंने झारखण्ड मुक्ति मोर्चा बनाया। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के बैनर तले झारखण्ड अलग राज्य को लेकर कई आंदोलन हुए। 1986 में निर्मल महतो ने ऑल

झारखण्ड स्टूडेंट्स यूनियन कि स्थापना कि और झारखण्ड अलग राज्य के लिए कई आंदोलन किया। बाद में 4 फरवरी 1972 में शिबू सोरेन के सोनोत संताल संगठन और विनोद बिहारी महतो के शिवाजी समाज नाम का संगठन का विलय हुआ और झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का उदय हुआ। इसमें ट्रेड यूनियन लीडर कॉमरेड एके राय की बेहद महत्वपूर्ण भूमिका रही। विनोद बिहारी महतो जेएमएण के पहले अध्यक्ष बने थे और शिबू सोरेन पहले महासचिव। कुछ सालों में पार्टी ने दक्षिण बिहार

छोटे दलों के इस आंदोलन में आगे बढ़ने की भी कई वजह रही, जानकार बताते हैं कि आंदोलन चला रहे समूह को उस समय आघात पहुंचा। जब 1963 में जयपाल सिंह ने झारखण्ड पार्टी का कांग्रेस में विलय कर दिया। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप छोटानागपुर क्षेत्र में कई छोटे छोटे झारखण्ड नामधारी दलों का उदय हुआ जो आमतौर पर विमिन्जन समुदायों का प्रतिनिधित्व करती थी और विमिन्जन अलग-अलग समय में इन दलों ने चुनावी सफलताएं भी हासिल की।

(वर्तमान

झारखण्ड) के

साथ-साथ उड़ीसा और बंगाल में जनमुद्देश खास तौर पर अलग राज्य के आंदोलन की बढ़ावालत जनाधार विकसित कर लिया।

झारखण्ड आंदोलन और राज्य की राजनीति का सबसे बड़ा घेहरा



एमएम की नींव 4 फरवरी, 1972 को जब धनबाद में रखी गयी। उस समय शिबू सोरेन 28 साल के युवा थे। इसके पहले वो जब 12 वर्ष के थे,

तब उनके पिता सोबरन माझी की नृशंस हत्या सुदूरखोरों ने कर दी थी। तत्कालीन हजारीबाग जिले के गोला प्रखण्ड अंतर्गत नेमरा गांव के रहने वाले किशोर शिबू सोरेन ने उसी वक्त से सूदूरखोरों-महाजनों के खिलाफ संघर्ष का संकल्प लिया था। पिता के हत्यारों को अदालत से सजा दिलाने के लिए शिबू और उनके परिवार ने लंबे संघर्ष के दौरान जो दुश्वारियां झेलीं। उसने उन्हें विद्रोही बना दिया। वो आदिवासियों को एकजुट कर महाजनों-सूदूरखोरों के खिलाफ लड़ने लगे, वो और उनके अनुयाइ तीर-धनुष लेकर चलते थे। धनबाद, हजारीबाग, गिरिडीह जैसे इलाकों में महाजनों के खिलाफ इस आंदोलन ने कई बार हिंसक रूप ले लिया था।

शिबू सोरेन के आहान पर इन इलाकों में धान काटो आंदोलन चला। आदिवासी महिलाएं खेतों में उतर गईं। आदिवासी पुरुष खेतों के बाहर तीर-धनुष लेकर पहरा देते और आदिवासी महिलाएं धान कटाती थीं। इसे लेकर कुछ स्थानों पर महाजन और पुलिस के साथ आंदोलनकारियों का हिंसक संघर्ष भी हुआ, कई लोगों की जान भी गई। विभिन्न थानों में शिबू सोरेन पर मामला भी दर्ज हुआ।





पुलिस-प्रशासन के लिए शिवू सोरेन बड़ी चुनौती बन गए। वो कभी पारसनाथ की पहाड़ी तो कभी दुंडी के जंगलों में अंडरग्राउंड रहे, उनकी एक पुकार पर डुगडुगी बजते ही हजारों लोग तीर-धनुष लेकर इकट्ठा हो जाते थे, बाद में धनबाद के तत्कालीन डीसी केबी सक्सेना और कहावर कांग्रेसी नेता ज्ञानरंजन के सहयोग से शिवू सोरेन ने सरेंडर किया था, दो महीने जेल में रहने के बाद बाहर आए, उन्होंने सोनोता संताल नाम का संगठन बनाकर आंदोलन किया, इसी दौरान उन्हें संताली समाज ने दिशोम गुरु की उपाधि दी। दिशोम गुरु का शाब्दिक अर्थ होता है अपने देश का नेता।

1980 में शिवू सोरेन पहली बार दुमका से सांसद चुने गए। इसी वर्ष बिहार विधानसभा के लिए हुए चुनाव में पार्टी ने संताल परगना क्षेत्र की 18 में से 9 सीटें जीतकर पहली बार अपने मजबूत राजनीतिक वजूद का एहसास कराया। 1991 में विनोद बिहारी महतो के निधन के बाद शिवू सोरेन अध्यक्ष बने और इसके बाद से वो इस पार्टी के पर्याय बन गए, झारखण्ड अलग राज्य के लिए चले आंदोलन को निर्णयक दौर में पहुंचाने का बहुत हद तक श्रेय जेएमएम को जाता है और उसमें बड़ी भूमिका शिवू सोरेन की रही। इस बीच केंद्र की सरकार को बाहर से समर्थन देने। सांसद रिश्वत कांड, शशिनाथ हत्याकांड जैसे मसले ने शिवू सोरेन को कठघरे में खड़ा किया। लेकिन तमाम उत्तर चढ़ाव के बीच राज्य की एक बड़ी आवादी का समर्थन शिवू सोरेन के लिए बढ़ता रहा। राज्य निर्माण के बाद सीएम की भी उन्होंने कुर्सी संभाली। लेकिन एक बार भी कार्यकाल पूरा नहीं कर पाये। वहीं 2015 में जपशेदपुर में पार्टी के दसवें महाधिवेशन में हेमंत सोरेन को जब पहली बार पार्टी का कार्यकारी अध्यक्ष चुना गया, तभी से पार्टी में एक नए दौर की शुरूआत हुई। आज शिवू सोरेन पार्टी के संघर्षों के प्रतीक पुरुष बन चुके हैं, वो औपचारिक तौर पर पार्टी के प्रमुख हैं और व्याहारिक एवं रणनीतिक तौर पर पार्टी की कमान उनके पुत्र हेमंत सोरेन के हाथ में है।

तकरीबन 50 साल पुरानी पार्टी झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ने 78 साल के शिवू को लगातार 10वीं बार सर्वसम्मति से अध्यक्ष और उनके पुत्र झारखण्ड के सीएम हेमंत सोरेन को तीसरी बार कार्यकारी अध्यक्ष चुना है। जेएमएम के इतिहास, इसकी राजनीतिक शैली और अब तक के सफरनामे पर गौर किया जाए तो ये एक असाधारण राजनीतिक घटनाक्रम है। बीते 50 सालों में पूर्ववर्ती बिहार और मौजूदा झारखण्ड की राजनीति में एक बड़ी धूरी बनने, खेत-खलिहानों, खदानों और जंगलों के संघर्ष से लेकर राज्य में सत्ता के शीर्ष तक पहुंचने और एक पार्टी को इस माटी का विश्वनीय चेहरा बनाये जाने की लंबी दास्तान है। जिसमें संघर्ष और आंदोलन की कई कहानियां हैं।

बढ़ती उम्र का तकाजा है कि अब शिवू सोरेन बहुत सक्रिय नहीं हैं, लेकिन वो आज भी झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के पर्याय माने जाते हैं। 18 दिसंबर को रांची में आयोजित पार्टी के 12वें महाधिवेशन में उनको 10वीं बार सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने की घोषणा महज एक औपचारिकता है। इसके साथ उनके पुत्र और झारखण्ड के मौजूदा मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को लगातार तीसरी बार पार्टी का कार्यकारी अध्यक्ष चुना गया है। लगभग सात वर्षों से संगठन में इस पद पर हेमंत सोरेन की निर्विवाद मौजूदगी बताती है कि पार्टी की शीर्ष कमान पिता से पुत्र यानी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सफलतापूर्वक ट्रांसफर हो चुका है। हेमंत सोरेन ने इन वर्षों में खुद का शिवू सोरेन का सफल उत्तराधिकारी साबित भी किया है।

पार्टी ने 2019 में विधानसभा चुनाव हेमंत सोरेन की अगुवाई में ही लड़ा और अपना अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए राज्य की सत्ता हासिल कर ली। जेएमएम ने राज्य की 81 में से 30 विधानसभा सीटों पर कब्जा किया और कांग्रेस एवं आरजेडी के साथ मिलकर कुल 47 सीटों के साथ गठबंधन की सरकार बनाई। आगामी 29 दिसंबर को इस सरकार के 23 साल परे हो रहे हैं। आज की तारीख में हेमंत सोरेन के लिए जेएमएम के भीतर और कमोबेश राज्य में कांग्रेस और राजद को मिलाकर चल रही गठबंधन सरकार के अंदर कोई चुनौती नहीं है। हाल के महीनों में कांग्रेस के कई विधायकों ने कुछ मुद्दों पर सरकार के निर्णयों पर सवाल उठाया है लेकिन गठबंधन में

तकरीबन 50 साल पुरानी पार्टी झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ने 78 साल के शिवू को लगातार 10वीं बार सर्वसम्मति से अध्यक्ष और उनके पुत्र झारखण्ड के सीएम हेमंत सोरेन को तीसरी बार कार्यकारी अध्यक्ष चुना है। जेएमएम के इतिहास, इसकी राजनीतिक शैली और अब तक के सफरनामे पर गौर किया जाए तो ये एक असाधारण राजनीतिक घटनाक्रम है। बीते 50 सालों में पूर्ववर्ती बिहार और मौजूदा झारखण्ड की राजनीति में एक बड़ी धूरी बनने, खेत-खलिहानों, खदानों और जंगलों के संघर्ष से लेकर राज्य में सत्ता के शीर्ष तक पहुंचने और एक पार्टी को इस माटी का विश्वनीय चेहरा बनाये जाने की लंबी दास्तान है। जिसमें संघर्ष और आंदोलन की कई कहानियां हैं।

जेएमएम के मजबूत संख्याबल के चलते हेमंत सोरेन अपने निर्णयों पर अंडिंग हैं।

झारखण्ड की सांस्कृतिक विरासत : एक झलक



रत्वर्ष में झारखण्ड अनुपम सौंदर्य से परिपूर्ण एक ऐसा अनूठा राज्य है जो अपना स्वतंत्र अस्तित्व यद्यपि 2000 ईस्वी में प्राप्त करता है मगर इस झारखण्ड क्षेत्र की पहचान हजारों वर्षों से है; यहाँ तक कि महाभारत काल में भी झारखण्ड क्षेत्र की चर्चा पाई जाती है और इसका विस्तार एक विशाल क्षेत्र में पाया जाता है; बिहार के ढेहरी औन

सोन से लेकर वर्तमान संताल परगना क्षेत्र तक एक अद्भुत सौंदर्य से परिपूर्ण, अभयारण्यों से आच्छादित, खुबसूरत पहाड़ियों से विभूषित तथे बहुविध आक्रोश से संपन्न विलक्षण

भूखण्ड है झारखण्ड। झारखण्ड सिर्फ प्राकृतिक उपादानों से ही लबरेज नहीं है बल्कि मानवीय विशिष्टाओं से भी अन्यतम ढंग से विभूषित है।

जहाँ तक झारखण्ड की संस्कृति एजवं सांस्कृतिक विरासत की बात है तो यहाँ की कला और संस्कृति की चर्चा प्रायः दो भागों में बांट कर होती है मगर यदि सच में कहें तो झारखण्ड की संस्कृति एक मिली-जुली संस्कृति है; बिहार के प्रवासी यहाँ आए तो उनकी बिहारी संस्कृति का भी असर है, बंगाल के करीब रहने के कारण और एक बड़ा क्षेत्र लंबे समय तक बंगाल से जुड़े होने के कारण बांगला संस्कृति का भी प्रभाव है वहीं दक्षिणी भाग उड़ीसा से सटा होने के कारण उड़िया संस्कृति से भी प्रभावित है इसके अलावे आदिवासी संस्कृति की अपनी विलक्षणता तो है ही झारखण्ड में आदिवासी संस्कृति मुख्यतः दो भागों में बंटी है या कहें कि दो भिन्न पहचान रखती हैं; एक छोटा नागपुरी की संस्कृति तो दूसरी संताल परगना की संस्कृति।

यहाँ विभिन्न प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं हिंदी उर्दू

की अपनी विशिष्ट सामर्थ्य को प्रदर्शित करती है। खासियत यह कि वे प्राकृतिक रंगों का उपयोग करती हैं; वे पलाश के फूलों से, सेम के पत्तों से, काली मिट्टी से और पुआल के जलने के बाद प्राप्त राख से बहुविध रःग तैयार करती हैं तथा इनके इस्तेमाल से बहरंगी चित्रों को उभारना आदिवासी भाई-बहनों की विशिष्टता है।

यहाँ की एक विशेष चित्रकला कुंवर है कोहबर है जिसे पूरी दुनिया में सराहा जा रहा है। महिलाएं बहुत मेहनत करके और पारंपरिक वस्तुओं का इस्तेमाल इन खुबसूरत चित्रों को उकरती हैं और विभिन्न प्रकार के संदेश भी प्रेषित करती हैं।

झारखण्ड के दो कलाकार बड़े ही प्रसिद्ध हुए हैं और समानित भी; छोटानागपुर क्षेत्र में हरेन ठाकुर तो संताल परगना क्षेत्र में ललित माहन राय-इन दोनों महानुभावों ने छोटा नागपुर और संताल परगना की कला और संस्कृति को एक खास ऊंचाइ और गरिमा प्रदान की वहीं लाक-नृत्य तथा लोक-गीत के क्षेत्र में पद्म श्री मुकुन्द नायक ने झारखण्डी लोक-गीत नृत्य को वैशिक पहचान दिलाने में महती भूमिका निभाई है।

झारखण्ड की संस्कृति में खानपान वेशभूषा और खेलकूद की अपनी विशिष्टता है यहाँ के वाद्य यंत्र भी पारंपरिक शैली के हैं नगाड़े हैं, ढोल हैं, मांदर हैं, खोल हैं तो दुंदुभी, शहनाई और बाँसुरी भी हैं; इन सभी वाद्य यंत्रों का इस्तेमाल त्योहारों के अवसर पर जब विभिन्न प्रकार के नृत्यों की प्रस्तुति होती है तब किया जाता है झारखण्ड की संस्कृति की विशेषता यह है यहाँ के आदिवासी बंधुओं में आरंभ से ही एक गजब की सदासयता, शालीनता और सत्यता है जो बरबस आम लोगों को प्रभावित कर जाती है।

यूं कहें तो झारखण्ड की मिली-जुली संस्कृति झारखण्ड की एक अपनी अनूठी विरासत है जो आम लोगों में विभिन्न प्रकार के सुखद और सकारात्मक संदेश पीढ़ी दर पीढ़ी प्रेषित करते रहती है साथ ही यदि आदिवासी संस्कृति की बात की जाए तो इन्होंने अपनी संस्कृति की पवित्रता को अब तक न सिर्फ अक्षुण्ण बनाये रखा है बल्कि कहें तो अन्य संस्कृतियों को बड़े करीब से प्रभावित भी कर गई हैं। आज आवश्यकता है सरकार की ओर से इमानदारी पूर्वक पहल करने की ताकि झारखण्ड की संस्कृति को न सिर्फ संरक्षित किया जाए बल्कि इसका विस्तारीकरण भी हो और राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसे पहचान भी मिले ऐसा सजग उपकरण होना ही चाहिए क्योंकि झारखण्ड में कुछ ऐसी विशेषताएं हैं यदि इसका प्रदर्शन राष्ट्रीय प्लेटफार्म पर या अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सफलतापूर्वक किया जा सके तो यह अपनी विशेषताओं के कारण झारखण्ड के लिए अन्यतम प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सक्षम होंगे क्योंकि चाहे वह कला और शिल्प की बात हो, गीत और नृत्य की बात हो, हस्तशिल्प की बात हो या ऐतिहासिक तथ्यों से जुड़े हुए सत्य की बात हो हर चीज यहाँ की विलक्षण है और इस विलक्षणता का हर किसी को सम्मान करना ही चाहिए और इसे खास पहचान दिलाने का सार्थक प्रयास करना ही ही चाहिए।

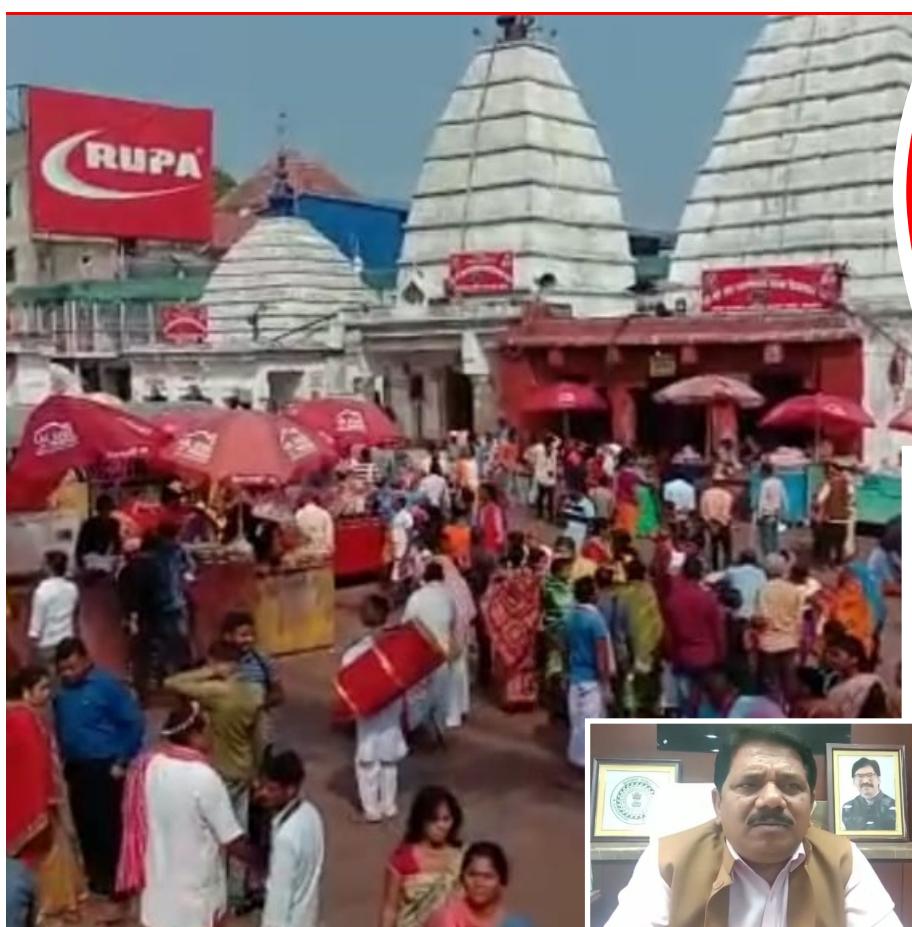


रामेश्वर गुंजन, शिक्षाविद्

मा

देवघर के बाबा मंदिर से निकलने वाले नीर की पवित्रता बनाये रखने की पहल

नीर की होगी ब्रांडिंग



ननि ने स्वीकृत
की योजना



दे

गढ़ बाबा मंदिर से निकलने वाले नीर को अब ईसायकल कर उपयोगी बनाने की योजना नगर निगम द्वारा स्वीकृत की गई है देवघर नगर निगम के नगर आयुक्त शैलेन्द्र कुमार लाल के अनुसार प्रतिदिन बाबा पर हजारों गैलेन जल अपित किया जाता है और विशेष तिथियों पर भी मुख्य मंदिर सहित सभी मंदिरों में लाखों गैलेन जल अपित किया जाता है जो मंदिर से बाहर निकल कर इधर उधर बर्बाद हो जाता है एक माह तक चलने वाले विशेष प्रसिद्ध श्रावणी मेला के दौरान तो श्रद्धालुओं द्वारा सिर्फ बाबा पर लाखों गैलेन गंगा जल अपित किया जाता है इस नीर से जुड़ी आस्था के महेनजर अब इसे

उपयोगी बनाने के लिए नगर निगम ने एक योजना स्वीकृत की है तकरीबन 49 लाख की इस योजना में काम का जिम्मा एक निजी कंपनी को सौंपा गया है इसके तहत मुख्य मंदिर सहित बांकी सभी मंदिरों से योज निकलने वाले नीर को मानसरोवर के समीप इकट्ठा किया जाएगा जहाँ से एक फिल्ट्रेशन प्लाट के जरिये इसे ईसायकल कर उपयोगी बनाया जाएगा इससे नीर की आस्था तो बढ़करार होगी ही जल प्रबंधन के माध्यम से इसे ईसायकल कर अन्य कार्य के लिए भी उपयोगी बनाया जा सकेगा नगर निगम अधिकारी के अनुसार बाबा मंदिर से निकलने वाले नीर की धार्मिक महत्ता को देखते हुए इस नीर की ब्रांडिंग करने की भी योजना है नगर आयुक्त के अनुसार इस प्रोजेक्ट पर काम करने वाली कार्यकारी ऐजेंसी को समय सीमा के अंदर कार्य पूरा करने के निर्देश दिए गए हैं उम्मीद की जा रही है कि अगर सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो आने वाले दो माह के अंदर यह पूरी योजना धारातल पर उतर जाएगी। आस्था से जुड़े बाबा मंदिर से निकलने वाले नीर की पवित्रता बनाये रखने की नगर निगम की इस पहल का पुरोहित समाज भी समर्थन कर रहा है पुरोहितों के अनुसार इससे बाबा मंदिर से निकलने वाले नीर की पवित्रता भी बरकार रह सकेगी और जल प्रबंधन के जरिये पानी की समस्या का भी कुछ हट तक समाधान हो सकेगा गौरतलब है कि इससे पहले भी जिला प्रशासन के स्तर से बाबा मंदिर से निकलने वाले नीर को इकट्ठा करने और इसकी ब्रांडिंग करने की एक योजना स्वीकृत की गई थी, लेकिन योजना धारातल पर उतारने से पहले फाइलों में ही गुरु हो गई अब इस बाबा मंदिर के नीर को लेकर देवघर नगर निगम ने फिर से पहल शुरू की है उम्मीद की जानी चाहिए कि नगर निगम अपने इस नेक मकासद में कामयाब होगा।



देवघर से धनंजय भारती

झारखंड लाइफ
पत्रिका की पूरे टीम को मेरी हार्दिक
शुभकामनाएं, ऊँचाइयों पर पहुंचे और
जनता की आवाज बने...



पण्डित रामराज झज्जपाड़े

(प्रथम लोकसभा सांसद) मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट
अपना शुभकामनाएं प्रेषित करता है।
फाउण्डर अध्यक्ष राजेंद्र चरण द्वारी।





Two Daughter's Club

*Respect those parents, in your
“Mohalla” In your “City” or
Those Employees in your
“Organisation”*

*Who have two Daughters
or only Daughters*

जिनके पास सिर्फ बेटियां ही बेटियां हैं,
उनके माता-पिता को भी
सम्मान दीजिए

बेटियों के माता-पिता का सम्मान
यानी बेटियों का सम्मान
मतलब राष्ट्र का सम्मान

Support us & Join this Campaign
E-mail : twodaughtersclub@gmail.com
Mob. : 9313513580, 9582478955
Website : www.twodaughtersclub.org

In Association with
दो कदम
हमारे साथ



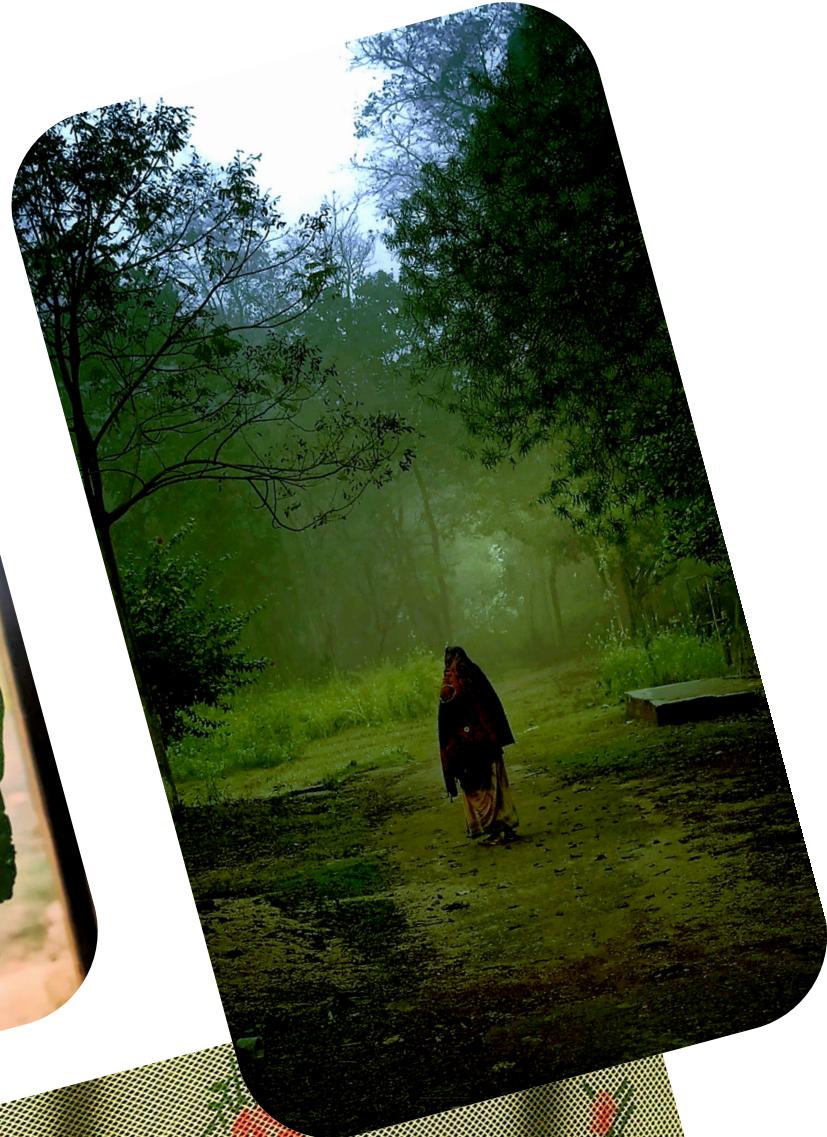
तस्वीरों में

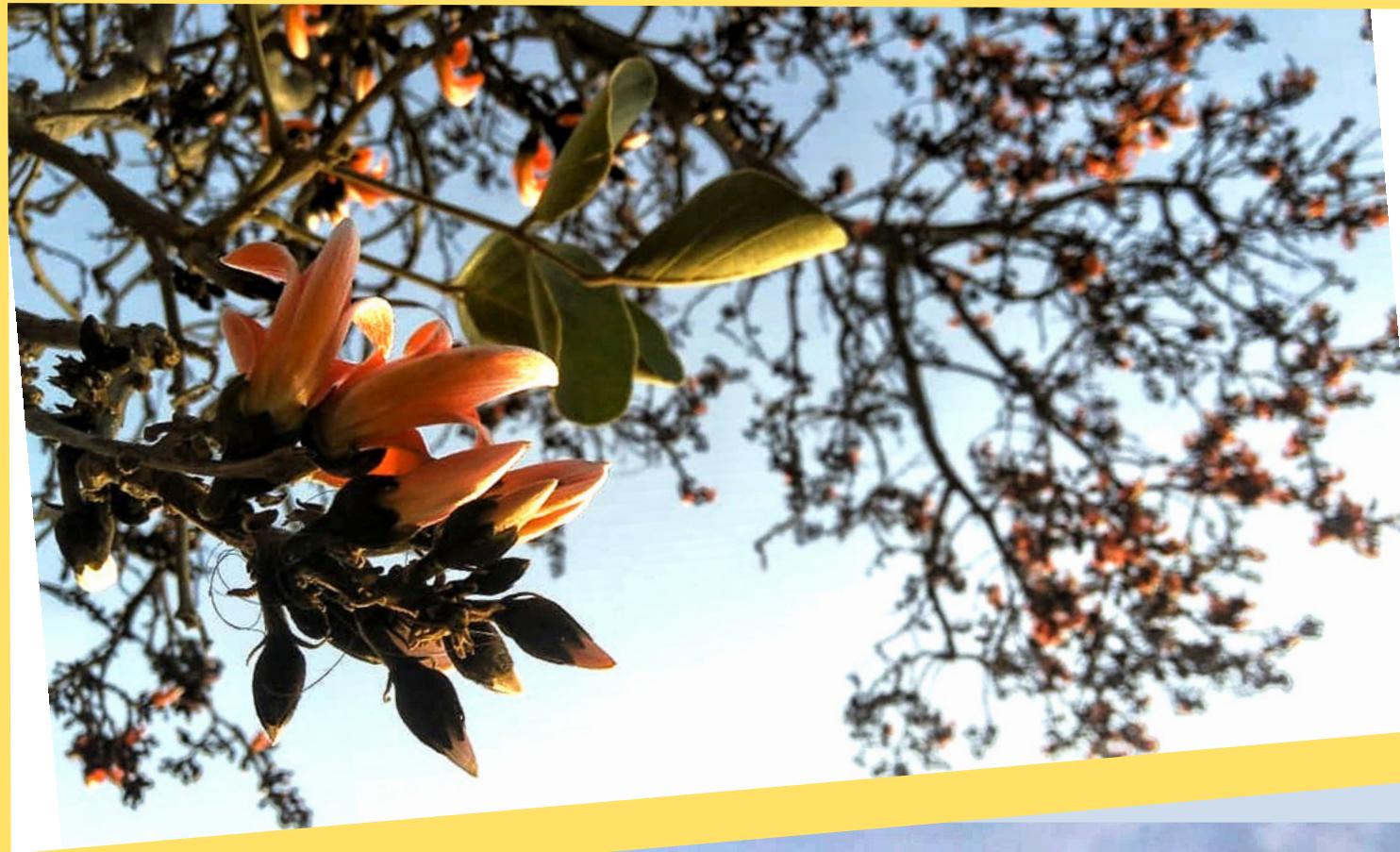
झारखण्ड



सुरमई सरंगी, गुगा पत्रकार







जाने अपने विधायक को

देवघर विधानसभा नारायण दास भाजपा



दा

जनीतिक शिख्यताओं की पहचान श्रृंखला में हमने बात की है देवघर विधानसभा के भाजपा विधायक नारायण दास से। एक ऐसा विधायक जो राजनीतिक ग्लैमर यानि तड़क भड़क से दूर रहकर काम करने में विश्वास रखता है। प्रचार प्रसार के बिना चुपचाप आम जनता से मिलना, कार्यकर्ताओं की परेशानी पर तत्काल उनसे संपर्क करना, बीमार कार्यकर्ताओं का हालचाल लेना और सहजता व सरलता से क्षेत्र की जनता के लिए सुलभ होना ही इनकी यूएसपी है।

राजनीति से इनका जुड़ाव

नारायण दास बताते हैं कि समाज को देखने की उनका नजरिया सेवा का रहा है। किसी भी लाचार, परेशान या असहाय को किशोर की उम्र से ही देखता पर तत्काल मन में एक ही भावना आती कि किसी तरह इसकी मदद कर सकूँ। सेवा के इसी जज्बे के चलते धीरे धीरे आएसएस से इनका जुड़ाव हुआ। संघ के सेवा कार्य दुनिया भर में प्रसिद्ध है। किसी भी तरह की राष्ट्रीय आपदा हो या महामारी, संगठन के स्वयंसेवक सेवा कार्य में जी जान से जुट जाते हैं। नारायण दास बताते हैं कि संघ के कार्यक्रमों में आने जाने और संगठन के द्वारा चलाये जाने वाले सेवा कार्यक्रमों में उनकी बढ़ती रुचि को देखते हुए इन्हें बड़ा दायित्व दिया जाने लगा। संघ में काम करने वाले इनके साथियों के मूलाभिक, इनके अंदर राजनीतिक सूझ-बूझ भी काफी भी थी। कालांतर में ये भाजपा में सक्रिय हो गये। जिसके बाद पहली बार इन्हें प्रखंड अनुसूचित जाति मोर्चा का अध्यक्ष बनाया गया। इसके बाद नारायण दास अपने तेज तरार छवि के चलते बीजेपी देवघर प्रखंड के महामंत्री व जिला मंत्री और कई बार 20 सूत्रीय सदस्य बने। वहीं प्रदेश कार्य समिति सदस्य के रूप में भी इनको स्थान मिला। इनकी रणनीतिक कौशल का ही परिणाम था कि इनकी पती जब 2010 में मुखिया पद के लिए चुनाव लड़ी, तो देवघर प्रखंड में सबसे ज्यादा वोट लाकर वह मुखिया बनी।

राजनीति में सक्रियता के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा

बातचीत के दौरान विधायक नारायण दास पुराने दिनों को याद करते हुए बताते हैं कि कैसे 40 साल एक कार्यकर्ता के रूप में काम किया और किसी भी काम को छोटा नहीं समझा। पार्टी के आदेश पर झंडा ढोना, दरी बिछाना, हैंड बिल बांटना, यहां तक कि रात-रात भर पोस्टर चिपकाने का भी काम करते थे। क्योंकि पार्टी की ओर से घोषित उनके ही साथी विधायक और सांसद बनने के लिए मैदान संघर्ष कर थे।



मनीष पाठक, विशेष संवाददाता



बताते हैं कि इतने लंबे समय तक पार्टी के काम करने के दौरान कई बार दूसरी राजनीतिक पार्टियों की ओर से भी प्रलोभन दिया गया कि हमारी पार्टी से जुड़िए तत्काल आपको क्षेत्र से टिकट दिया जायेगा। दूसरी पार्टियां कहती कि इतने वर्षों से आप इस पार्टी का नाम ढो रहे हो, इसके बाद जूदा पार्टी में कोई स्थान नहीं मिल रहा, मिलने पर उनकी बातों को सुनता लेकिन कभी पार्टी से अलग होने का विचार मन में आया ही नहीं। क्योंकि संघ ने जो शिक्षा हम जैसे स्वयंसेवकों को शुरूआती दिनों में दी थी, कि सेवा ही सबसे बड़ा कार्य है पद कुछ नहीं है उसी पर अमल करता हुआ आगे बढ़ता गया।

विधानसभा जीतकर पार्टी की उम्मीदों पर खरा उतरा

देवघर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा का टिकट मिलने पर नारायण दास बताते हैं कि काफी खुशी हुई। हालांकि टिकट मिलने पर मेरे पास मात्र 200 रुपए थे और चुनाव लड़ना था। लेकिन अंत्योदय परिवार के एक सदस्य को राजनीति में आगे लाकर बीजेपी ने हौसला बढ़ाया तो पैसे नहीं होते हुए भी संघर्ष के लिए तैयार था। क्योंकि हम जैसे वर्चित वर्ग के कार्यकर्ताओं को भाजपा में ही सम्मान है, दूसरी राजनीतिक पार्टी वो नहीं दें सकती जो भाजपा हमलोंगों के लिए करती है। बिना किसी पहुंच के हम जैसे कार्यकर्ता को टिकट मिला और ये भाजपा में ही संभव था। टिकट मिलने पर जिम्मेवारी बढ़ गयी कि पार्टी ने जिस विश्वास के साथ भरोसा किया है कि उस हर हालत में पूरा करना है। नारायण दास बताते हैं कि चुनाव के दौरान काफी उत्तर चढ़ाव भरे दिन रहे और परिणाम आने पर पहली बार इस सीट पर

भाजपा का कोई विधायक बना। 2019 में फिर जनता ने अपना भरपूर प्यार दे कर दुबारा इस क्षेत्र से मुझे विधायक बनाया। पार्टी ने दोबारा मुझपर भरोसा किया था, जिस पर मैं खरा उत्तरा। नारायण दास बताते हैं कि उनकी जीत में जिले के गांव गांव के कार्यकर्ता और शहर के हमारे पुराने वरिष्ठ सभियों और एक-एक कार्यकर्ताओं की दिन रात की मेहनत शामिल है। नारायण दास कहते हैं कि उनकी जीत में सबका साथ सबका विकास, का ही वो मूल मंत्र है। जिसे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन जैसे लाखों कार्यकर्ता को दिया है।

काफी तंगहाली में भी गुजरी है जिंदगी

नारायण दास बताते हैं कि इनका जन्म अंत्योदय परिवार में हुआ। मां दत्तवन और पतल बेचकर गुजारा करती थी, पिताजी मजदूर थे और ज्यादातर पूरे परिवार का जीवन यापन पतल और दोनों के बेचने से जो कमाई होती थी उसी से होता था। एक वाक्या को सुनाते हुए नारायण दास भावुक हो जाते हैं। शादी के बाद जब इनकी पत्नी ने कहा कि मुझे एक साबुन ला दीजिए और उस वक्त उसकी कीमत एक या दो रुपए हुआ करती थी। लेकिन पॉकेट में इतना पैसा नहीं था कि वह साबुन लाकर अपनी पत्नी को दें। तब इन्होंने अपने पिताजी से पैसे की मांग की। इतने कम पैसे खुद के पास नहीं होने का मलाल भी इन्हें था और पत्नी की मांग को पूरा करने की मजबूरी। नारायण दास बताते हैं कि मजबूर मन से पिताजी से पैसे की बात कहकर कमरे में चले गये और उस समय उनकी आंखों में आंसू ही आंसू थे। उसके बाद पिताजा ने साबुन मंगवायी और अपनी बहू को दिये।



मुखर हो उठाते हैं विधानसभा में सवाल



नारायण दास बताते हैं कि विधानसभा में चाहे पक्ष हो या विषयक मेरे सवालों से कंती भी काफी प्रभावित होते हैं। 2019 में गठबंधन की सरकार बनी, सरकार किसी की रहे सरकार में कोई पद मिले न मिले पर विधानसभा क्षेत्र की जनता के सवालों को ये जोट शोर से उठाते हैं। विधायक नारायण दास बताते हैं कि सत्ता पक्ष के कंती भी उनकी बातों को और सवालों पर चर्चा करते हैं। वो बताते हैं कि समाजस्ती, अपनत्व, सार्वजनिक जीवन, अपने आप को सुलभ बनाकर आज मैंने जनता का प्यार कमाया है। मैंने कंती भी अवसराव, जातिवाद या भाई भतीजावाद को बढ़ावा नहीं दिया। हमारी पार्टी के विचारक व दार्शनिक दीनदयाल उपाध्याय के मानवगत को मैं प्राथमिकता देता हूं। वहीं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिकोण साथ सबका विकास को आत्मसात करते हुए उनका अनुकरण करता हूं।



कई शहरों की खाक छानी, गार्ड मी एहे रिक्षा चलाने का भी किया काम

नारायण दास के मुताबिक उन्होंने कई शहरों की खाक छानी, आर्थिक परेशानियों में मजबूर होकर पत्ती की चांदी के जंवर को 500 में बेच दिया और कुछ मित्र जो सूरत में काम करते थे, उनके पास चले गये. सूरत में एक कंपनी में 1200 रुपए प्रतिमाह वेतन पर गार्ड का काम शुरू किया. जब वहां का काम इनके रास नहीं आया तो फिर दिल्ली का रुख किया, जहां इनके दो मित्र रिक्षा चला कर अपना जीवन यापन करते थे. नारायण दास बताते हैं कि गर्व है ऐसे मित्रों पर कि काम नहीं होने पर भी दो महीने तक खाने की तकलीफ नहीं होने दी. मित्रों का शुक्रगुजार हूं डेढ़ महीने उनके पास रहे रिक्षा नहीं चलाने के बावजूद इनके मित्रों ने इनका पूरा देख भाल किया.

काम नहीं मिलने पर मित्रों ने रिक्षा चलाने की ही सलाह दी

और अजमेंटी गेट पर रिक्षा लेकर

पहुंच गये. शुरूआत की तो रिक्षा इधर उधर भागने लगा, जिस पर सवारी ने खरी खोटी भी सुनायी. लेकिन नारायण दास बताते हैं कि हार नहीं मानी. और रिक्षा चलाना जारी रखा. डेढ़ महीने तक रिक्षा ही उनकी धर रहा. उसी पर आराम करना और सोना सब कुछ. फिर दिल्ली में ही लक्ष्मी नगर के शकरपुर के गोण मार्केट में एक निर्माणाधीन मकान में गार्ड का काम किया. फिर वापस देवघर लौटे यहां भी परिवार चलाने के लिए मिट्टी काटने तक का काम किया. बताते हैं कि अभी भी यहां के रजिस्टर में इनका नाम दर्ज है. संघर्ष के पुराने दिनों को याद



कर नारायण दास कहते हैं कि मेरा अतीत मेरी ताकत है. जीवन में संघर्ष किया जस्तर पड़ी तो दिल्ली, सूरत, मुंबई जाकर कमाना तय किया. इन शहरों में भी अपने लागों व दूसरे के साथ रहकर गरीबों के दर्द को जाना. दुख और दद्द को जीवन में काफी झेला इसलिए आज भी किसी का दुख देखकर रुक जाता हूं उनकी बातें सुनना और उनके दुखों को बांटने की कोशिश करता हूं.

**शहर के विकास को लेकर है
इनके पास कई योजनाएं**

विधानसभा क्षेत्र में विकास मॉडल की चर्चा करते हुए नारायण दास कहते हैं कि हमारे विधानसभा क्षेत्र में पर्यटन से रोजगार और राजस्व की असीम संभावनाएं हैं. आजादी की लड़ाई के दिनों का यादगार स्थल इडिगरिया पहाड़ जहां हमारे स्वतंत्रता सेनानी अक्सर बम का परीक्षण किया करते थे, उसे राष्ट्रीय उद्यान में तबदील करना मेरा सपना है, साथ ही अंडमान निकोबार की तर्ज पर देवघर में स्थित पहाड़, पर्वत, झरने और जंगलों को एक खूबसूरत टूरिस्ट डेस्टिनेशन के रूप में विकसित करने की योजना है. नारायण दास बताते हैं कि बाबा की धरती में एक से बढ़कर एक बेहतरीन पर्यटन क्षेत्र है. धार्मिक से लेकर प्राकृतिक खूबसूरती वाले देवघर में असीम संभावनाएं हैं. एमस आ गया, हवाई अड्डा बन गया. इससे देवघर के लोगों के व्यवसाय को नई ऊँचाई मिलेगी. अगर सरकार जमीन देने में मेरी मदद करें, तो मेरा सपना है कि इबाबा बैद्यनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के नाम से एक संस्कृत का विश्वविद्यालय यहां पर स्थापित किया जाए. क्योंकि शिक्षा के प्रति मेरी सजगता शुरू से रही है. मैं लगातार विद्यालय और विश्वविद्यालय से संपर्क में रहा हूं. पानी के संकट से निपटारे को लेकर कई प्लान हैं, जो बाबा बैद्यनाथ की कृपा हुई तो जल्द ही धारातल पर दिखेगा. देवघर के शहरी क्षेत्रों में कुछ स्थानों को चिह्नित किया हूं. जिसे इंदिल्ली हाट की तर्ज पर डेवलपमेंट हो. कई नये रोजगार का सृजन करवाना चाहूंगा. इसके लिए मैं सरकार से बात भी कर रहा हूं.

अंत में विधायक नारायण दास कहते हैं कि इस नये भारत में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के योजनाओं के साथ समरसता, संभावना और एक साथ मिलकर हम बहुत कुछ कर सकते हैं और बहुत कुछ सकारात्मक कार्य जनता की हित में करेंगे.

महापंडित ठाकुर टीकाराम

18वीं सदी में वैद्यनाथ मंदिर के प्रधान पुरोहित



रखंड के देवघर में अवस्थित बारह ज्योतिलिंगों में 16वीं शताब्दी से मठ प्रधानों की परंपरा होने की जानकारी अभिलेखों के आधार पर मिलती है। इसकी चर्चा इतिहासकार राखालदास बनर्जी ने भी की

है। 16वीं सदी में इस बाबा वैद्यनाथ मंदिर के एक मठ-प्रधान हुए ठाकुर टीकाराम ओझा। तब इस पद के लिए 'मठ-प्रधान' या 'सरदार पंडा' जैसे नाम नहीं थे। उस समय इस पद का नाम था 'मठ उच्चर्वे'। इसका मतलब होता है - मठ का सर्वोच्च व्यक्ति। मठ उच्चर्वे की जानकारी वहाँ के मंदिरों में गुप्तित शिलालेखों से प्राप्त होती है।

वैद्यनाथ मंदिर में इस पौरोहित्य परंपरा से पहले नाथ पंथियों का अधिकार था जिसे चंदेलवंशी राजपूत गिर्द्धार ने मिथिलाधीश ओइनवार वंश के राजाओं की सहायता से कमज़ोर कर दिया।

16वीं सदी के उत्तरार्ध में बंगाल का शासन अकबर के हाथ में रहा। इस समय कछवाहा कुल के राजा मान सिंह का नियंत्रण इस इलाके में रहा। 1587 इस्वी के लगभग अकबर ने इन्हें रोहतास की जागीर दी। वे 1607 तक इस इलाके से जुड़े रहे।

मान सिंह ने इस काल में भागलपुर के अति प्राचीन बूद्धानाथ मंदिर के समीप 'मान मंदिर' बनवाया जो आज

भी उपस्थित है। यहाँ पास में उनका घुड़साल (अस्तबल) भी है जिस पर अब भूमारियाओं की नजर लग गई है।

इस इलाके में मान सिंह द्वारा निर्मित कई संरचनाएं मिलती हैं जिनमें 'राजमहल का किला' भी है।

अपनी उड़ीसा यात्रा क्रम में वे सन 1590 में देवघर से होकर गुजरे। यहाँ उहोंने बाबा वैद्यनाथ का दर्शन किया। इस स्थान पर उन्हें जल की कमी खल गई। शिवगंगा के छोटे स्वरूप के कारण श्रद्धालुओं को हो रहे कष्ट को देखते हुए इसके पश्चिम स्थित एक छोटे तालाब को बड़ा कर उसके दोषकालीन किनारे को बलुआ पथर (सैंडस्टोन) से मढ़वा दिया। तदुपरांत यह घाट बहुत सुंदर हो गया था। यह घाट इस मंदिर के समीप था। वहाँ से वे उड़ीसा चले गए। मानसिंह की उदारता के कारण इस सरोवर का नाम 'मानसिंही' दे दिया गया। इसकी चर्चा 'संताल परगना गजेटियर' और 'मान चरितावली' में भी है।

इस समय बंगाल सूबे के देवघर का प्रक्षेत्र गिर्द्धार के अधीन था। गिर्द्धार से मिथिला का संबंध मध्य था। मान सिंह के पंडित भी मिथिला के थे। वहाँ के पंडितों की चर्चा आदिकाल से दूर-दूर तक थी। बंगाल की शाक्त परंपरा के प्रणेता भी मिथिला से ही थे। आज बंगाल को 'शाक्त परंपरा' का शोर्पा माना जाता है। राजा मान सिंह के समय मिथिलाधीश से अनुनय-विनय के पश्चात यहाँ पंडितों की नियुक्ति पुनः हुई।

उदय शंकर, लेखक वरिष्ठ प्रकार है और इतिहास के शोधकर्ता हैं

बाबा वैद्यनाथ की नगरी वैद्यनाथ धाम को उन दिनों 'देवघर' का नाम नहीं मिला था। वे 'वैद्यनाथ' नाम से ही ख्यात थे। मिथिला के लोगों की इन पर अपार श्रद्धा थी। पुरालेखों से यह जानकारी भी प्राप्त होती है कि बाबा वैद्यनाथ से संतान मांगने मिथिला के लोग 14वीं-15वीं शताब्दी से पहले भी आते थे। महाकवि विद्यापति की रचनाओं में बैजु/शिव का होना भी बाबा वैद्यनाथ के प्रति उनकी निष्ठा का निरूपित करता है।

मिथिला के ओइनवार वंश के शासकों से जब गिर्हार नरेश ने योग्य पर्डितों की मांग की तब उन्होंने नरौल ग्राम के गढ़ बेलऊंच मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मणों को वैद्यनाथ की पूजा शास्त्रीय ढंग से करने हेतु भेजा। इस समय नाथ पर्थियों से इनका बहुत विवाद हुआ था। नाथ अस्त्र-शस्त्र चलाने में बहुत प्रवीण थे। इस्की 1770 के सन्यासी विद्रोह के समय भी वे बहुत उग्र थे किन्तु देवघर में तब सहअस्तित्व का इनका समझौता था।

सन 1596 में यहाँ के मठ के पर्डित थे रघुनाथ। कहा जाता है कि ये उसी भारद्वाज कुल से थे जिन्हें खण्डवला कुल के मिथिलाधीश महामहोपाध्याय महेश ठाकुर ने यहाँ भेजा था।

सन 1744 में खण्डवला नरेश नरेंद्र सिंह का वैद्यनाथ आगमन हुआ। वे अपने साथ अपने मुख्य पुरोहित को लेकर आए थे। क्योंकि मनचाहे शास्त्रोक्त ढंग से यहाँ पूजा करनेवाले पर्डितों का अभाव था। निर्धनता अधिक थी और आपसी संघर्ष भी। महाराजा नरेंद्र स्वयं काली और शारदा के साधक थे। वे युद्धकला में भी प्रवीण थे। इन्होंने 4 युद्ध लड़े। सभी में विजयी रहे। ये उत्कृष्ट दानी भी थे।

वैद्यनाथ से इनकी वापसी के समय गिर्हार नरेश ने वैद्यनाथ की पूजा-अर्चना हेतु एक योग्य पर्डित देने का अनुरोध किया।

अपने राजपर्डित प्राणनाथ के पुत्र टीकाराम को उन्होंने यहाँ के मुख्य पुरोहित के लिए गिर्हार राजा को सुझाव दिया।

विदित हो कि ओइन वंश के आरंभ से ही दिगउन्ध मूल के शाडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण ठाकुर कामेश्वर राजपर्डित हुए थे जिनके वंश से प्राणनाथ थ।

सन 1745 में ठाकुर टीकाराम जी को आदर सहित लाकर मुख्य पुरोहित का पद सौंप दिया। इस समय तक इस मंदिर परिसर में कुल 5 मंदिर थे। छठे मंदिर के रूप में गणेश मठ का निर्माण सन 1762 में पूरा हुआ जिसकी प्रशस्ति में ठाकुर टीकाराम का नाम उल्कीण है।

वैद्यनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना हेतु मैथिल पर्डितों की यह नियुक्ति पहले भी कई बार हुई थी। लेकिन कुछ असुरक्षा की भावना से भाग खड़े हुए थे तो कुछ डटे तो रहे किन्तु आपस की कलह में ही उलझकर अपनी आध्यात्मिक शक्ति से क्षीण हो गए।

सन 1745 में दीर्घर संदहपुर मूल के शाडिल्य गोत्रीय श्रेत्रिय ब्राह्मण ठाकुर टीकाराम जी को विधिवत वैद्यनाथ मंदिर का मुख्य पुरोहित बना दिया गया।

उधर, मिथिला (तिरहुत) पड़ोसी राजाओं से लड़ाइयों में उलझा था। न्याय और दर्शन के लिए ख्यात यह क्षेत्र अब अशांत हो गया था। किन्तु मिथिलाधीश नरेंद्र के शौर्य की पताका भौआरा की वीथियों पर लहरा रही थी। खण्डवला वंश के खण्ड (तलवार का एक प्रकार) पर मिथिला के जनों का बहुत विश्वास था।

यह मुगल काल था और मुगलों के आधिपत्य को अफगानों से चुनौती मिल रही थी।

ठाकुर टीकाराम जी को आरंभ में वैद्यनाथ मंदिर में बहुत विस्मय का सामना करना पड़ा कि बाबा बैजु के दरबार में प्रथम पूज्य देव गणेश तो स्थापित ही नहीं हैं। बिना इनके किसी देवी-देवता की पूजा कैसे संभव है? इसी समय इन्होंने महाराजा नरेंद्र से वित्तीय सहायता प्राप्त कर मंदिर निर्माण आरंभ कराया। विस्मय का अन्य कारण था कि आपस में ही गदी के लिए संघर्ष करना अपने धर्म को व्यर्थ करने के बराबर है। इतनी ऊर्जा अगर लोक कल्याण हेतु व्यय

ERS :

१। सिद्धि(द्विः)। श्रीगणेशा (श) य नमः ॥

२। वेदवसुरसेन्दमिश्शके सङ्गतेऽव्दे

३। सते शुद्धे । दीकारामद्विजेन्द्रेण व्यधा-

४। यि मठसुन्दरं ॥ त्रु(त्रु) तिवसुरसच-

५। न्द्रैः सङ्गवेऽव्दे विशुद्धे द्विजवरमणि-

६। दीकारामनान्ना सुधान्ना । विशुरिव

७। मठ उच्चैर्वेव्वैद्वुतासः (भः) छत्रायं व्वरसुत-

८। गद्वासः सर्वदैवं प्रचक्रो ।

गणेश मंदिर का शिलालेख



करें तो सामाजिक उन्नति का संवाहक बना जा सकता है।

कुछ समय बाद मंदिर का निर्माण कार्य अपने पूर्ववर्ती मठ प्रधान जय नारायण ओझा को सौंपकर वे मिथिला चले गए। इस बीच जय नारायण ने अपने भतीजे यदुनंदन को यह पद सौंप दिया।

चौंक जय नारायण के ज्येष्ठ पुत्र नारायण दत्त इस पद पर आसीन हो सकते थे किन्तु वे नाबालिंग थे, अतः अयोग्य थे। इसलिए आनन्-फानन में भतीजे की नियुक्ति कर दी गई।

महाराज दरभंगा के कोप से बचने हेतु इस नियुक्ति को प्रचारित नहीं किया गया किन्तु गिर्हार महाराज के कुछ अधिलेखीय साक्ष्यों में यदुनंदन ओझा का नाम मिलता है जिसके आधार पर इतिहासविज्ञों ने उन्हें 'कार्यकारी' होने का संदेह व्यक्त किया है।

मिथिला के सोदरपुर ग्राम निवासी टीकाराम वापस भौआरा के राजभवन चले गए और कुछ-कुछ अंतराल पर मंदिर निर्माण हेतु प्राप्त वित्तीय सहायता लेकर आते-जाते रहे।

सन 1753 में महाराजा नरेंद्र ने कंदर्पी घाट की लड़ाई लड़ी। इस समय पर्डित टीकाराम 'श्रीगणेश प्रशस्ति' रच

चुके थे। वे एक अन्य शास्त्र 'श्रीवैद्यनाथ पूजा-पद्धति' की रचना कर रहे थे।

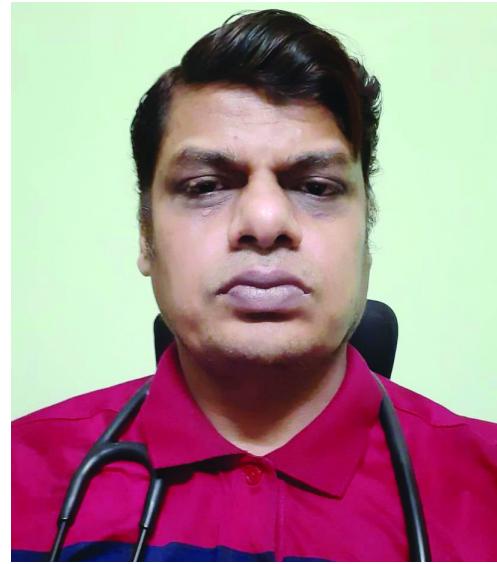
कंदर्पी घाट की लड़ाई से इनका मन बहुत आहत हुआ। मन वैराग्य को आकर्षित हुआ। पिता महामहोपाध्याय प्राणनाथ भी हिंसा से विरक्त हो अज्ञात यात्रा पर महाराज की अनुमति ले निकल पड़े। चर्चा मिलती है कि वे काशी चले गए। उनके द्वारा रचित कई ग्रंथों में एक 'चक्रव्यूह' की पांडुलिपि नागरी प्रचारिणी के कोष में सुरक्षित है।

शास्त्रों में रमे कोमल मन के स्वामी और ज्योतिष शास्त्र के प्रकांड विद्वान श्री टीकाराम वापस भगवान शिव की शरण में वैद्यनाथ धाम चले आए।

यहाँ उन्होंने पाया कि पूर्व मठ-उच्चैर्वेव्व (मठप्रधान) ने जिसे कार्यभार दिया उसने अपने बेटे देवकीनंदन को यह पद सौंप दिया। देवकीनंदन स्वभाव से बहुत उग्र थे।

अपने चरों भाई नारायण दत्त पर उन्होंने जैसे अन्याय किये उसकी चर्चा संस्कृत के महान पर्डित व भगवती काली के विलक्षण साधक कमलादत्त (द्वारी) की डायरी में मिलती है। ये वही कमलादत्त हैं जिन्होंने वैद्यनाथ मंदिर के सिंहद्वार पर उक्त शिलालेख को रचना बनैली नरेश की प्रशस्ति में किये।

चिकित्सक के सुझाव



डॉ० एस. पी. सिंह

एम.बी.बी.एस एफ.एम.जी डॉ एम.डी (मेडिसीन)
सीएमसी वेल्लोर व अपोलो हॉस्पीटल चेन्नई में पूर्व संबंध
गोल्ड मेडलिस्ट Reg. No. BCMR- 43282
हट्टा, पेट, दम्मा, सिर व मधुमेह रोग विशेषज्ञ
बाजला हाइस के सामने देखें

गर्भी ने दस्तक दे दी है. तापमान में बढ़ोतारी लगातार दर्ज की जा रही है. मार्च महीने से ही तापमान में बढ़ने के संकेत मिलने लगे थे. ऐसे में खुद को बचाना बहुत जल्दी है. विशेषज्ञ मानते हैं कि तपती धूप में निकलना खतरे से खाली नहीं है. तेज धूप आपको कई तरह से नुकसान पहुंचा सकती है. मसलन हीट क्रैम्स की चपेट में आने से बॉडी की मसल्स में ऐठन और टट होता है. बहुत ज्यादा थकान महसूस हो सकती है और डिहाइड्रेशन होता है. इन सब से बचने के लिए हमें सीधे सूर्य के एक्स्पोजर से बचना होगा और शरीर को ढक कर चलना चाहिए. छाते का इस्तेमाल करना चाहिए और इसके अलावा ज्यादा से ज्यादा तरल पदार्थ का सेवन करना चाहिए. सफेद रंग का कपड़ा पहनना सबसे आरामदेह होगा, अगर इन गतों पर ध्यान रखें तो गर्भी में होने वाली समस्याओं से बचा जा सकता है.

**गर्भी में होने
वाली परेशानियों
से बचाव को
लेकर डॉक्टर
एस पी सिंह से
हुई बातचीत और
उनके सुझाव**

—

यदा समय तक धूप में रहने या आउटडोर गतिविधियां करने से शरीर में पानी की कमी हो जाती है और मांसपेशियां में ऐठन होने लगती हैं. हालांकि उचित मात्रा में पानी या तरल का सेवन करने से यह समस्या ठीक हो जाती है. पानी में नमक मिलाकर या नारियल पानी या इलेक्ट्रोलाइट से युक्त किसी अन्य डिंक का सेवन करें. इससे आपको ऐठन में आराम मिलेगा. इसके अलावा लस्सी, नींबू पानी, शिकंजी भी बहुत अच्छे विकल्प हैं, इनके सेवन से डीहाइड्रेशन को दूर किया जा सकता है. इस मौसम में एल्कोहल, चाय या काफी का सेवन ज्यादा मात्रा में न करें. मौसमी सब्जियों और फल का ज्यादा से ज्यादा सेवन करें. हो

सके तो जिनमें पानी की मात्रा ज्यादा हो उनका अधिक सेवन करें. फ्रीज का पानी हो सके तो न ही पीयें, उसकी जगह मिट्टी के बरतन में रखे पानी का उत्थोग करें. जंक फूड से गर्भियों में तौबा कर लें. गर्भी के कारण थकान, सिर में दर्द या चक्कर आना जैसे लक्षण भी महसूस कर सकते हैं. ऐसे लक्षण होने पर घर में रहें, इलेक्ट्रोलाइट युक्त पेय का सेवन भरपूर मात्रा में करें. अगर आपको घर से बाहर जाना हो तो विशेष सावधानियां बरतें, जैसे हल्के रंग के, ढीले कपड़े पहनें. इस मौसम में शरीर को ढकने वाले कॉटन के कपड़ों का इस्तेमाल करें. आंखों की सुरक्षा के लिए चश्मा जरूर पहनें. इसके अलावा बाहर जाने से पहले त्वचा के खुले हिस्सों पर सनस्कीन लगायें. अगर ज्यादा देर तक बाहर रहना पड़े तो बीच में छाया में बैठ कर आराम करें, या किसी ऐसे कमरे में बैठें जहां अच्छा वेंटिलेशन हो.

वहीं इन सबकों बीच ध्यान रखें कि कोरोना को लेकर भी सावधानी बरतनी हैं। खान-पान पर विशेष ध्यान रखना है। वहीं डॉक्टरों से कुछ समय अंतराल पर चेक अप करते रहें। डॉक्टरों की सलाह से विद्यमान सी, डी व जिंक वाली चीजों का सेवन करें।

गर्भियों में पानी कितना जरूरी



शोधकरताओं का कहना है कि शरीर की जरूरतों के आधार पर महिलाओं को 6-8 कप (1.5-2.1 लीटर) और पुरुषों के लिए 8-12 कप (2-3 लीटर) के दैनिक तरल पदार्थ का सेवन करना चाहिए। हर किसी को रोजाना पर्याप्त मात्रा में पानी पीना चाहिए, साथ ही उन चीजों का ज्यादा सेवन करना चाहिए जिनमें पानी की भरपूर मात्रा हो।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैल्थ ड्राग किए गए एक शोध में बताया गया है कि कैसे शरीर मैं पानी की कमी का होना हार्ट अटैक सहित अन्य खतरे को बढ़ाता है। साथ ही शोध से पता चलता है कि शरीर में तरल पदार्थ की कमी आपके दिल के कामकाज को प्रभावित करती है।

गर्भियों में रोगियों की बढ़ती सख्त्या एक बड़ी समस्या

गर्भियों के दिनों में होने वाली बीमारियों के रोगियों की संख्या भी एक बड़ी समस्या है। सरकारी अस्पतालों के डॉक्टरों के मुताबिक इनमें सबसे ज्यादा रोगी डायरिया, पीलिया, उल्टी-दस्त के होते हैं। चिकित्सकों का मानना है गर्भियों में लापरवाही से रोगी की जान भी जा सकती है। शरीर में पानी की कमी न होने दे।

सॉफ्ट ड्रिंक फायदा कम नुकसान ज्यादा

गर्भियों में ज्यादातर लोग सॉफ्ट ड्रिंक या कोल्ड ड्रिंक पीना पसंद करते हैं। हालांकि, इसे पीने से आप कुछ समय के लिए ताजगी महसूस करते हैं लेकिन लंबे समय के लिए यह आपके शरीर को नुकसान पहुंचते हैं। तापमान बढ़ने के साथ लोगों में ठंडे ड्रिंक्स को ही ज्यादा तरजीह देते हैं। हालांकि कोल्ड ड्रिंक्स, हाई काबोनेटेड ड्रिंक्स में शुगर और कैलोरीज की मात्रा ज्यादा होती है। गर्भियों में घ्यास लगने पर इनका ज्यादा सेवन करना आपके लिए नुकसान दायक है।

गर्भ में लू लगना या हीट स्ट्रोक है खतरनाक

गर्भ में लू लगने पर व्यक्ति बेहोश जो सकता है, उसके शरीर का तापमान 103 डिग्री फारेनहाइट या इससे भी अधिक हो सकता है। ऐंटन या थकान के बजाए, इसमें त्वचा ठंडी पड़ जाती है, शरीर का तापमान बढ़ जाता है, व्यक्ति बुखार महसूस करता है। ऐसा शरीर की थमोस्टेटिक प्रक्रिया असफल होने के कारण होता है, जो शरीर को ठंडा करती है, इसलिए तापमान बढ़ने लगता है। यह स्थिति जानलेवा तक ही सकती है। अगर तापमान 103 डिग्री या इससे ज्यादा हो जाये। और व्यक्ति बेहोश हो रहा हो तो उसे तुरंत अस्पताल लेकर जाय।



समाधान

- ▶ बीमारियां बढ़ने पर इलाज के लिए मरीज को कोल्ड सलाइन दी जाती है, ताकि शरीर को जरूरी इलेक्ट्रोलाइट्स मिल जाए।
- ▶ लू लगना जानलेवा हो सकता है। इसलिए जरूरी है कि जल्द से जल्द इसके लक्षणों का पहचान कर इलाज करें।
- ▶ कुछ बीमारियों में रोकथाम को उपचार से बेहतर माना जाता है, इसलिए बेहतर होगा कि इस
- ▶ जौसून में धूप में बाहर न जाए।
- ▶ खासतौर पर दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक घर में ही रहें, जब धूप बहुत तेज होती है।
- ▶ अगर आपको बाहर जाना पड़े तो जरूरी सावधानियां बरतें, उचित मात्रा में पानी एवं तरल पदार्थों का सेवन करते रहें।
- ▶ इलेक्ट्रोलाइट्स से युक्त पदार्थों जैसे नारियल, तरबूज, खरबूजा, छीया आदि का सेवन करें।

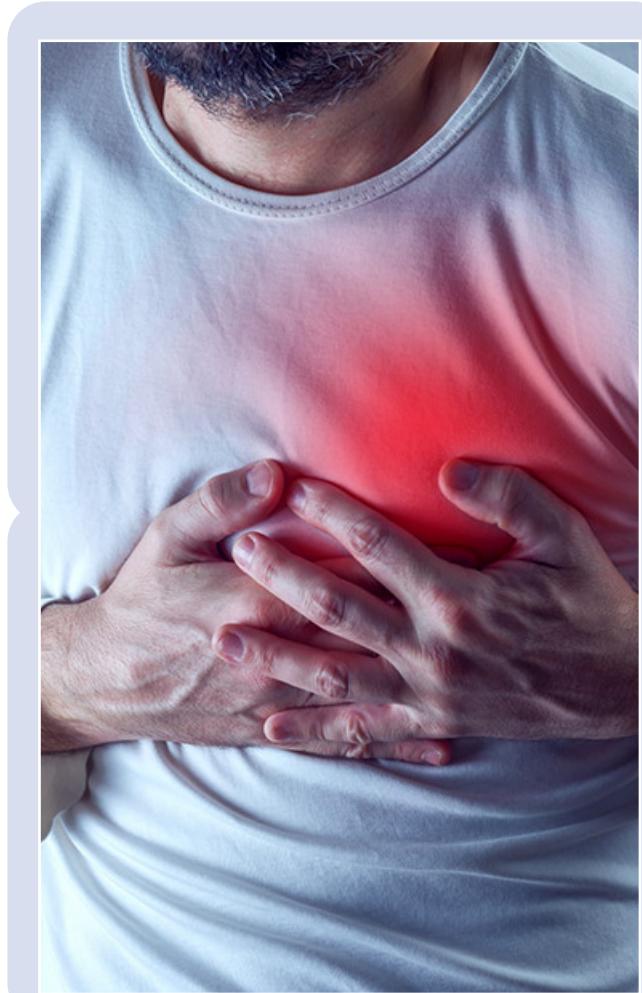


गर्भी के नौसम में प्यास लगने के बावजूद सॉफ्ट ड्रिंक्स से बचें

डायबिटीज के मरीजों को कोल्ड ड्रिंक्स पीने से खासतौर पर बचना चाहिए। क्योंकि इसमें शुगर की मात्रा ज्यादा होती है। वहीं लोगों में धारणा है कि कोल्ड ड्रिंक्स एसिडिटी कम करता है, जबकि उल्टा ये एसिडिटी को बढ़ा सकता है। इसके अलावा जिन लोगों को लगातार पेट में दर्द, अल्स और अन्य प्रकार की पेट की समस्याएं होती हैं। उन्हें कोल्ड ड्रिंक्स या सॉफ्ट ड्रिंक पीने से बचना चाहिए। हाई बीपी की शिकायत वाले को भी कोल्ड ड्रिंक के सेवन से बचना चाहिए, दिल के मरीजों को भी बचना चाहिए, क्योंकि कोल्ड ड्रिंक कोलेस्ट्रोल बढ़ाने का काम करता है और ब्लड सकुलेशन को प्रभावित करता है। गर्भियों में तुंत घास बुझाने की चाहत में सॉफ्ट ड्रिंक का प्रयोग जहां लिवर को नुकसान पहुंचाता है वहीं कई तरह की नई बीमारियों को जन्म देता है।



गर्भी में बीमारियों के लक्षण व बचाव



1. डायरिया / हीट स्ट्रोक

लक्षण : चक्कर आना, पेट खराब हो जाना, बेहोशी आना, शरीर का तापमान बढ़ना.

बचाव : भरपूर पानी पीयें। ओआरएस का इस्तेमाल करें। तला-भुना, गरिष्ठ और बासी भोजन करने से परहेज करें व फलों का सेवन अधिक करें।

2. हाइपर एसिडिटी

लक्षण : दस्त आना, जी मिचलाना, उल्टियां आना, पेट में जलन होना, खट्टी डकाँे आना।

बचाव : चाय, कॉफी और अल्कोहल के सेवन से बचें। नींबू पानी, ठंडा दूध, दही

का सेवन करें।

3. टाइफाइड

लक्षण : तेज बुखार आना। शाम होते-होते बुखार बढ़ना। अत्यधिक कमज़ोरी महसूस होना और भूख न लगना।

बचाव : बासी और गरिष्ठ भोजन से परहेज करें। पानी को उबालकर पीयें।

4. मलेरिया

लक्षण : ठंड के साथ बुखार आना। खाने की इच्छा न होना। हाथ-पैरों में दर्द होना।

बचाव : मच्छरदानी, स्प्रे का प्रयोग करें। घर के अंदर और बाहर पानी न भरने दें। कूलर का पानी बदलते रहें।



दुनिया के मूर्खों एक हो..

ये दौर मूर्खता के भूमंडलीकरण का है

3A

ज 1 मई नहीं बल्कि 1 अप्रैल है, मजदूर दिवस नहीं, मूर्ख दिवस। ना जाने ये

नारा कब से चलता आया है---

दुनिया के मजदूरों एक हो। मजदूर

कभी एक नहीं हुए। दूसरी तरफ दुनिया के मूर्खों एक हो' का नारा कभी नहीं लगा। लेकिन मूर्ख इस तरह एक हुए कि देखते-देखते पूरी दुनिया उन्हीं की हो गई। एक समय था, जब विश्व के अलग-अलग कोनों में मूर्खता की कलकल करती छोटी-छोटी धाराएं बहती थीं। हर कुदरती चीज की तरह मूर्खता की ये धाराएं भी नायाब मानी जाती थीं। लोग इन मूर्ख धाराओं के आजू-बाजू खड़े होकर कहकहे लगाते थे और तरोजाजा होकर अपने काम पर लौट आते थे। लेकिन कुदरत ने करवट ली और मूर्ख धाराएं अचानक नियामा फॉल की तरह प्रचंड हो गई। इन उफनती धाराओं ने दुनिया के एक बड़े हिस्से को ढंक लिया। कहना गलत नहीं होगा कि मूर्ख धारा ही आज इस संसार की मुख्य धारा है। अगर आप इस धारा का हिस्सा बने तो ठीक, नहीं बने तब भी ये आपको अपने साथ बहा ले जाएंगी।

गर्व से कहो हम मूर्ख हैं

अपने आसपास मूर्खों की मौजूदगी का सबसे बड़ा फायदा ये है कि खुद के समझदार होने का भ्रम बना रहता है। एक अक्षतामंद कभी दूसरे को खुद से बड़ा अक्षलमंद नहीं मानता। लेकिन मूर्खों में ये दरियादिली होती है। वे हमेशा सामने वाले को खुद से बड़ा मूर्ख मानते हैं। मूर्खता के महासाम्राज्य की स्थापना का असली आधार यही उदारता है। एक समय था, जब मूर्खता एक तरह की गाली हुआ करती थी। अब बुद्धिजीवी गाली है। गाली नहीं बल्कि महागाली है। अगर आपको अब भी शक है कि तख्तापलट हो चुका है, तो आप सचमुच.. खेर छोड़िये। वैसे एक बात याद दिला दूँ। राजनीति ही नहीं समाज में भी फायदा हमेशा बहुमत के साथ चलने वालों का होता है। इसलिए शर्म का लबादा उतार फेंकिये और नारा बुलांद कीजिये-- गर्व से कहो हम मूर्ख हैं। शुरू में थाड़ी दिक्कत होगी। लेकिन जब एक बाहर मूर्खधारा की मुख्यधारा में तैरना सीख जाएगे तो आनंद बहुत आएगा। कहने में कोई संकोच नहीं है कि ये एक आजमाया हुआ नुस्खा है, बाकी मानना ना मानना आपकी मर्जी।

मूर्खता मानवता की सबसे बड़ी धरोहर

दुनिया की कोई भी विचारधारा हो, उसके अनुयायियों की कथनी और करनी में बहुत फर्क पाया जाता है। लेकिन मूर्खता के साथ ऐसा नहीं है, क्योंकि यह महज एक विचारधारा नहीं संपूर्ण जीवन दर्शन है। मूर्खता मानवता की सबसे बड़ी धरोहर है और हर हाल में इसकी रक्षा होनी चाहिए। दुनिया भर के मूर्खों में इस बात को लेकर एक तरह का अघोषित समझौता होता है।



राकेश कार्यश्य, वरिष्ठ पत्रकार

लेट्स मेक अमेरिका फूल अगेन

अमेरिका के नये राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने नारा बुलांद किया-- लेट्स मेक अमेरिका ग्रेट अगेन। दुनिया के कई इलाकों और अमेरिका में भी बहुत से लोगों ने ग्रेट की जगह फूल सुना। वैसे महानता का मूर्खता के साथ बहुत दिलचस्प दिशा है। महानता एक खूबसूरत एहसास है, जो आमतौर पर दुनिया के सबसे बड़े मूर्खों को होता है और मूर्खता वो एहसास है, जो मूर्ख को कभी नहीं होता, लेकिन उसे झेलने वाले आदमी को हमेशा होता है। अमेरिका की महानता की नींव खोदी जा रही है। मेविसको और अमेरिका के बीच जो दीवार खिंचेगी वो महानता की निशानी होगी या मूर्खता की ये अभी तय नहीं है और शायद कभी तय नहीं हो पाएगा। वैसे अपनी कौम को महान बनाने वाले ट्रंप अकेले नेता नहीं हैं।



यही वजह है कि चुनाव अमेरिकी राष्ट्रपति का होता है और जीत के लिए यह भारत में किये जाते हैं।

ट्रंप राष्ट्रपति बने तो कई लोगों ने मनौती पूरी होने की खुशी में नारियल फोड़े। उधर जोश में आये ट्रंप समर्थकों ने कई भारतीयों के सिर फोड़े और कुछ को जान से मार डाला। लेकिन भारतीय मूर्खों ने दिल पर पथर रख लिया और मुंह से एक शब्द भी नहीं कहा, क्योंकि उन्हें पता है कि कुछ लोगों की जिंदगी से बड़ी विचारधारा है।

इंडियट एस्टेट

ऑफ मिडिल ईस्ट

मिडिल ईस्ट की मूर्खता अब विकराल रूप ले चुकी है। चेहरा पर नकाब चढ़ाये इंकलाबी मध्य-पूर्व ही नहीं पूरी दुनिया को फिर से वहीं ले जाने की तैयारी कर रहे हैं, जहाँ आज से एक हजार या बारह सौ साल पहले थी।

आइसिस इस्लामिक एस्टेट नहीं बल्कि इंडियट स्टेट है।

झाक और सीरिया में मूर्खता की महागाथा इस तरह लिखी जा रही है कि बाकी दुनिया के तमाम मूर्ख चाहकर भी उस स्तर को छू नहीं सकते। हाल ही में गलती से मेरी नजर एक वीडियो पर पड़ गई। एक जेहादी मोबाइल पर जोशीली तकरीर रिकॉर्ड कर रहा था। लेकिन इससे पहले कि सेलफी खत्म हो, सेल्फ गोल हो गया। मोबाइल में जबरदस्त धमाका हुआ। जेहादी को जन्त में 72 हूरे मिलेंगी या नहीं इसका फैसला तो क्यामत के दिन ही होगा। लेकिन 72 हूरों की आस लिये दुनिया के ना जाने कितने नीजावान चोरी-छिपे मिडिल-ईस्ट पहुंच रहे हैं, आइसिस का हिस्सा बने। सचमुच मूर्खता कभी हदों और सरहदों में नहीं बंधती। ये लेख 2017 में राकेश जी ने लिखा था जो आज भी प्रासारिक है ...

मूर्खता से धरती को कौन बचाएगा?

ये दौर दुनिया भर में मूर्खता के सशक्तिकरण का है। आपने सूडो सेक्यूलर, सूडो लेपिटस्ट, सूडो नेशलिस्ट ये सब तो खूब सुने होंगे, क्या कभी 'सूडो फूल' सुना है? मेरा दावा है, कभी नहीं सुना होगा, क्योंकि मूर्खता हमेशा खालिस होती है। चाहकर भी कोई इसमें मिलावट नहीं कर सकता। ज्ञान का प्रसार हुआ, सैकड़ों आविष्कार हुए। हजारों वैज्ञानिकों, लेखकों, चिंतकों और कवियों ने अलग-अलग समय इस धरती पर जन्म लिया। लेकिन ये सब मिलकर भी मूर्खता का कुछ नहीं बिगाड़ पाये। तरह-तरह की आपदाओं के बावजूद मूर्खता ने ना सिर्फ अपने आपको बचाये रखा बल्कि दुनिया की मुख्यधारा भी बन गई। एक पौराणिक आख्यान है। इस धरती को रसातल से निकालने के लिए भगवान विष्णु ने वराह अवतार लिया था। वराह यानी सूअर का रूप धरकर भगवान सागर के तल में गये और अपने थूथन पर पृथ्वी को उठा लाये। लेकिन वो समय कुछ और था। वो समुद्र भी प्राकृतिक था। मूर्खता का यह महासागर मानव-निर्मित है, कोई अवतार भला इसमें कहाँ तैर पाएगा?

पता है ?
 तुमने जो लगाया था
 मेहँटी का पेड़,
 उसके पते आज भी
 लाल कर देते हैं हथेली
 घर के पिछले दरवाजे की किवाड़
 जिससे नजर आता है अब भी,
 वो मेहँटी का पेड़
 उखड़ रहा है चौखट से..
 पीछे जो खेत है,
 उसकी जमीन भी हो
 गयी है उसर...
 होते ही नहीं अंकुरित
 लगे हुए मटर
 तुमने जो नीला कोट दिया था
 वो अभी भी बक्से में पड़ा है
 आई ही नहीं इत्ती सर्दी..

घनेरे छाये मेघ भी

बस... गढ़ गडा कर उड़ जाते हैं
 शायद उन्हें भी लगता है-
 क्यूं बरसे जिंदगी भर ? ...
 मेरे शब्द... उनको तो, क्या हो गया,
 कैसे बताऊँ ?
 हर बार रह जाते हैं, थरथरा कर
 बोल ही नहीं पाते कुछ
 सब कुछ तो बदल गया...
 पर पता नहीं क्यूं
 तुमने जो लगाया था
 मेहँटी का पेड़
 उसके पते आज भी
 लाल कर देते हैं हथेली
 आज भी... !!



मुकेश कुमार सिंहा

मुकेश कुमार सिंहा जी की कविताओं व कथिकाओं में साहित्य के साथ-साथ, गणित व भौतिकी विज्ञान के सिद्धांतों की महक साथ चलती है। आधुनिकता व पारंपरिक शैली दोनों को साथ लेकर लिखने में मुकेश जी का कोई जबाब नहीं है...

हम मित्र हैं
 हम सेफेंगे धूप साथ बैठ कर
 हम बिताएंगे घंटों
 बताएंगे अपनी कहानियां
 दर्द जो पति की मार का है
 सब साझा करेंगे
 बोझ जो बहन की व्याह का है
 उसे आधा करेंगे
 करेंगे काम साथ साथ
 जाएंगे घर को, जो होगी रात
 इंटि ढोते तो थकेंगे हाथ
 तब प्यास मेरी फूटी की बोतल के सुसुम जल
 से बुझा लेंगे
 जो दो सूखी सी रोटियाँ हैं
 मेरे डब्बे में उनमे से एक-एक खा लेंगे
 हम खोजते अपनी समस्याओं का हल जीवन
 साथ बिता लेंगे
 बस रहेगी एक लकीर
 सुनहरी सी, मुलायम सी
 जिसके दायरे में तुम भी रहना मैं भी रहूँगी
 हमारे अटूट बंधन को
 मैं मित्रता का नाम देती हूँ
 हम दोनों मित्र हैं, सच्चे मित्र
 जिसने ना हमारा धर्म आड़े आता है
 न हमारा लिंग
 हां बस साथ है एक शपथ
 साथ निभाते जाने की
 जो मैं भी निभाऊँगी, तुम भी
 हां हम हमेशा मित्र रहेंगे
 -फाख्ता
 सुरमई सरगम



जसिंता केरकेटृ



पेड़ जब गुजर रहा हो
 सारी रात प्रस्तुत पीड़ा से
 बताओ, कैसे डाल हिला दें जोर से?
 बोलो, कैसे तोड़ लें हम
 जबरन महुआ किसी पेड़ से?
 हम सिर्फ़ इंतजार करते हैं
 इसलिए कि उनसे प्यार करते हैं ।

जसिंता केरकेटृ

(क्यों महाए तोड़े नहीं जाते पेड़ से
 कविता अंश. संग्रह: ईर्ष्यर और बाजार)



फलम पा रवाफी?

मध्य प्रदेश के सीधी जिले से किसी ने एक तस्वीर भेजी है। कुछ अधनगे लोग थाने में बैठे हैं। बताया जा रहा है कि ये पत्रकार हैं।

ये पत्रकार हैं? इस हालत में?

मैं पत्रकार हूँ। मैं सोच में ढूब गया कि पत्रकारों ने कब और कैसे खुद को इस हालत में पहुंच जाने दिया? और क्यों?

बताया गया कि पत्रकारों ने किसी स्थानीय विधायक की कोई पोल खोलूँ खबर दिखलाई तो विधायक जो ने पत्रकारों के खिलाफ एफआईआर लिखवा दी। पुलिस ने सभी को पकड़ कर थाने में बंद कर दिया और कपड़ उतार कर।

बीती दिवाली की बात है। मैं मध्यप्रदेश में आईजी से अपनी शिकायत के सिलसिले में मिलने गया था। साथ में मेरी पत्नी भी थी।

मुझे एक एफआईआर के सिलसिले में उनसे मिलना पड़ा था क्योंकि थानेदार और एसपी सुन नहीं रहे थे। और आईजी से मिलने भी मैं सीधे वहां नहीं पहुंचा था। दिल्ली में अपने एक आईजी मित्र से, जो एमपैन कैडर के ही आईजीएस अधिकारी हैं, उनसे फोन करवाया था।

मैं आईजी के ऑफिस में गया। बगल में ही उनका बंगला था। आईजी ने मुझे दोपहर 12 बजे आने का समय दिया था। मैं ठीक 12 बजे पहुंचा। आईजी एक बजे ऑफिस पहुंचे। कुछ देर बाद मुझे कमरे में बुलाया गया।

उन्होंने पूछ क्या काम है?

'एक एफआईआर के सिलसिले में बात करनी है।'

'आईजी कार्यालय में एफआईआर लिखी जाती है।'

'थाने में सुनवाई नहीं होती। एसपी साहब सुनते नहीं।'



संजय सिंहा, वरिष्ठ पत्रकार

दिखलाना। इसमें बखिया उधेड़ने जैसी क्या बात है? पत्रकार किसी का सच तो दिखालाएँगे ही। आईजी ने कहा, 'सारे पत्रकार चोर होते हैं।'

'कैसे?'

'यहा पत्रकारों को कितनी सैलरी मिलती होगी? इतने सारे पत्रकार सारा दिन स्कूटी और मोटरसाइकिल पर घूमते हैं। कहां से आता है इनके पेट्रोल का खर्च?' हम स्तब्ध थे।

लग रहा था जैसे कोई हमें ही नंगा कर रहा है। मेरी पत्नी खुद दस साल दिल्ली में इंडियन एक्सप्रेस में पत्रकार रह चुकी है। मैं जनसत्ता, आजतक मैं इतने साल रहा, आज तक किसी ने मुझसे इस तरह बात नहीं की थी।

मैंने उनका प्रतिराध किया। 'सर, आप कुछ बष्ट पत्रकारों के चलते पूरी विरादरी को बदनाम नहीं कर सकते। आप ऐसा कैसे कह सकते हैं कि सारे पत्रकार चोर होते हैं। अच्छे बुरे लोग हर प्रोफेशन में होते हैं। आपकी पुलिस में भी बहुत से लोग रिश्वत लेते हैं। सिपाही और थानेदार की भी इतनी सैलरी नहीं होती कि बोझ्हा'

आईजी को उम्मीद नहीं थी कि मैं ऐसा कुछ बोलूँगा। मैंने उन्हें बताया कि मेरे मामा खुद मध्य प्रदेश कैडर के आईजीएस अधिकारी थे। मैं उन्होंके साथ रहा हूँ। मैंने देखा है कि एक ईमानदार अफसर को कितनी मुश्किलों से गुजरना पड़ता है। जैसे एक ईमानदार सरकारी अफसर के सामने मुश्किल आती है, वैसे ही किसी ईमानदार पत्रकार के सामने भी आती है। आप सभी को एक ही लाठी से कैसे हांक सकते हैं?

वैसे ये सच है कि मध्य प्रदेश में पत्रकारों ने अपनी हनक खो दी है। मैंने पहले भी आपको बताया है कि मैं पत्रकारिता की दुनिया में आया था टायर के चप्पल वाले एक पत्रकार से मिलने के बाद।



राजीव गांधी तब प्रधान मंत्री थे और भोपाल में मैंने एक प्रेस कांफ्रेंस में उस पत्रकार को राजीव गांधी से सवाल पूछते देखा था, तब मेरे मन में पहली बार इस पेशे के प्रति प्रेम पनपा था। हालांकि तब अर्जुन सिंह का जमाना था। वो पहले नेता थे जिन्होंने पत्रकारों को पैसे देकर गुलाम बनाना शुरू किया था। बाद में तो पत्रकार नमक का हक ही अदा करते रह गए और धीरे-धीरे उन्होंने अपना ये हाल बना लिया कि एक थानेदार ने उनका न सिर्फ चीरहरण किया, बल्कि उसकी तस्वीर भी साझा की।

मध्य प्रदेश में अर्जुन सिंह ने पत्रकारों को पेट जर्नलिस्ट बनाया था। अपने पक्ष में खबर प्लाट कराने का ये उनका अभिनव प्रयोग था। बाद में मुलायम सिंह यादव ने उत्तर प्रदेश में यही प्रयोग किया था।

अर्ध शिक्षित लोग पत्रकारिता की दुनिया में आने लगे थे। पत्रकारिता के नाम पर सरकारी रियायतें और सरकारी घर जैसी सुविधाएं मिलने लगी थीं। मेरी समझ में मध्य प्रदेश पहला राज्य था जिसने पत्रकारों को इस तरह सरकारी खर्चे पर भ्रष्ट बनाया था। सोचिए, रियायतें लेकर पत्रकार उनकी आँखों में आँखें डाल कर क्या सवाल पूछते?

उस दिन आईजी से मिल कर मेरी पत्नी तो दुखी हो गई

थी। आईजी के कमरे से निकल कर वो पूछ रही थी कि संजय, पत्रकारों की छवि इतनी खराब क्यों हो गई है? खराब नहीं हुई है। पुलिस खुद अपना काम नहीं करना चाहती, तो ऐसे ही शिकायत लेकर गए लोगों को बर्गलाने लगती है। तुमने देखा नहीं कि एक एफआईआर नहीं लिखे जाने की शिकायत लेकर हम आईजी के पास गए थे, उन्होंने बात कैसे बदल दी? इनकी ट्रेनिंग होती है ऐसी। कायदे से पुलिस को दोस्त होना चाहिए था। पर यहां तुम एसपी से मिली, आईजी से मिली। कैसे लोग हैं ये? ये काम उलझाते हैं। फैसाते हैं। लोगों को धमकते हैं।

हां, सच में ऐसे ही अफसरों के चलते लोग पुलिस के पास जाने से घबराते हैं।

वो पूछ रही थी कि फिर किसी को एफआईआर लिखानी हो तो कहां जाए? पुलिस किसी की सुनती नहीं। नेताओं का हाल पता ही है।

मैं चुप था।

पहले पत्रकार उम्मीद थे, अब उनकी छवि ऐसी हो गई। पत्नी कह रही थी कि संजय, एक जमाना था कि बकील, पुलिस, जज सब अपने हक की लड़ाई के लिए पत्रकारों के पास आते थे। वो मुझे याद दिला रही थी

कि कुछ साल पहले सुप्रीम कोर्ट के जज अपनी शिकायत लेकर पत्रकारों के सामने आए थे।

अब ये क्या हो गया?

उसके सवाल मेरे कानों में गूंज रहे थे। सचमुच पत्रकारों ने अपना क्या हाल बना लिया है? मेरी पत्नी कह रही थी कि असल में ये पत्रकारों ने अपना नुकसान कम किया है, जनता का अधिक नुकसान किया है। लोगों के मन में पत्रकारिता एक उम्मीद की तरह थी। एक छोटी-सी खबर का भी क्या असर होता था। सरकारी महकमा गलत काम करने से डरता था।

वो कुछ-कुछ कह रही थी। मैं कुछ-कुछ सुन रहा था। आज सिर्फ पत्रकारिता नंगी नहीं हुई है। जनता की उम्मीदों का अपमान हुआ है।

पुलिस ने पत्रकारों की ऐसी तस्वीर साझा करके ये बताने की कोशिश की है कि देखो हम किसी का क्या हश्च कर सकते हैं।

इस एक तस्वीर से देश भर के पत्रकारों ने सिर्फ अपनी हनक नहीं खोई है, देश की जनता की उम्मीदों ने अपनी हनक खो दी है। लोग पुलिस, प्रशासन और नेता से पहले से प्रताड़ित थे। ऐसे में जनता के पास एक हथियार था, पत्रकार की कलम। पुलिस उस कलम को तोड़ रही है।

विवाह कानूनों में बदलाव

आखिर कितना जरूरी और प्रभावशाली?



सुरमई सरंगी, गुगा पत्रकार

शादी

की उम्र 21 होने से कम-स-कम शारीरिक तौर पर एक लड़की गर्भधारण के लिए 18 जैसी छोटी उम्र से ज्यादा तैयार रहेगी। मानसिक तौर पर भी इसका अच्छा असर पड़ेगा, उन्हें अपने बाटे में अपनी जिंदगी, शारीरिक सक्षमता-अस्थमताओं, शिक्षा, आत्मनिर्भरता इन सब चीजों पर विचार कर पाने का भी अधिक समय मिल सकेगा। अपने पैरों पर खड़ी हो पाने की ललक बढ़ेगी और उन्हें अपने जीवन से क्या चाहिए उनके सपने क्या हैं इन सब को जानने का मौका मिल सकेगा।

ही में केंद्रीय मत्रिमंडल ने पुरुषों और महिलाओं की विवाह योग्य आयु में एकरूपता लाने के प्रस्ताव को मंजूरी दी। बाल



नारीवाद का युग है। पूरे विश्व में अब इस विचारधारा को लेकर विमार्श हो रहा है।

आधी आबादी का एक हिस्सा इसमें अपने अधिकारों को तलाशता है। और वहाँ हर दिन इसके पक्ष में नई आवाजें बुलंद हो रही हैं। नारीवादी चचाएं अब आम हो रही हैं जो कि एक बहुत सकारात्मक बात है। युगों से चलते आ रहे स्त्रीओं के संघर्ष के एक नई दिशा मिली है और एक मंजिल भी नजर आने लगी है। आज के समय में स्त्री का अपने लिए सम्मान, समान अधिकार, अवसर और व्यवहार की अपेक्षा रखना मुमकिन सा हो चला है। हमारे देश में भी स्त्री के अधिकारों और अवसर के पक्ष में कई नए पहल किये जा रहे हैं। आज भारत में भी स्त्रियाँ आए दिन जगह - जगह अपने हक की बात करते हुए पूरे बुलंद स्वर और मजबूत आत्मविश्वास के साथ खड़ी दिखाई देती हैं।

एक ऐसी ही पहल हमारे देश में देखने को मिली। हाल

विवाह निषेध अधिनियम 2006 नामक कानून के तहत शादी की उम्र महिलाओं के लिए 18 और पुरुषों के लिए 21 थी। अब इस अधिनियम के तहत महिलाओं की भी शादी की न्यूनतम उम्र 21 साल होगी। इस नियम के देश भर में लागू होने से महिलाओं के पक्ष में ढेर सारे बदलाव और सुधार होने की संभावना बढ़ जाएगी।

लड़कियां 18 की उम्र में शारीरिक और मानसिक रूप से शादी जैसे बड़े बदलाव के लिए बहुत कम तैयार होती हैं। भारत में एक आम शादी को देखें तो उसके बाद अगर सबसे ज्यादा बदलाव किसी

के जीवन में आता है तो वो एक नई विवाहिता होती है। उसका पूरा जीवन बदल जाता है वो एक नए घर में जाती है, उसका एक पूरा नया परिवार होता है, नए नए तरीके, नए संबंध, नया नाम और पहचान। पिछली जिंदगी से ये जिंदगी पूरी ही अलग होती है।

अब भी शादियों के तुरत बाद स्त्रियाँ गर्भधारण भी करती हैं। और इतने सारे शारीरिक और मानसिक बदलाओं के लिए 18 एक बहुत ही छोटी उम्र है। 20 के पहले लड़कियों का माँ बनना न तो उनके लिए न ही उसके बच्चे के लिए सही होता है। शारीरिक दुर्बलताएँ, कुपोषण, बच्चे को जन्म देते हुए जच्चा बच्चा की जान का खतरा और उनकी मृत्यु भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है।

शादी की उम्र 21 होने से कम-स-कम शारीरिक तौर पर एक लड़की गर्भधारण के लिए 18 जैसी छोटी उम्र से ज्यादा तैयार रहीं। मानसिक तौर पर भी इसका अच्छा असर पड़ेगा, उन्हें अपने बारे में अपनी जिंदगी, शारीरिक सक्षमता- अक्षमताओं, शिक्षा, आत्मनिर्भरता इन सब चीजों पर विचार कर पाने का भी अधिक समय मिल सकेगा। अपने पैरों पर खड़ी हो पाने की ललक बढ़ेगी और उन्हें अपने जीवन से क्या चाहिए उनके सपने क्या हैं इन सब को जानने का मौका मिल सकेगा।

लेकिन, देश की एक और सच्चाई है जिसको नजर अंदाज करना बहुत बड़ी भूल होंगी। हरलिबास शारदा ने 1927 में बाल विवाह के विरोध में एक पहल की थी और और ब्रिटेश सरकार को एक कानून पेश किया था। यह कानून था, बाल विवाह प्रतिबंध अधिनियम, 1929 जो 29 सितंबर 1929 को इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कॉर्टिसल ऑफ इंडिया में पारित हुआ। यह कानून एक समाज सुधारक कानून था जिसका देश में हर धर्म के लोगों ने समर्थन किया। बहुत से बदलाव भी देखने को मिले, पर हम इस कानून के बनने के 93 साल बाद भी हम ये कह पाने में असमर्थ हैं कि बाल विवाह जड़ से खत्म हो चुका है।

आए दिन देश के अधिकतर ग्रामीण इलाकों में इसे प्रयोग में खुले आम लाया जाता है, इसके खिलाफ कार्यवाही भी देखने को कम ही मिलती है। दुर्भायवश एक सच यह भी है कि लड़कियां भी अपने पारिवारिक वातावरण और उसके पालन पोषण में दिए गए सीखों की वजह से कभी कभी तो महज 15 की छोटी उम्र में भी शादी के लिए राजी होती हैं और कर भी लेती हैं ऐसे माता-पिताओं की कोई भी कमी नहीं है जो अपनी बेटी का सिर्फ और सिर्फ एक ही सपना है कि उसकी शादी हो जाये काफी दुर्भायपूर्ण और दैनीय है। पित्रसत्ता इस कदर एक लड़की में मस्तिष्क पर हावी रहती है कि उसका खुद को किसी भी दूसरे व्यक्ति या पुरुषों से कम आंकना और अपने घर के पुरुषों का खुद के लिए किसी भी तरह का निर्णय ले लेना और उस निर्णय को उस लड़की का बिना किसी तरीके के सवाल जवाब, स्वीकार कर लेना भी बिल्कुल आम बात है, पर ये एक प्रगतिशील तरीका तो बिल्कुल नहीं है। इसका ये मतलब कर्तर्ड नहीं है कि शादी के सपने देखने में कोई बुराई है, लेकिन लड़की की स्वतंत्रता का भी सवाल है।



आए

दिन देश के अधिकतर ग्रामीण

इलाकों में इसे प्रयोग में खुले आम लाया जाता है, इसके खिलाफ कार्यवाही भी देखने को कम ही मिलती है। दुर्भायवश एक सच यह भी है कि लड़कियां भी अपने पारिवारिक वातावरण और उसके पालन पोषण में दिए गए सीखों की वजह से कमी कमी तो महज 15 की छोटी उम्र में भी शादी के लिए राजी होती हैं और कर भी लेती हैं। ऐसे माता-पिताओं की कोई भी कमी नहीं है जो अपनी बेटी का सिर्फ और सिर्फ एक ही लक्ष्य निर्धारित कर देते हैं 'जो है उसका विवाह'।



रूस-यूक्रेन महायुद्ध का अर्थशास्त्र



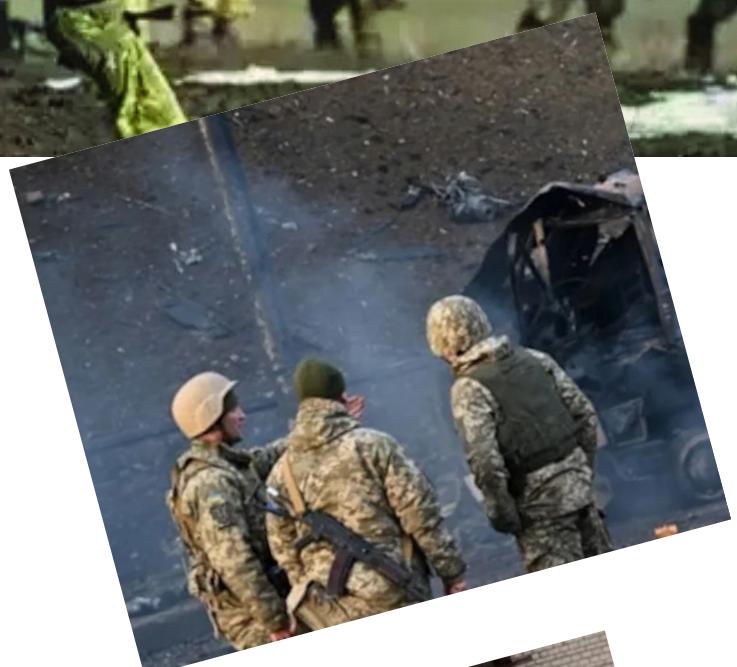
क्रेन कुरुक्षेत्र बना है। दो महाशक्ति आपसे सामने हैं। आपस में पुरजोर ठनी है। महायुद्ध चल रहा है। न जाने कब विश्वयुद्ध में बदल जाए। यूक्रेन कमज़ोर है। रूस मजबूत। बवादी के बावजूद यूक्रेन डटकर खड़ा है। यूक्रेन के गाप्टपति वोलाडिमिर जेलेंस्की यूरोप के हाँगे बने हैं। चुटकी में मसल देने का भौकाल रखने वाले रूस को फुस्स बताते हुए आइना दिखा रहे हैं। युद्ध में साथ निभाने और साथ न देने वालों के खिलाफ समान भाव से विषवमन कर रहे हैं। साथ निभाने वाले ने पूरी तरह साथ नहीं निभाया और सबको साथ निभाना चाहिए था, अन्यथा के खिलाफ आगे आना चाहिए था, यह कहकर जेलेंस्की पूरे विश्व समुदाय को धिक्कार रहे हैं। पचास दिन में अकेले दम पर दर्जन भर युरोपीय देशों के संसद को सीधे संबोधित कर चुके हैं।

बवादी के मंजर से इतर जेलेंस्की की चहलकदमी ने महायुद्ध में छिपे मजबूत अर्थशास्त्र की बारंबार झलक दी है। कमज़ोर यूक्रेन की मुद्रा रिनिया की कीमत डॉलर के मुकाबले कूलांचे भरकर उछलती जा रही है। भला यह कैसे संभव है कि विनाश की कगार में फंसे



आलोक कुमार, विश्व पत्रकार

यूक्रेन मुद्रा की कीमत में निरंतर बढ़ोतारी होती जाय। यह आम समझ के विपरीत है। बिटक्वाइन जैसी समानांतर मुद्रा से यूक्रेन को भरपूर मदद ली दी जा रही है।



इसके उलट ताकतवर रूस की मुद्रा रुबल औंधे मुंह निरंतर गिरकर रसातल में पहुंचती जा रही है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले यूक्रेनी मुद्रा की कीमत 29.51 रिव्निया, तो रुसी मुद्रा 84.76 रुबल है। युद्ध के शुरूआत बीते 11 मार्च को एक डालर की कीमत 134 रुसी रुबल तक पहुंच गयी थी। यह वर्ल्ड ऑर्डर में रूस की कमर घिसकाने वाली शिथि है। लिहाजा, प्रतिबंधित रूस ने ज्यादातर नए सौदे समझौते मुद्रा के बजाय बॉटर सिस्टम में करने का फैसला ले लिया। मतलब उससे कच्चा तेल व अन्य वस्तुएं आयात करें, तो बदले में चावल-दाल अथवा खपत के अन्य उत्पाद की सप्लाई से कीमत अदा करें। रुस यह भारत के साथ ही नहीं बल्कि नाटो देश जर्मनी-फ्रांस आदि यूरोपीय देश समेत चीन के साथ भी कर रहा। इससे अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंध काफी हद तक बेमानी साबित हो रहे हैं।

अफसोस की बात है कि युद्ध बाबरी की घड़ी में व्यापारी की तरह तराजू लिए सब खड़े हैं। सूचना और नजरों से बस अपने व्यवसाय और व्यवसायिक हित को तोल रहे हैं। कौन तबाह हो रहा है, कौन मर रहा है, कौन उजड़ रहा है की संवेदना से इतर व्यापारियों को किसी रोज रुस, तो कभी यूक्रेन भारी पड़ता दिख रहा है। हालांकि महायुद्ध के पीछे विश्वमंच का परदा जबतब हटता है, तो नाटो और अमेरिका का चेहरा झलककर दिख रहा है। न न कहते हुए भी अमेरिका यूक्रेन की अंदरुनी ताकत बनकर खड़ा है। हथियार औ? साजो समान से नाटो के देश यूक्रेन की भरपूर मदद कर रहे हैं।

यही रुस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन के फ्रस्टेशन की बजह है। और डर इस बात की है कि कुंठाग्रस्त व्यक्ति कुछ भी कर सकता है। कुछ भी मतलब परमाणु अथवा रसायनिक अस्त्र का इस्तेमाल भी। डर इसलिए भयावह है कि वह परमाणु बटन से बस अंगुली भर से फासले पर है। जैसे जैसे युद्ध खात्मे का दिन दूर होता जा रहा है। यूक्रेन के राष्ट्रपति जैलेंस्की ताकतवर रुस के आगे झुकने के बजाय तनत खड़े होते जा रहे हैं, रुस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन फंसते नजर आ रहे हैं। हालांकि महायुद्ध के पचासवें दिन भी कहा जा रहा है कि

रुस ने अपने

नियमित सेना को मैदान में नहीं उतारा है। फिलहाल काम सिर्फ अर्धसैनिक बलों व किराए के चेचेन्य विद्रोहियों अथवा अन्य सैनिकों से लिया जा रहा है। रुस के असली पारंपरिक सैनिक नौ मई के आसपास मैदान में होंगे। क्योंकि नौ मई ही वह महत्वपूर्ण तारीख है जब विश्वयुद्ध में हिटलर की नाजी सेना ने सांवित्रत संघ के आगे आत्मसमर्पण किया था। यकीन बढ़ता जा रहा है कि यूक्रेन तो बहाना है। नाटो और अमेरिका ही असली निशाना है। लिहाजा, सिर्फ रुस ही नहीं अमेरिका भी विश्व डिल्पोमेसी में बुरी तरह फंसता और घिरता नजर आता है।

युद्ध की



तैयारी का मंजर पेश करने के लिए शंघाई की सड़कों पर टैंक व बाख्तार बांद गाड़ियों के कारवां संग सैन्य बल को उतारा जा रहा है। चीनी युद्धक विमानों से ताइवान की आसमानी सीमा को भेदा जा रहा है। यह सब ताइवान के रक्षक बने अमेरिका को उकसाने के लिए है।

नया करतव छ ह मार इसके पीछे भी ठोस अर्थशास्त्र है।

ठीक वैसा ही अर्थशास्त्र जैसा कि अपने विदेश मंत्री एस. यशस्कर का अमेरिका को दिया नया वीरामा बयान वायरल है। सोमवार की शाम अमेरिका से सीधी बातचीत में विदेश मंत्री ने कहा कि अमेरिका को रुस से भारत के समझौते पर आपत्ति नहीं होनी चाहिए। समझौते के तहत भारत रुस से महीने भर में उतना ही कच्चा तेल खरीदने जा रहा है जितना कि इस युद्ध घड़ी में भी यूरोपीय देश एक दोपहर की ऊर्जा ज़रूरतों को पूरा करने के लिए रुस से आयात कर रहे हैं।

भारत अपनी ज़रूरत का दस प्रतिशत कच्चा तेल अमेरिका से और एक से दो प्रतिशत हिस्सा रुस से आयात कर रहा है। तेल को लेकर नजदीक होने की बजह से भारत की निर्भरता ईरान व खाड़ी के देशों पर ही ज्यादा है। यह पाकिस्तान की इच्छा के बावजूद ओपेक देशों का भारत के खिलाफ नहीं जाने की एक बजह है। महायुद्ध की बजह से अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में आए उछाल के बाद भारत ने सस्ते के चक्कर में रुस से आयात बढ़ाने का फैसला लिया है। इस अर्थत्रं पर अमेरिका को आपत्ति है।



अमेरिका की उलझन का फायदा उठाकर चीन ने नया मोर्चा खोल रखा है। उसे बदलते वर्ल्ड ऑर्डर में नबंर वन आर्थिक शक्ति बन जाने का सपना आ रहा है। मौके का फायदा उठाने की मुद्रा में है। चीन में ताइवान से हिसाब किताब चुकाता करने के लिए हलचल तेज है। ताइवान के पास दो बंदरगाहें के इर्दगिर्द ले रखा है। दोनों बंदरगाहों के इर्दगिर्द चीन की पनडुब्बियां हरकत में आ गई हैं।

इसे लेकर ही विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अमेरिका ठीक उसी तरह से आइना दिखाया है जैसा कि जर्मनी और फ्रांस चाहकर भी रुस पर लगे अर्थिक प्रतिबंध में शामिल नहीं हो पा रहा है।

दिखाना शुरू कर दिया है। शी जिंगपिन की लाल सेना ताइवान पर चढ़ाइ करने की कसमसाहट में है। युद्ध में आगे क्या होगा ? कोई यकीन से नहीं कह सकता कि आखिर ऊंट किस करवट बैठेगा। कौन बर्बाद होगा, कौन बचेगा। जो बचेगा भी तो किस हाल में होगा। एक बात तो तय है कि अब इस युद्ध ने दुनिया की पूरी आबादी को अर्थिक मकड़जाल में फंसा दिया है। अर्थतंत्र पर हथौड़ा बरस रहा है। हाहाकार है। चबूंओर मंहगाई की मार है।

इन सबके बीच ताइवान पर चीन की चढ़ाइ की जरूरत इसलिए भी आन पड़ी है कि राष्ट्रपति शी जिंगपिन काम्युनिस्ट पार्टी की अंदरुनी राजनीति में खुद को व्यस्त करने में मश्गूल है। आगामी अक्टूबर में उनको तीसरे कार्यकाल के लिए चुना जाना है। उससे पहले उन्होंने अपने प्रधानमंत्री ली केकियांग को ठिकाने लगा चुके हैं। मई जून में ली केकियांग की जगह नया प्रधानमंत्री चुना जाना है। ली केकियांग पर्व राष्ट्रपति जिंगपिन की पसंद वाले थे। चीन के अंदरुनी राजनीति पर नजर रखने वाले कहते हैं कि राष्ट्रपति शी जिंगपिन ने जिसतरह पार्टी से अपने लिए अनंत कार्यकाल तक सीमा बढ़वाई उसी तरह प्रधानमंत्री ली केकियांग के लिए भी करवा सकते थे। दोनों वर्ष 2012 में राष्ट्रपति औ? प्रधानमंत्री बने थे। चीन में शी जिंगपिन को तीसरे कार्यकाल के लिए राष्ट्रपति चुनने की अंदरुनी प्रक्रिया जारी है। इस दौरान राष्ट्रपति को दिखाते रहना होगा कि वह चीन को मजबूत और मजबूत किए जा रहे हैं। इसके लिए युद्ध के लिए खुलता ताइवान का नया मौर्चा महत्वपूर्ण है। कोविड के दौरान अंतर्राष्ट्रीय मंच पर चीन हुई किरकिरी के पीछे भी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अंदरुनी राजनीति को बजह बताया जा रहा है। इसे पार पाने और व्यवसाय में बड़ी दिखने की चाहत में ताइवान के फ्रंट पर चीन अमेरिका से मुकाबिल होने को आमदा नजर आ रहा है।

अफसोस की बात है कि युद्ध बगार्दी

की घड़ी में व्यापारी की तरह तराजू लिए सब

खड़े हैं। सूचना और नजरों से बस अपने व्यवसाय और

व्यवसायिक हित को तोल रहे हैं। कौन तबाह हो रहा है, कौन मर रहा है, कौन उजड़ रहा है की सवेदना से इतर व्यापारियों को किसी रोज लस, तो कभी यूक्रेन भारी पड़ता दिख रहा है। हालांकि महायुद्ध के पीछे विश्वमंच का परदा जबतब हटता है, तो नाटो और अमेरिका का घेहरा झलककर दिख रहा है। न न कहते हुए भी अमेरिका यूक्रेन की अंदरुनी ताकत बनकर खड़ा है। हथियार औ? साजो समाज से नाटो के देश यूक्रेन की भरपूर मदद कर रहे हैं। यही लस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन के फ्रस्टेशन की वजह है। और इस बात की है कि कुंठाग्रस्त व्यक्ति कुछ भी कर सकता है। कुछ भी मतलब परमाणु अथवा रसायनिक अस्त्र का इस्तेमाल भी।





पूर्णपूर्व चैनल

आज के युवाओं की नयी पहचान



वाओं के बीच पहचान का संकट समाज में हमेशा से एक विमर्श रहा है लेकिन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में हो रहे नित नये प्रयोग, डिजिटल माध्यमों ने इस विमर्श को काफी हद तक बदला है। युवा बदलते दौर में नये डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कर नयी पहचान बना रहा है, और अपने पीछे खड़े किशोरों और अने वाली नयी पीढ़ी को भी प्रेरित कर रहा है। युवाओं को पहचान दे रहा एक ऐसा ही प्लेटफॉर्म है यू-ट्यूब चैनल मौजूदा दौर में आज हर कोई अपना यू-ट्यूब चैनल बनाकर पॉपुलर होना चाहता है। इन दिनों मान्यता है कि यू-ट्यूब पर आपको सफलता या सक्सेस मिल जाता है तो आपकी भी एक पहचान बन जाती है। खास बात ये है कि इस प्लेटफॉर्म पर पहचान के साथ लोगों को आर्थिक रूप से मुनाफा भी होता है जो सोने पर सुहागा की स्थिति है।

यू-ट्यूब पर चैनल बनाकर आप घर बैठे पैसे कमाने के साथ खुद भी पॉपुलर हो सकते हैं। लेकिन तकनीकी ज्ञान की कमी और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हर रोज हो रहे नये बदलाव से परिचित नहीं होने से ये थोड़ा कठीन भी लगता है लेकिन हम आपको बतायेंगे कि यू-ट्यूब चैनल को कैसे बनाते हैं और ऑपरेट करते हैं। ताकि अपना अपना यू-ट्यूब चैनल बना सके और खुद को पॉपुलर करने के साथ ही घर बैठे पैसे कमा सके। इस विषय पर सारी विस्तृत जानकारी यहां उपलब्ध है।

यू-ट्यूब होता क्या है

यू-ट्यूब एक सर्च इंजन है परंतु यह एक वीडियो फॉर्मेट का सर्च इंजन है और यह आज के दौर में वीडियो फॉर्मेट का बहुत ही ज्यादा लोकप्रिय और सबसे ज्यादा इस्तेमाल किये जाने वाला सर्च इंजन है। यू-ट्यूब चैनल एक जरिया है जिसके जरिये आप यू-ट्यूब पर वीडियो अपलोड करने की एक्सेस प्राप्त कर सकते हैं। गूगल की ओर से बनाया गया ये एक फ्री-प्रोडेक्ट लांच किया गया है। जिस पर आप फ्री में वीडियो क्रिएटर के रूप में काम कर सकते हैं और आइडियंस के रूप में भी इसका फ्री में

चैनल बनाने के लिए रिक्वायरमेंट्स

यू-ट्यूब चैनल बनाने से पहले जरूरी आवश्यकताओं के बारे में जानकारी होनी चाहिए, ताकि जब आप अपना चैनल बनाने बैठे तो किसी तरह की परेशानी नहो। नीचे दी गयी जानकारी से हम जानेंगे कि यू-ट्यूब बनाने के लिए कौन कौन सी रिक्वायरमेंट जरूरी हैं।

- यू-ट्यूब चैनल बनाने के लिए सबसे पहले आपके पास जीमेल आईडी चाहिए व्योकिं बिना जीमेल के ये बन नहीं सकता है
- इसके लिए इंटरनेट सुविधा वाला स्मार्टफोन या फिर कंप्यूटर होना चाहिए आपको चैनल का यूनिक और शॉर्ट नेम बनाना होगा
- आपके पास एक अल्टरनेट जीमेल आईडी होना चाहिए साथ ही एक स्थायी मोबाइल नंबर जरूरी है।

इस्तेमाल कर सकते हैं। इसका मालिकाना हक गूगल के पास जो गाइड लाइन का भी निर्माण करता है।

यू-ट्यूब चैनल कैसे बनायें

अब हम आपको यू-ट्यूब बनाने के 10 इंजी स्टेप के बारे में बतायेंगे। स्टेप्स को अच्छी तरह समझकर उसी हिसाब से अपना चैनल बनाना है। इसके लिए नीचे बताये गये स्टेप्स को फॉलो करें।

- ✓ यू-ट्यूब.कॉम पर जाकर साइन-इन करें [नेट से तस्वीर लेकर लगा लें त ल सबसे पहले यू-ट्यूब की ऑफिशियल वेबसाइट पर जाना है और अपने जीमेल आईडी के माध्यम से साइन-इन करना है।
- ✓ क्रियेट ए चैनल पर विलक करना है जिसके बाद क्रियेट ए चैनल का एक विकल्प दिखाई देगा और आपको इस वाले विकल्प पर विलक कर देना है। नेट से तस्वीर लेकर लगा लें।
- ✓ गेट स्टार्टेड विलक करें, इसके बाद आपके सामने गेट स्टार्टेड का ऑप्शन आयेगा और आपको इस वाले पर विलक कर देना है।
- ✓ अब बारी मोबाइल नं. को वेरीफाई करने की है इस प्रोसेस के दौरान आपको अपना चैनल वेरीफाई करना बहुत जरूरी है और यहां पर आपको चैनल वेरीफाई करने का विकल्प मिल जायेगा और आप अपने चैनल को जरूर वेरीफाई करें।

- ✓ चैनल का लोगों अपलोड करें। किसी भी प्रोडक्ट की ब्राइंग करना बहुत जरूरी है और इसलिए आपको यहां पर अपना कोई एक क्रिएटिव और यूनिक लोगों को अपलोड कर देना है ताकि नेट से तस्वीर लेकर लगा लें।
- ✓ अपने चैनल के बारे में विवरण लिखे आप अपने यू-ट्यूब चैनल पर किस श्रेणी के वीडियो अपलोड करेंगे और आप अपने बारे में व चैनल के बारे में कुछ डिटेल को यू-ट्यूब चैनल के डिस्क्रिप्शन में लिखे ताकि कोई भी व्यक्ति जो आपके चैनल के बारे में जानना चाहे तो जान सके।
- ✓ सोशल लिंक को जोड़ा जाय। आपको इसके बाद यहां पर सोशल लिंग का ऐड करने के लिए ऑप्शन मिलेगा और आपने सभी सोशल लिंक यहां पर ऐड करें ताकि लोग आपके सोशल अकाउंट से जुड़ सके और आपके काटेक्ट में बने रहें।
- ✓ अपने यू-ट्यूब चैनल पर पहला वीडियो अपलोड करें।

जब आपका अपना चैनल इतनी प्रक्रिया से गुजरने के बाद बन जाता है तो आपको वीडियो अपलोड करने का ऑप्शन मिल जाता है अब आपको अपना पहला वीडियो अपलोड कर देना है। यूट्यूब चैनल बना लेने के बाद आपको उसकी ब्राइंग के लिए अपने चैनल का लोगों चैनल आर्ट और इसके साथ- साथ सभी प्रकार के सोशल मीडिया लिंग जरूर ऐड करें ताकि आप अपने चैनल की अच्छी तर से ब्राइंग कर सकें।

इस बात का सर्वों ध्यान

यह सभी सेटिंग आपको घेक करनी है और सभी सेटिंग को अपने वीडियो को अकाउंटिंग ऑन या फिर करने रखना है। बस इतना काम करने के बाद आपका यू-ट्यूब वीडियो आपके चैनल पर अपलोड हो जाता है और आप पब्लिश के बटन पर क्लिक करके अपने वीडियो को आसानी से पब्लिश कर सकते हैं।

अहम बातें

यूट्यूब चैनल बनाने के लिए कोई पैसा नहीं लगता है आप अपना चैनल फ्री में बना सकते हैं और फ्री में वीडियो अपलोड कर सकते हैं। यूट्यूब से पैसा कमाने की कोई लिमिट नहीं है अर्थात् आप जितना अच्छा काम करोगे और जितना आपको व्यू मिलगा उतना ही ज्यादा यूट्यूब से आप पैसा कमा सकते हैं।



यू-ट्यूब पर पहला वीडियो कैसे अपलोड करें

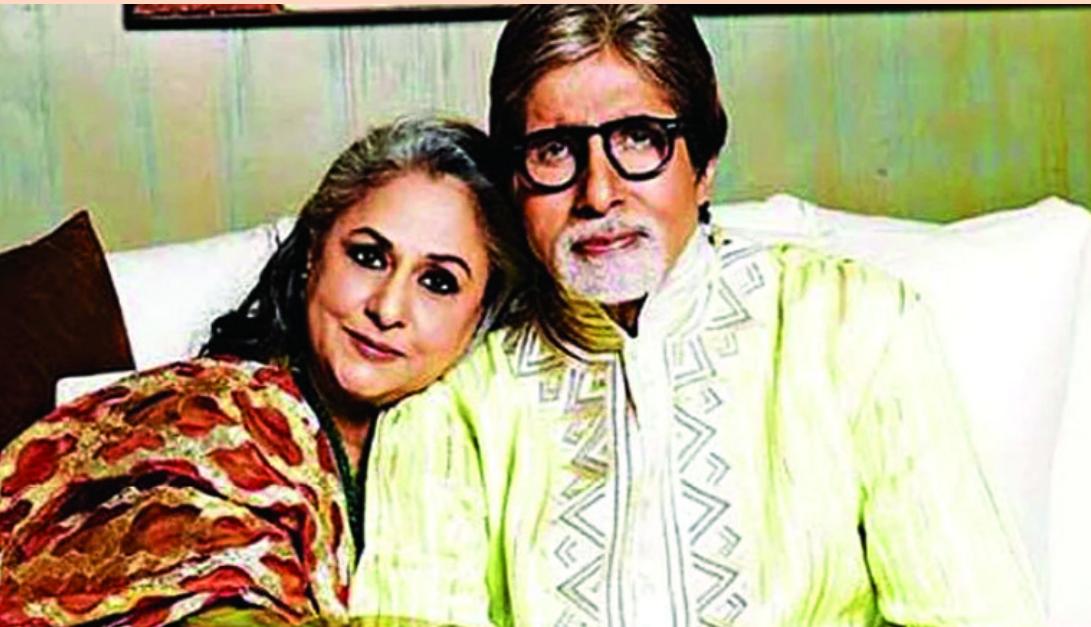
यू-ट्यूब पर पहला वीडियो को डालने वाले प्रोसेस को हम कुछ बिन्दुओं के द्वारा आपको समझाएंगे

- ✓ सबसे पहले आपको युट्यूब डॉट कॉम को ओपन करना है। और अपने जीमेल आईडी व पासवर्ड के माध्यम से यहां लॉग इन कर लेना है।
- ✓ कैमरे का आइकन दिखेगा जिसके अंदर प्लस का चिन्ह होगा, उस पर आपको क्लिक करना है।
- ✓ आप कैमरे वाले आइकन पर क्लिक करेंगे आपके सामने तीन ऑप्शन दिखाई देंगे और यहां आपको अपलोड के आप्शन पर क्लिक करना है।
- ✓ आप कैमरे वाले आइकन पर क्लिक करेंगे आपके सामने तीन ऑप्शन दिखाई देंगे और यहां आपको अपलोड के आप्शन पर क्लिक करना है।
- ✓ इसके बाद आपके सिलेक्ट फाइल टू अपलोड के ऑप्शन पर क्लिक करना होगा और आप इस पर क्लिक कर दीजिये।
- ✓ अब यहां पर आपको फाइल अपलोड के लिए कहा जायेगा और आप अपने कंप्यूटर या फिर मोबाइल में से उस वीडियो को सेलेक्ट करें जिस वीडियो को आप अपने यूट्यूब चैनल पर अपलोड कर सकते हैं।
- ✓ इसके बाद आपका वीडियो फाइल चैनल पर धीरे धीरे अपलोड होने लगेगा।

यू-ट्यूब का सबसे अहम पार्ट है गाइडलाइन

यूट्यूब चैनल बना लेने के बाद उस पर पहला वीडियो अपलोड करने से पहले आपको गाइडलाइन की जानकारी होने चाहिए क्योंकि गलत वीडियो अपलोड करने देने से आपका यू-ट्यूब चैनल पर मानेंट डिलीट हो सकता है तो जान लेते हैं कि क्या है गाइडलाइन

1. अपने चैनल पर सेक्युअल कंटेंट अपलोड नहीं करना चाहिए।
2. कभी भी डेंजरस और हार्मफ्यूल वीडियों को अपलोड करने की नहीं सोचें।
3. हिंसक और विवादित वीडियो जो ताजा घटनाचक्र से जुड़े हो उन्हें न डालें ये गाइडलाइन के खिलाफ है।
4. किसी भी यूट्यूब के वीडियो को डाउनलोड करके अपने चैनल पर अपलोड न करें, आपको यूट्यूब की ओर से कापीरोइट क्लोम मिलेगा और हो सकता है कि आपके चैनल को सर्पेंड भी किया जा सकता है।
5. कभी किसी के ग्राफिक वीडियों को डाउनलोड न करें और चैनल पर अपलोड न करें वरना अपना चैनल के खिलाफ कार्रवाई हो सकती है।



बहू ऐश्वर्या जैसी ही खूबसूरत अपनी शादी में दिखी थीं जया

टु

इस बात में कोई दोराय नहीं कि दुनिया की सबसे खूबसूरत महिलाओं में से एक ऐश्वर्या राय बच्चन का ब्राइडल अवतार आज भी ऐसा है, जिसे देख हर साल न

जाने कितनी लड़कियां अपना लुक डिसाइड करती हैं। हालांकि, इसके पीछे की सबसे बड़ी वजह यह है कि अपनी शादी वाले दिन ऐश्वर्या न केवल किसी राजकुमारी जैसी लग रही थीं, बल्कि मेकअप, काढ़े और गहनों से उन्होंने जिस तरह अपनी खूबसूरती को बढ़ाया था, शायद फिर ऐसा ही किसी ने किया हो।

हाँ, वो बात अलग है कि इस मामले में उनकी सासू मां जया बच्चन उन्हें जबरदस्त टक्कर दे सकती हैं, जिन्होंने ऐश्वर्या की तरह ही अपनी शादी वाले दिन एक खूबसूरत साड़ी पहनी थी। दरअसल, जिस दौर में जड़ाऊ लहंगा, हेवी जूलरी और चटक-मटक वाले मेकअप के बिना एक दुल्हन को सुंदर नहीं माना जाता था, उस समय जया बच्चन ने साधारण सी साड़ी पहनकर भी पूरी दुनिया को अपना दीवाना बना लिया था। 48 साल पहले अमिताभ बच्चन की दुल्हन बनी जया बच्चन ने अपने सबसे खास दिन पर एक ऐसा टाइमलेस लुक कैरी किया था, जो बदलते समय के साथ भी फीका नहीं पड़ा है।

दरअसल, यह सारा किस्सा साल 1973 का है। जब लदन जाने के लिए अमिताभ बच्चन और जया बच्चन ने चट-मंगी पट ब्याह करने का फैसला किया था। इस शादी में जहां अमिताभ बच्चन की तरफ से उनके पिता हरिवंश राय बच्चन सेमेट केवल 5 लोग ही पहुंचे थे, तो वहाँ जया की साइड से उनके माता-पिता और बहनों के सिवा हास्य अभिनेता असरानी और अभिनेत्री फरीदा जलाल शामिल हुईं थीं। यही एक वजह भी है कि कम लोगों के बीच हो रही इस शादी में जया बच्चन ने अपना लुक बहुत ही सिंपल और सोंबर रखा था, जिसके बाद भी वह गजब की सुंदर लग रही थीं। अमिताभ बच्चन संग फेरों के लिए जया बच्चन

ने एक ट्रेडिशनल रूट चुना था, जिसके लिए उन्होंने लाल रंग की पारंपरिक साड़ी पहनी थी। जिसमें उनकी खूबसूरती देखते ही बन रही थीं। जया बच्चन की ब्राइडल साड़ी को बहुत ज्यादा हेवी लुक नहीं दिया था, बल्कि इसकी हेमलाइन में बेल-पत्तों और फूलों का डिजाइन बना था,

निया की सबसे खूबसूरत महिलाओं में से एक ऐश्वर्या राय बच्चन का ब्राइडल अवतार आज भी ऐसा है, जिसे देख हर साल न जाने कितनी लड़कियां अपना लुक डिसाइड करती हैं। हालांकि, इसके पीछे की सबसे बड़ी वजह यह है कि अपनी शादी वाले दिन ऐश्वर्या न केवल किसी राजकुमारी जैसी लग रही थीं, बल्कि मेकअप, काढ़े और गहनों से उन्होंने जिस तरह अपनी खूबसूरती को बढ़ाया था, शायद फिर ऐसा ही किसी ने किया हो। हाँ, वो बात अलग है कि इस मामले में उनकी सासू मां जया बच्चन उन्हें जबरदस्त ट्वक्कर दे सकती हैं, जिन्होंने ऐश्वर्या की तरह ही अपनी शादी वाले दिन एक खूबसूरत साड़ी पहनी थी।

जिस पर हाथ की जटिल एम्ब्रॉडरी की देखी जा सकती थी। उस समय साड़ी को सजाने के लिए चांदी के तारों के अलावा जरी-जरदंजी का इस्तेमाल किया गया था। जोकि इस लाइट वेट पीस को रींगल टच दे रही थीं। वहाँ अपने लुक में एक खूबसूरत कंट्रस्ट बनाने के लिए जया ने इसे नेट के दुपट्टे के साथ पेयर किया था, जो काफी अच्छे से मैच कर रहा था।

अपनी इस साड़ी के जया ने मैचिंग का ब्लाउज पहना था, जिसमें बनी राटंड नेकलाइन ऊपर तक उनके गले को कवर कर रही थी। अपने लुक को कम्प्लीट करने के लिए पूर्व अदाकारा ने हेवी जूलरी कैरी की थी, जिसमें सदलता हार के साथ मैचिंग का चौकर, माथा पट्टी-मांग टीका और

दो सारी चूड़ियां शामिल थीं। वहाँ बात करें उनके मेकअप की, तो उन्होंने फेस पर पिनिमप मेकअप किया था, जिसके साथ लाल पारंपरिक बिंदी काफी ज्यादा प्यारी लग रही थी। भले ही दुल्हन के लिबास में सजी जया बच्चन का यह अंदाज एकदम साधारण था, लेकिन उनका पूरा नेटअप ऐसा था, जिसमें उनकी सादगी एकदम अच्छे से झलक रही थी।

दूसरी ओर बात करें ऐश्वर्या राय बच्चन की तो उन्होंने पुरानी दोस्त व डीड़िया की फैमस फैशन डिजाइनर नीता लुल्ला से अपनी साड़ी डिजाइन करवाई थी। दुल्हन बनने के लिए ऐश्वर्या राय ने खास कांजीवरम साड़ी बनाने वाले एम्ब्रॉडर्स से डिजाइन करवाया गया था। इस गोल्डन साड़ी को प्योर सिल्क से बनाया था, जिसकी बीब में असली सोने के धांगों का इस्तेमाल किया गया था। साथ ही ब्लाउज और साड़ी पर दिखने वाले क्रिस्टल दुनिया के सबसे महगी क्रिस्टल बेचने वाली कंपनी स्वारोवर्स्की से लिए गए थे। बता दें कि इस ब्राइडल साड़ी की कीमत 75 लाख रुपये बताई जाती है। दूसरी ओर दुल्हन की तरह

सजी ऐश्वर्या राय ने इस दोरान अपने लिए 22 कैरट गोल्ड से तैयार किए गए गाने पहने थे, जिन्हें बनाने के लिए बेशकीमती स्टोर्स और हीरों का इस्तेमाल किया गया था। यहाँ तक कि इस बाला ने अपने बालों में भी फूलों के साथ सोने की पिन्स लगाई थीं, जो हर किसी का ध्यान अपनी तरफ खींच रही थीं। इन तस्वीरों में भी देखा जा सकता है कि ब्राइड बनी ऐश्वर्या सिर से लेकर पांव तक कई किलो सोना पहने हुए हैं।

**झारखंड लाइफ प्रिका की पूरे टीम को मेरी
हार्दिक शुभकामनाएं, ऊंचाइयों पर पहुंचे और
जनता की आवाज बने...**



श्री भारतेंदु द्वे

सचिव, दीप नारायण मेमोरियल टीचर
ट्रेनिंग कॉलेज, जसीडीह पब्लिक
स्कूल, महिंद्रा कोचिंग इंस्टीट्यूट

**झारखंड लाइफ प्रिका की पूरे टीम को
मेरी हार्दिक शुभकामनाएं, ऊंचाइयों पर
पहुंचे और जनता की आवाज बने...**



सूरज झा युवा

नेता व समाजसेवी

“बेटियों के माता-पिता का सम्मान
मतलब राष्ट्र का सम्मान”



Two Daughter's
Club

Excuse Me...

Respect those parents, who have
two Daughters or Only Daughters in
your “Mohalla” or in your “City”.

For Support & Join Give a Missed Call

9958755355



Two Daughter's
Club

जरा सुनिये जी....

जिनकी सिर्फ बेटियां ही बेटियां हैं उनको भी सम्मान दें और
अपने मोहल्ले या शहर में सम्मानित करें... बेटियों के माता-पिता
को सम्मान दिलाने की एक ऐतिहासिक मूहिम से जुड़ें

हमें Missed Call करें

9958755355



Two Daughter's
Club

Support this campaign .Follow us on

Twitter@2Daughtersclub

Like our Facebook page..<https://t.co/F51faFLJROU>

can also follow on Instagram.. twodaughters

can write us...twodaughtersclub@gmail.com